

प्रतिष्ठादि
विधिओ।
॥ १ ॥

३३१ (५५)

छाणीमंडण श्रीशांतिनाथस्वामिने नमः

पूज्यपादश्रीमन्महोपाध्याय-श्रीसंकलचन्द्रजीगणिकृत-
प्रतिष्ठाकल्प-(अञ्जनशलाकाविधि)नो
गुजराती अनुवाद
तथा अन्य उपयोगि विधिओ भाग पहलो

—: संयोजक - प्रकाशक :-

क्रियाविधिविधिज्ञः-शा. सोमचंद्रभाई हरगोविन्ददास-छाणी

मूल्य दश रुपिया

द्वितीयावृत्ति प्रत
वि० सं० २०२७

प्रथमावृत्ति
वि० सं० २०१२

—: मुद्रक: :-

* अलकेश प्रिन्टरी *

सदमातानी पोळ सामे, सांफडी शेरी,
अमदावाद.

॥ १ ॥

ॐ नम्र विशप्ति ॐ

१. शुद्धि पत्रक प्रमाणे सुधारो करी पछीज ग्रंथनो उपयोग करे।
२. ऐकला पुस्तकीया ज्ञानथी कोठं कार्यं थतुं नथी लण्णतर साथे गण्णतर नइरी छे। प्रयोगोनुं ऐकलुं ज्ञान अस नथी, प्रयोगोनो अनुभव पण्ण नइरी छे।

क्रियाविधानो आ ग्रंथ छे। ऐनी गमे तेदली छपाती विस्तृत समजण्ण, अनुभव विना ऐकडा वगरना भींडा भराभर छे। ऐदले क्रियाविधिना अनुभवी पासेथी पारंपारिक अनुभव लीधा सिवाय केवण आ प्रतिना वाचन मात्रथी क्रियाविधि करवा-कराववाभां दण्णी नगोअे लूत्तो थठं नवानी शक्यता दण्णी छे। कर्मभुक्त थवा भाटे आ विधि-विधानो छे। ऐकला पुस्तक उपर आधार राणी आ क्रियाऐने कर्मअंधना कारणसुत डरगीज न भनावो ऐज अमारी पास नम्र विशप्ति छे।



સા.દર સમર્પણ

ક્રિયાવિધિનો સાત્વિક રસ લગાડનાર અને ત્યાગધર્મની મહત્તા સમજવનાર
ક્રિયાવિધિજ્ઞ શ્રી નગીનદાસકાકાને

અને

વ્યવહારિક કામમાંથી ફરેગ રાખી મુક્તિપંથની ક્રિયાઓમાં સહાયક થનાર
સ્નેહી બંધુઓ

શ્રી મંગળભાઈ, હીરાભાઈ તેમજ કાન્તિભાઈને—

આ ગ્રંથનું સમર્પણ કરી કૃતાર્થ થાઉં છું.

લિ. વિનીત સોમચંદ



प्रतिष्ठादि
विधिओ।
॥ ४ ॥

विषय	पृष्ठ
प्रतिष्ठा करनार श्रावकनुं लक्षण	२
प्रतिष्ठा करावनार आचार्यनुं लक्षण	२
स्नात्रना प्रकार	३
मंडपनुं स्वरुप	३
भूमिशोधन	५
वेदिका	५
दांतण आदिना मन्त्रो	६
पहेला दिवसनो विधि	६
जलयात्रानुं विधान	६
कुंभस्थापन विधि	१२
बीजा दिवसनो विधि	१५
नद्यावर्त पूजन	१५
त्रीजा दिवसनो विधि	२४
क्षेत्रपाल पूजन	२४
दिकपाल पूजन	२५
भैरव पूजन	३०
सोळ विद्यादेवी पूजन	३०
नवग्रह पूजन	३१

विषय	पृष्ठ
चोथा दिवसनो विधि	३६
सिद्धचक्र पूजन	३९
पांचमो दिवस-वीसस्थानक पूजन	४३
छहो दिवस-च्यवनकल्याणक- विधि	४५
इन्द्र-इन्द्रादि स्थापन	४६-४७
गुरुपूजन	४९
च्यवनमन्त्र	५०
प्राणप्रतिष्ठा	५०
सातमा दिवसनो विधि	५३
जन्मकल्याणक विधि	५३
शुचिकरण	५३
सकलीकरण	५४
दिककुमारिका महोत्सव	५५-५६
इन्द्र-इन्द्रादि महोत्सव	५९
आठमा दिवसनो विधि	६३
अठार अभिषेक विधि	६३

विषय	पृष्ठ
अठार स्नात्रनी औषधिनी यादी	७५
नवमा दिवसनो विधि	७६
लेखशाला विधि	७६
विवाह महोत्सव	७८
राज्याभिषेक	७८
दिक्षा महोत्सव	७९
दशमा दिवसनो विधि	८१
केवलज्ञान कल्याणक	८१
१०८ अभिषेक अञ्जनविधि	८८-८९
निर्वाण कल्याणक	८९
विम्ब स्थापना अने दृष्टि	९०
सकलीकरण विधि	९५
शुचि विद्या	९५
गुरुप वलि मंत्रवानो मन्त्र	९६
संक्षिप्त प्रतिष्ठा विधि	९६
विपं परिकर प्रतिष्ठाविधि	१०६
कलशारोपण विधि	११०
ध्वजारोपण विधि	१११

॥ ४ ॥

प्रतिष्ठादि
विधियो।

॥ ५ ॥

★ प्रतिष्ठाकल्प भाग १ लाना प्रकाशनमां मन्त्रेली उदार आर्थिक सहाय ★

- १११) पंजाबी साध्वी विनयश्रीजीना प्रशिष्या पद्मलताश्रीजी म०ना पारणा निमित्ते.
१०१) श्री चंद्रगुणाश्रीजीना पारणा निमित्ते.
२०१) श्री प्रभासपाटण जैनसंघ.
१०१) शाह रायचंद गुलाबचंद अच्छारी
१०१) श्रीनवापरा जैन श्वे. मू. संघ नवापरा, ता. बोरसद.
२५१) शा. नेमचन्द जीवणचन्द वाजीपुरा.
१०१) शा. अमृतलाल डगडुशा शीरपुर.
१०१) शा. नेमचन्द जीवणचन्द वाजीपुरा.
१०१) गांधी मोहनचन्द सोमचन्द बोरसद.
३००) श्री वर्धमानजैनआगममंदिरसंस्था सुरत.
५००) एक सद्गृहस्थ. पू. आ. श्री. प्रतापसूरीश्वरजी म.ना उपदेशयी.

॥ ५ ॥

प्रतिष्ठादि
विधिओ।
॥ ६ ॥

द्वितीयावृत्ति प्रसंगे

महामहोपाध्याय श्री सकलचन्द्रजी महाराज कृत प्रतिष्ठाकल्प भाग १ लानुं प्रकाशन वि० सं० २०१२मां करेलुं. १५ वर्ष बाद आजे एनी द्वितीयावृत्तिनुं प्रकाशन थइ रह्युं छे. संघमां चोमेरथी एनी माग छे. उपरांत प्रथमावृत्तिमां रही गयेली अशुद्धिओनुं संमार्जन तथा केटलोक सुधारो जरुरी हतो.

सं. २०२६ नी सालमां छाणी मुकामे परमपूज्य सिद्धांतमहोदधि कर्मशास्त्ररहस्यवेदी आचार्यदेव श्रीमद् विजय प्रेमरीश्वरजी महाराजना विद्वान शिष्यरत्न वर्धमानतप १०० ओळीना आराधक पू. पं. श्री भानुविजयजी महाराजना विद्वान शिष्यरत्न समतासागर पू. पं. श्री पद्मविजयजी गणिवरना शिष्यरत्न पूज्य मुनिराजश्री मित्रानंदविजयजी म० आदि ठा० ४ नुं चोमासु थयुं. मने पण समय मल्यो. तेओश्रीनी विद्वत्ता अने अनुभवनो लाभ लइ तेओश्री साथे वेसी विधिप्रपा, कल्याणकलिका, चिन्मप्रवेशविधि वगैरेना आधारे संशोधन संकलन कर्युं. तेओश्रीए सारो रस धरावीं अमूल्य समयनो भोग आप्यो अने अलकेश प्रिन्टरी वाळा साथे मेळाप करावी आप्यो. ग्रन्थ छापवानुं नक्की थयुं. प्रेसना संचालक मगनभाइए खूबज उत्साहथी एक मर्हानामांज प्रत छापी आपी.

परमपूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय प्रतापसूरीश्वरजी महाराजना प्रशिष्य पू. विद्वान मुनिराजश्री कनकविजयजी महाराजे परिश्रमपूर्वक अन्यान्य ग्रन्थोमां आवता पाठांतरोनी नांध करी आपी छे. ते अमोए फूटनोटमां आपी छे.

प्रतिष्ठादि
विधौ।

॥ ७ ॥

पू. मुनिवर्य श्री मित्रानन्दविजय महाराजश्रीए शुद्धिपत्रक, विषयदर्शन, प्रूफ संशोधनादि तेमज जरुरी सूचन, मार्गदर्शन आप्युं छे. मोटा भागना प्रूफो पं. श्री बाबुभाइ सवचन्दभाइए तपास्या छे.

आ आवृत्ति प्रसंगे सलाहसूचन आपनार पू. आचार्य भगवंतादि मुनिवरोनो, पू. मुनिराजश्री मित्रानंद वि.म.नो पू. मुनिराजश्री कनक वि.म.नो तथा आ प्रकाशनर्मा आर्थिक सहाय अपावनार तथा आपनार पूज्योनो तेमज भाग्यशास्त्रीओनो आभार मानी विरमुं छुं.

लि. शा. सोमचन्द हरगोवनदास-छाणी
सं. २०२७ जेठ वद १०

॥ ७ ॥

शुद्धि पत्रक

प्रतिष्ठादि
विधिओ।
॥ ८ ॥

पृष्ठ	पङ्क्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पङ्क्ति	अशुद्ध	शुद्ध
९	१३	ह्रीं	ह्रीं	७०	५	सन्मत्र	सन्मन्त्र
१५	१०	ज्ञानेभ्यः	ज्ञानेभ्यः	७३-८१-९१	११-२-१२	निधौ	निधे
१७	३	महामानस्ये	महामानस्यै	७३	१४	उवज्जाय	उवज्जाय
१७	३	वनावी	वनावी	७४	११	रभिनरै	रभिनवैः
३२	८	वा	वा	७९	२	स्थापयेत्पट्ट	स्थापयेत्पट्ट
३५	४	तिष्ठ	तिष्ठ	८९	५	सिद्ध	सिद्ध
३५	१४	उडाववा	उडाडवा	९०	१५	नमो	नमो०
४०	१४	अभ्यर्चभ्या	अभ्यर्चया	९१	१	श्रीनजि०	श्रीजिन०
४३	२	पदनी	पदनी	९१	८	नमो	नमो०
४३	६	अर्धदानैः	अर्धदानैः	१००	४	सायुधाय	सायुधाय०
५४	१	सर्व	सर्व	१०३	१३	वलक०	वलक०
५५	१५	सूतिकागृह	सूतिकागृह	११०	३	चैत्यवदनं	चैत्यवन्दनं
६०	९	गृहितातपत्र	गृहितातपत्र	१११	६	मङ्गल०	मङ्गल०
६५	२	कुंकुमादि०	कुंकुमादि०	११३	११	शांति	शांति
७०	१	चतुर्दश	चतुर्दश	११६	६	वर्धन्त	वर्धन्त

प्रतिष्ठादि
विधियो।
॥ ९ ॥

कुंभस्थापनना सामाननी यादी

कुंभ रातो	श्रीफल नंग २	वांसना जवार नंग ४	पंच रत्ननी पोटली ३
मुखड घसेत्री	डांगर शेर ३	तांबानु कोडियुं नंग १	रोकडा रुपिया १३
केसर घसेलुं	डांगरना छालां शेर ३	फानस नंग २. १ मोडुं	छुटा पैसा ७०
सोपारी नंग ५०	छापानो भूको मण ०॥	१ नानुं	मीढळ मरडासींग ५
पान नंग १५	माटीनो भूको मण ०॥	वाढी नंग १	डाभ साथे वांधेला
लीली धरो	नाडानो दडो ऋण तारनो	गायनुं घी शेर ५	तास्तुं लीलुं गज ०॥
फुलनी माळा तथा छुटां फूल	कंकु वाटकी	वासक्षेप	खाली वाडकी नंग ५
		सरावळा नंग ४	

नेद्यावर्तना सामाननी यादी

पट	पान	श्रीफल	रुपिया २१	कंसार
कळश १०८	सोपारी	केसर	सोपारी	करंवां
नाळचानो	बदाम	घी	वे लीला ककडा	वांट
पतासां	नैवेद्य	दूध	वे पीळा ककडा	खीर
पैसा ६०	वासक्षेप	वरघडा नंग ४	चुरमाना लाडु ७	भात
		चोखा शेर ५।	पुरी नंग ७	

॥ ९ ॥

नवग्रह दश दिक्पाल अष्टमंगलना सामाननी यादी

प्रतिष्ठादि
विधिओ।
॥ १० ॥

रतांजली
सुखड
केकर
वरास
कस्तुरी
गोरुचंदन
चुवो
अगर
हिंगळोक
मरचकंकोल
अंबर
वासक्षेप
कंकु
गायत्रुं दूध
सोनाना वरख
चंपाना फूल

जासूद
डमरो
मोगरो मरवो
जायसेवंती
राती करण
पीळी करण
जुइ गुलाब
मचकुंद
वस्त्र पीळा २
वस्त्र रातां ३
वस्त्र काळां ३
वस्त्र लीळां २
वस्त्र सफेद १४
पंचपटो
वस्त्र वादळी ३
पीळी साडी

सफेद साडी
धूप शेर ०॥
हाथ फानस २
वाकळा शेर ३
गोळ धागी लाडु नंग ५
ममराना लाडु नंग ५
मगनी दाळना लाडु ५
चणानी दाळना लाडु ५
कळीना लाडु ५
खाजां ३ वेवर ३
अडदनी दाळना
लाडु ३
काळा तळना लाडु ५
पेंडा ७
पान ५०
सोपारीना ककडा

खारेकना ककडा
कोपराना ककडा
साकर
सोपारी ६०
वदाम ४०
अखरोट ३५
आलु ३५
अंजीर ३५
कमर काकडी
केळां १०
जायफळ ३५
पतासां ३५
शेरडीना ककडा
राती सोपारी १५
काळी सोपारी ५
नारंगी ५

सीताफळ ५
वीजोरा ३
जामफळ ५
श्रीफळ ७
दाडम ५ रु. २७
कमरक पैसा ६०
जावंची दोढ
रुपियाभार
तज दोढ रुपियाभार
लविंग १ आनी
एल्ची १ रुपियाभार
पीस्तां चारोळी
चोग्खा शेर ३
पाटला नंग २०
रकावी २०
वाडकी २०

प्रतिष्ठादि
विधिओ।
॥ ११ ॥

स्नात्रना सामाननी यादी

दहीं गायनुं शेर साकरना ककडानंग १० चोखा शेर ३ केशर वरास	धूप, लीलां फळ श्रीफळ नंग २ कपूरनी गोटीओ पेंडा नंग ५	घंटडी लूण माटी आरती मंगळदीवो थाळी वेलण.	चामर, दर्पण वरख, अत्तर कळश नं. ४ पंखा नं. २	रु. ३ रोकडा छुटा पैसा ४० नाडुं. खाली वाडकी
-----------------------------------------------------------------	--------------------------------------------------------------	--------------------------------------------------	------------------------------------------------------	-----------------------------------------------------

सिद्धचक्रपूजनना सामाननी यादी

नाळीएर गोटा नं. १० पान नं. १० फळ नं. १० नैवेद्य नं. १०	छुटां फुल केशर वरास धूप वरख दूध शेर १।	चोखा शे. २॥ वासक्षेप रुपिया २५ पैसा ६४	सिद्धचक्रजीना मांडला माटे चोखा वि० धान्य तथा रंगो.
-----------------------------------------------------------------	-------------------------------------------------	-------------------------------------------------	----------------------------------------------------------

विशस्थानकपूजनना सामाननी यादी

नाळीएरना गोटा नं. २१ पान नं. २१ फळ नं. २१ नैवेद्य नं. २१	छुटां फुल केसर वरास धूप	वरख दूध शेर २॥ चोखा शेर २॥ वासक्षेप	रुपिया ३५ पैसा ६४ विशस्थानकना मांडला माटे चोखा तथा रंगो
-------------------------------------------------------------------	----------------------------------	----------------------------------------------	------------------------------------------------------------------

॥ ११ ॥

तिष्ठादि
वेधियो।

॥ १२ ॥

च्यवनकल्याणकना सामाननी यादी

पाणी भरवानो नळो नं. १, दूध मण ०॥, वासक्षेप, इन्द्र इन्द्राणी माटे मुगट तथा आभरण, गुरु पूजा माटे वस्त्र (कामळ), धर्माचार्य माटे पूजननी जोड (रेशमी), चौद स्वप्न.

जन्मकल्याणकना सामाननी यादी

चामर ८	कळथी	फुलना हार १००	धूप रु. ५१
दर्पण ८	राई	वेणी १००	बरास पैसा १०८
पंखा ८	जव	गजरा १००	सुखडनुं तेल
फळश ८	सरसव	केळनां घर ३	अंगलुछणां
झारी ८	कांग	वाजोठ	रक्षा पोटली
पुंजणी ८	अडद	सुखडनां लाकडां	रुपाना चोखा
फानस ८	वृषभ कळश २	अरणीनुं लाकडुं	अरीठानी माळा
शण	दूध मण १	केशर	जवनी माळा

लेखशाळाना सामाननी यादी

स्लेट पेन	कागळ	फाउन्टनपेन	पुस्तको विगेरे
खडीया	हॉल्डर	नोटबुक	गोळ धाणा रु. २१

॥ १२ ॥

प्रतिष्ठादि
विधिओ।
॥ १३ ॥

विवाहना सामाननी यादी

घसेली मुखड मोटो वाडको	नवग्रहनुं नैवेद्य	पोंखणां	रु. ५१	वासक्षेप
मरडासींग वांधेलां मीढळ	,, नां फळ	वाजोठ	पैसा ५१	धूप
मेवो	श्रीफल	केसर		चोखंडो दीवडो
चारीमंडप	जवारासहित वरघाडां	वराश		लाळकपडुं (कमुंवो)

राज्या-भिपेकना सामाननी यादी

छडी, चामर, छत्र, तिलक करनार कुमारिका, भेट. रु. ५१

दीक्षाकल्याणकना सामाननी यादी

रेशमी वस्त्र, मुखड, केशर, जलनो कलश, धूप, फुल.

केवल तथा मोक्षकल्याणकना सामाननी यादी

केसर	रु. ५१	दहिनुं पात्र	सोनानी वाडकी	अञ्जन माटे	वी	,,
धूप	सोनामडोर	दूध	सोनानी सळी	,,	प्रवाल	,,
मुखड		नवांगी सुवर्ण पूजन			मध	,,
वासक्षेप		वली वाकुला नैवेद्य	गुरमो	,,	(साकरनी चासणी)	
फुल		चोखा शे. ११।	वरास	,,	३६० करियाणानो पडो	
घीनुं पात्र		(गाथा भणी उछाळघा)	कस्तूरी	,,	पोंखणां	
			मोती	,,		

प्रतिष्ठादि
विधिओ।
॥ १४ ॥

न्हवणयोग्य नाना कलश ८
पाणी राखवाना घडा ९
कुंडी २
नंदावर्तयोग्य वरघडा ४
पोंखणाने लगता घडा ४
शरावलां ३२
सातधान्यना वलययोग्य कुंडां ८
नंदावर्तयोग्य सेवनना पाटला २
दशीवालां वस्त्र कोरा अखंड ४
[नंदावर्तयोग्य २ विंघप्रतिष्ठायोग्य
३ मुख्ययोग्य ४ नंदावर्त लेखकन]
कलश सोनानो १
" रुपाना ८
थाल सोनानो १

प्रतिष्ठाने लगता सामाननी यादी

अर्घ्ययोग्य सोनानी रकावी १
सोनानां कंठण ५
सोनानी वींटी ५
रुपानी वाटकी २
सोनानुं कचोडुं १
सोनानी सळी १
राता रंगनो सुरमो, साकर, वरास,
कस्तूरी, मांती, मुंगीयो, चूनी, सोनुं,
रुपुं. अन धी मेळवी अज्ञान वनावुं.
प्रियंगु कपूर गोरुचंद-दधेलीमां मूकवां
पंचरतननी पोटलीओ-विंचनी आंग-
लीए वांधवा-विम्ब होय तेंटली.
आरीसो १
माइसाडी-कुमुंभी वस्त्र १

मीठळ
मरडार्शींग
जवनी माला
अरीठानी माला
{ धोला सरसव
लोखंड अछेदित
रक्षा पोटली
सरसव
दहीं
अक्षत
वो
डाभ
अर्घ्य वास्तवानुं वासण
नाडाळडी

ए देरेक वस्तु देरेक विंघ-
विम्ब मांटे जुदी जुदी जोए
एटले जेटला जिनविम्ब
तेटली वस्तुओ लेवी.
पुंखणां:-त्राक
वोंसरुं
मुसळ
रवैयो
तीर
इंडापींडी
शरावसंपुट

प्रतिष्ठादि
विधियो।
॥ १५ ॥

पोंखनार स्त्री तथा मोड

दशांग धूप शेर ०॥

गंगानुं पाणी, दरेक जातनां फुल

समूल डाभ, अखंड चोखाना थाल २

गंगानी रेती घंट २

„ माटी छत्र ३

समुद्रफणी

कुआ नदी सरोवर

वाघ वि. १०८

जलाशयोनां पाणी

३६० करीयाणानो पडो १ दीवी ४

लोटा २

चामर ८

आरीसा ८

वींझणा ८

कळश ८

३६० करीयाणानो पडो १ दीवी ४

वाजिंत्र

धोळो वासक्षेप .

पीळो „

केसर, कपूर, कस्तुरी

लगाडेळां चोरीनां

वासण ३२

मुखड घसेली जाडी

सुंवाळी

लाडु

मांडा

खीर

लापसो

पहेळो वलि—लाडु मगना ५, लाडु तलना ५, लाडु चणाना ५, लाडु धुलीना ५, लाडु गोलधाणीना ५ (एम लाडु २५)

रूर, दहीं, करंयो, पुरी, पुडला, खीर, वडां, लाडवा.

बीजा वलीदान माटे—शणनां बीज, कलधी, ममूर, जव, कांग, अडद, सरस्य.

बीजा वली माटे सातधान—शाली, जव, घउं, मग, वाल, चणा, चोळा.

बीजा वली थाटे फल—नाळीपर, सोपारी, खारेक, द्राक्ष, बदाम, अखरोट, पिस्तां, साकर,

फलोरी, दाडम, जामफल, बीजोरां, केरी, केळां, रायण, नारंगी.

टोपरां, सर्वजातनी मुखडी

घीनो वाटको १

दहीनो „ १

दधनो „ १

ए रीते त्रण प्रकारना वली वाकुल

प्रतिष्ठा वखते राखवा

अंदर श्रीफल नाखेलो शेर ५नो लाडु

सोनानां फुल १०८; रूपानां फुल १०८

धूप माटे अगर, अगरवत्ती

नानी ध्वजा २४

मोटा ध्वज २

पंचवर्णी इन्द्रध्वज १

॥ १५ ॥

प्रतिष्ठादि
विधिओ।
॥ १६ ॥

ग्रहोनी स्थापना :
भगवानने जमणे पडखे स्थापवा

ॐ नमो बुधाय ४	ॐ नमः शुक्राय ६	ॐ नमः सोमाय २
ॐ नमो गुरवे ५	ॐ नमः सूर्याय १	ॐ नमो भोमाय ३
ॐ नमः केतवे ९	ॐ नमः शनैश्चराय ७	ॐ नमो राहवे ८

अष्टमंगल स्थापना

स्वस्तिक १	श्रीवत्स २	कुम्भ ३	भद्रासन ४
नंदावर्त्त ५	वर्धमान ६	दर्पण ७	मत्स्ययुग्म ८

भगवाननी सन्मुख आलेखवां.

परिशिष्ट नं. ३

दिक्पालो भगवानने डाबे पडखे स्थापवा

ॐ ईशानाय नमः ८ ईशानकूणे	ॐ इन्द्राय नमः १ पूर्वे	ॐ आग्नेयाय नमः २ अग्निकूणे
ॐ कुबेराय नमः ७ उत्तरदिशि	ॐ ब्रह्मणे नमः ऊर्ध्वे ९	ॐ यमाय नमः ३ दक्षिणदिशि
	ॐ नागाय नमः अधः १०	
ॐ वायवेयाय नमः वायुकूणे ६	ॐ वरुणाय नमः ५ पश्चिमे	ॐ नैर्ऋतये नमः ४ नैर्ऋतकूणे

॥ १६ ॥

प्रतिष्ठादि
विधौ।
॥ १७ ॥

परिशिष्ट नं. ४

ग्रहोनी स्थापनानो आकार तथा उपकरणः—

नंबर	ग्रहनाम	आकार	आलेख	दिशा	गोठचण	कापड	लाड	फुल
१	सूर्य	मंडलाकार	रतांजली	पूर्वसन्मुख	मध्यमां	लाल	घउंनादळनो	लाल कणेर
२	चंद्र	चोरस	सुखड	पश्चिमसन्मुख	अग्निकूणे	धोळुं	ममरानो	चंद्रविकाशी कुमुद वा मोगरो
३	मंगल	त्रिकोण	रतांजली	उत्तरसन्मुख	दक्षिणदिशामां	लाल	गोळधाणीनो	जासुद
४	बुध	वाणाकार	सुखड, केसर	दक्षिणसन्मुख	ईशानकूणे	लीळुं	मगनो	जुड वा चमेली
५	गुरु	पाटीनाआकारे	गोरुचंदन	उत्तरसन्मुख	उत्तरदिशामां	पीळुं	चणानी दालनो	चंपो
६	शुक्र	पंचखुण	सुखड	पूर्वसन्मुख	पूर्वदिशामां	सफेद	पीसेला चोखानो	सेवंत्रानां
७	शनि	धनुषाकार	कस्तुरी, चुवो	पश्चिमसन्मुख	पश्चिमदिशामां	गलीरंगजेवुं	अडदमगनो साथे	वावळनां
८	राहु	सूर्याकार	कस्तुरी, चुवो	दक्षिणसन्मुख	नैऋत्यकूणे	काळुं	अडदनो	मचकुंद
९	केतु	ध्वजाकार	यक्षकर्म	दक्षिणसन्मुख	वायव्यकूणे	छींट	अडद-मग-चणा- ममरानो साथे	पंचरंगी

सूचना :—नवेय ग्रहो माटे—अधेळां, सोपारी, अक्षत, चंदन, धूप अने दक्षिणा ए नव नव लेवां.

॥ १७ ॥

प्रतिष्ठादि
विधियो ।
॥ १८ ॥

— दिक्पालोनां उपकरण —

नाम	आलेखन	पूजन	फुल	फल	वस्त्र	नैवेद्य	द्रव्यादि
इन्द्र	गोरुचंदन	केसर	चंपो	जामफळ	पीळुं	मोतीचूर	अक्षत, पात
अग्नि	रतांजली	"	जासुद	राती सोपारी	रातुं	चूरमानो	सोपारी
यम	कस्तुरी, चुओ	कंकु	मरवो	काळी सोपारी	काळुं	अडदनो	तांवा ताणुं
नैर्ऋत	कस्तुरी	चुओ, सुखड	मालती बोलसीरी	दाडम	उदुं	तलनो	"
वरुण	कस्तुरी चुओ	" "	बोलसीरी	दाडम	आसमानी	मगनो	"
वायु	सुखड, केसर } कस्तुरी }	कस्तुरी } वासुचुओ }	दमणो } दमणो, चंपक }				
कुबेर	सुखड, वरास	सुखड, वरास	जुइ, सेवंत्रा	नारंगी, केळां	नीळुं	मगनो	"
ईशान	सुखड	सुखड	कुमुद	बीजेरुं	श्वेत	वेवर	"
ब्रह्म	सुखड, कपूर	"	सेवंत्रा	सेलडी	"	वेसीदळ	"
नाग	सुखड, दूध	"	मोगरो	बीजेरुं	"	वेवर	"
				उजळी वदाम	"	पेंडा	"

परिशिष्ट नं. ५

कुंभस्थापन गीत

- धृष्टि विध क्रीन्ने रे, क्वथ्या पूरथ्य क्वथनी, निम्न क्रिया सीञ्जे, निर्विघ्ने दिन दशनी आंकनी०
नीलोञ्जन घट राते परण्ये पाक शुद्ध ते लीन्ने, तेदनी पर आठे मंगल द्रवता त्रित्र लणीन्ने धृष्ट्य० १
- तेनी कठे डाम समूले, रिद्धि वृद्धि संगाते, गोवासुरे शुंथी आंधे, विधिकारक विधि साथे धृष्ट्य० २
- मंत्र सहित स्वस्तिक कुंकुमनो, छेनी मध्ये क्रीन्ने, पंच स्तन पूगी वणी इपक, समयतुरंस कवीन्ने धृष्ट्य० ३
- अष्टोत्तरशत कूपक जलशुं, महोच्छ्वयतुं जल जेले, वर्धमानसूरीश्वर भाजे, तीरथ जल अलु मेले धृष्ट्य० ४
- ने जल लक्ष सौभाग्यवती, नवपदक मंत्र संभारे, थीर सासे कुंभक करी जलने, पूरे अक्षय धारे. धृष्ट्य० ५
- भीतांवर शुक्र अलुभूज दांडी, कुलभाजा पहरेरार्ध, तेदनी उपर श्रीक्षण थापो, मंगल गीत गवाछ धृष्ट्य० ६
- शुंहर शासितो सार्थीयो पूरी, थापो घट शुभ दिवसे, यार शरावलां ज्वारा केरां, करे स्वस्तिक यत्र विदिशे. धृष्ट्य० ७
- निम्नपडिमाने नभण्ये पासे, दीपकमुत घट धरीन्ने, कुंभयक नक्षत्र मेणवीन्ने. तो सवि अशुभने करीये धृष्ट्य० ८
- स्नात्र अष्टोत्तरी त्रिंअप्रवेशे त्रिंअ प्रतिष्ठा होवे, अे करण्णीमां मंगलउपे, कुंभस्थापन धुरे जेवे धृष्ट्य० ९
- दीपक अण्डने धूप त्रिकाले, साते रभरथ गण्णीन्ने, दिंसक श्रवने स्त्री इतुवती, तस दृष्टि अवगण्णीन्ने. धृष्ट्य० १०
- मद्विज वीर नेमिसरराजुल. तास स्तवन नवि लण्णीन्ने, उपसर्गादिक भावना टाली मंगल गीतने गण्णीन्ने. धृष्ट्य० ११
- नरनारीने उल्लसित जावे, तंभोवादिक हीन्ने, ते दिनथी मांडीने दश दिन, लघुस्नात्र निन क्रीन्ने. धृष्ट्य० १२
- शुशासन्यं ह करणे क्रीधी पहले, दिन अे करीन्ने करण्णी, विधिन्नेगे करी करीने वरीन्ने, रंजे निम्न शिव धरण्णी. धृष्ट्य० १३

प्रतिष्ठादि
विधिओ।

॥ २० ॥

कुंलस्थापन लास

(वालोछ वाओ छे वांसवी० ओ देशी)

ढाल—श्रुतदेवी यरणे नगी रे, भागुं अविचल ढाल; गिंय प्रतिष्ठा महोच्छवे रे, मंगलकोउ इत्याणु.	१
मंगलकलशनी थापनारे...ओ आंकनी.	
मंगल प्रथम करतां हुओ, मंगल संधने सोय; मंगल जिनवर गिंयते रे, मंगल चैत्यते होय.	मं० २
मंगल तीर्थ सिद्धायले रे, मंगल श्रीगिरनार, मंगल आयु अष्टापदे रे, समेतशिपर ज्यकार.	मं० ३
द्रव्य मंगल कुंलस्थापनारे, लाव मंगल परिणाम, करतां ते रवेके संपदा रे, सींओ मनवञ्जित काम.	मं० ४
पंच इत्याणुक जिनतणुं रे, करणी पंच प्रकार, देव देवी आवकताणी रे, करे सक्षय अचनार.	मं० ५
यार निक्षेपे जिनवर कला रे, जिनतणुं पंगइत्याणु, अचन जन्म दीक्षा करी रे, केवल भुक्ति निदान.	मं० ६
उत्तम इल आवक तणे रे, उत्तम करणी ओद. लक्ष्मी वाहो कीछओ रे, वार्थे जिन धर्म रनेद.	मं० ७

ढाल २ (वाचम वेला रे आवन्ने ओ० देशी)

मुचित अंग पावन करी, धरीओ तिलक प्रलाव रे, मादा मंगल शुभ कारणे, सुरत शुभ इराव रे—मंगल कलशनी थापना	१
अष्ट मंगल देव रये, तेदना कुंल कडेवाय रे, सुंदर अंग मनोदर, ओदवेा कुंल कराय हो.	मं० २
सोण शणुगार सछ करी, धरीओ शियल शुं रंग रे, पड़ेराउ समकित सुंदरी, दरभतणो उच्छरंग रे,	मं० ३
निर्भल कुंल जणे लरी, उपर श्रीक्षण दोड रे, अंदन कुसुमते शावशुं, प्रगटे मंगध थोड रे.	मं० ४
कुसुम स्वरितक त्रिहुं दिशे, ओणोपर कुंल जनाय रे; गीतगान वाजिनं शुं थापो, जिनम मंसिगक गणु थाय रे.	मं० ५
स्वरितक शुभ पुरी करी, जिनवर दक्षिण अंग रे, धूप दीप गणुंती करे, नानु रंके शुभ रंग रे.	मं० ६

प्रथम प्रतिष्ठा भरते करी, संध साथ परिवार रे; शैत्रुंजे मुरत रतने, नीरभता लडे लवपार रे.	मं०	७
संप्रति जिंय जरावीयां, सवा डोड उदार रे; धवलि उपर सोदाभलां, धातु पंथायु इग्नर रे.	मं०	८
थापना थापयु करणे, मंगल कलश आराध रे; द्रव्य मंगलथी संपणे, भाव मंगल प्रसिद्ध रे.	मं०	९
स्नान अष्टाष्ट त्रिकरणे, जिंय प्रवेश मंडाल रे; दस दुदलजने आपणे, मंगल डोड कत्यायु रे.	मं०	१०
कलश—सुकृत कारयु दुःख निवारयु मंगलकलशनी थापना, मनमोहन प्रभु पास ये दुर्घ, भूल समकित वासना; संयत् (१८४१) अक्षर ऐकताले वरसे, उत्तम गुर निवासना; दुदलज नरलव सक्ष क्रीधा, मंगल कलशनी थापना.		१

प्रभु पोंभलांना गीता

(भरत नृप भाव शुं ये राग)

श्री गिनराजने पोंभवा ये, आवे आवे शैयरेना साथ, जित्युंढने पोंभवाये गावे गावे सोदागयु नार जित्युं० ये टेक.		
ध्वज पूजन अक्षिकेकमां ये, करे सामधियामां सार जि० वली वरधोडागां सार जि०		१
धडी पिंडी धूसरने भूसल ये, रयैया संपुट श्राय जि० मंगलद्रव्य करे पुंभलांये. संधने मंगल थाय. जि०		२
पूर्वे धन्दाणीये पोंभवा ये, विधि विनय ऐक तार जि० हेतु शुद्ध गम धारीये ये, टाणवा कर्म संधार जि०		३
कुंकुंभ अक्षत वधानीयाये, मोतीये ते मोड धराय जि० सुंदरी शिर धरी घाटडीये, लणी लणी प्रथमे पाय. जि०		४
करणी ये भरणी पुष्यनीये, मली मली वनिता वृंढ जि० करे तरे अणुके ये, येम कडे भीमथंढ जि०		५

गीत २

शुंरे धन्दाणी पूछे वेवाणोने रे, शुंरे शी करी करणी तमे ऐक; प्रभुने केम पोंभवा ये.
शुंरे अमे तेमां समज्या नडीं रे, शुंरे धारयु दाभवे। तेक; प्रभुने केम पोंभवा ये.

જીરે પહેલું તે ધોંસરું આદ્યું રે,	જીરે ધોંસરું ગાડલે હોય;	પ્રભુને જોમ પોંખીયા જો.	
જીરે સંસારે ધોંસરું નાખીયું રે,	જીરે સંસારથી પાર પામે સોય;	ધોંસરે જોમ પોંખીયા જો	૨
જીરે ઇન્દ્રાણી પૂછે વેવાણોને રે,	જીરે રમુસલ ગાંડણીજો હોય;	પ્રભુને કેમ પોંખીયા જો.	
જીરે મુસલે તંદુલ કાઢીયે રે,	જીરે સંસારથી જલું કાઢો નેય;	પ્રભુને જોમ પોંખીયા જો.	૩
જીરે ઇન્દ્રાણી પૂછે વેવાણોને, રે,	જીરે રવૈયે ગોળીજો હોય;	પ્રભુને કેમ પોંખીયા જો.	
જીરે રવૈયે માંખણ નીપજે રે;	જીરે સંસાર સાણુરસ હોય;	પ્રભુને જોમ પોંખીયા જો.	૪
જીરે ઇન્દ્રાણી પૂછે વેવાણોને, રે;	જીરે ષત્રાક તે રંટીજો હોય;	ત્રાકે કેમ પોંખીયા જો.	
જીરે ત્રાકે સૂતર નીપજે રે,	જીરે સંસારથી અર્થ કાઢો ધોય;	ત્રાકે જોમ પોંખીયા જો	૫
જીરે ઇન્દ્રાણી પૂછે વેવાણોને રે,	જીરે પસરીયો કુંડાને હોય;	સરીયે કેમ પોંખીયા જો.	
જીરે સરીયાથી વસ્તુ સહુ નીપજે રે,	જીરે મંગલ ધર્મથી જોમ;	સરીયે જોમ પોંખીયા જો.	૬
જીરે પાંચ મંગળ જોમ પચવડાં રે,	જીરે આદરે સઘળા લોક;	પ્રભુને જોમ પોંખીયા જો.	
જીરે તેહ કારણ ઈલાં કરું રે,	જીરે શું જાણે દેવતા લોક;	પ્રભુને જોમ પોંખીયા જો.	૭

લગ્નનાં ગીત ૧

આંજો આનંદ છે અપાર રે.....સાજનીયા લોકો	વરધોડે શોભા અપરંપાર રે.....સાજનીયા લોકો
વરધોડા મારા મહાવીરનો સાં	નિશલાના હૈયા કેરા હીરનો સાં
માંડવડે સાજનીયાજે મહાલીયા સાં	ઈન્દ્ર ઇન્દ્રાણી આવ્યા સાથમાં સાં
જોવી તે કરણી પરભવ શી કરી સાં	પોંખ્યા તે પ્રભુજી પ્રેમે કરી સાં
પુન્યેથી પોંખું છું ભગવંતને સાં	પહેલા મંગળે મોતી વેરીયાં સાં
	માંડવડે કદલી મંડપ ઘાલીયા સાં
	વેવાણને પૂછે વાતવાતમાં સાં
	પરભવ સેઆતા સાધુ સંતને સાં
	ખીજા મંગળે રત્નો દોળીયાં સાં

રીજે મંગળ ગજ યોડા પાલખી સાં શ્રેયે મંગળે મેઠા મ્હારથી સાં ફૂલડાં ગુંથેલી લાવો માળ રે સાં
પ્રમુછ સોદાવે છે સંસાર રે સાં મોતી માળેક ઉપર વારશું સાં પ્રમુછનાં પૂજન કરાવશું સાં
પ્રમુનાં પીનામ્બર ઝગકે કોરથી સાં પદ્મવિજય ગાવે મંગળ જોરથી સાં વરધોડે શોભા અપરંપાર રે...સાં

૨ (લાવણી)

મારા જનમ જનમના જોગી પ્રમુછ આર્યાવર્ત અવતરીયા, મારા વીર મહાવીર યોગી, પ્રમુછ આર્યાવર્ત અવતરીયા ૧
વિનયશીલ ને અતિવિવેકી, આળપણું મન દરવું જોથી; મારા નિર્ગુણને નિરસોભી, પ્રમુછ આર્યાવર્ત અવતરીયા ૨
નિરાકાર સાકાર બન્યા બન્યા, આદિનાથ અનંત બન્યા બન્યા; મારા ભાવતણા સોભાગી, પ્રમુછ આર્યાવર્ત અવતરીયા ૩
સકળ શાસ્ત્રની વિદ્યા વરીયા, મંગળ ફેરા મહાવીર વરીયા; ત્રતી શૂદ્રયાત્રમના યોગી, પ્રમુછ વિરલપંથ પરવરીયા ૪
કેવલજ્ઞાન કમ્પાણ્યક યાતાં, ભવનાં બંધન છુટી જતાં; જોગો ધીરવિજય સંયોગી, મુખડાં મહાવીરનાં ગળીયાં ૫

૩

વેવાણુ ઉઠ તું વહેલી ઉંઘ તણ,	વર આબ્યો છે તોરણુ આજ સણ.
કોઈ જાણુ કરો પીજાણુ કરો,	તમ પગલાં આવીને બદાર ધરો.
વેવાણુ લાવજોરે તુંતો કંકુ પડો,	તારે આંગણે ત્રિશલા લાડકડો.
વેવાણુ લાવજોરે તુંતો સોપારી,	તારે આંગણે આબ્યો અવતારી.
વેવાણુ લાવજોરે તુંતો કંકાવટી,	તારે આંગણે આબ્યો નાણાવટી.
થેવાણુ લેજોરે તુંતો લ્હાવો ધણો,	તારે બારણે અવસર વિવાહ તણો.
અગને ઉભાં ધણીરે વાર ચર્ધ,	વેવાણુને ખમર કડો કોઈ જઈ.



પૂર્વ ઇતિહાસ



આજથી ચાર સૈકા પૂર્વેનો એ ઇતિહાસ છે. ત્યારે સંસ્કૃત સાહિત્યનો સુવર્ણયુગ હતો. જૈનધર્મનો જન્મદાતા એ કાળ હતો. અંજનશલાકા, પ્રતિષ્ઠા, શાન્તિરનાત્ર વિગેરે ઘણાં વિધિ-વિધાનો થતાં હતાં. પ્રતિષ્ઠાકરણો પણ ઘણાના હતા. પૂ શ્રી હરિભદ્રસૂરિ-કૃત, હંમચંદ્રસૂરિકૃત; વાદિવેતાલ શ્રી શાન્તિસૂરિકૃત, તિલકાચાર્યકૃત, માનતુંગસૂરિકૃત આદિ અનેક કૃષો હતા. વ્યક્તિ-વિશેષતાએ દરેકમાં થોડો ફેરફાર હતો. ધીમે ધીમે આ મોટા કૃષોનું રચાન ઓછું થતું ચાલ્યું અને સુખોદ્યા (ચાન્ડીય) સમાચારીમાં આવતી સંક્ષિપ્ત અંજનશલાકાવિધિનો ઉપયોગ થવા લાગ્યો. આમ સાદુ જુદા જુદા કૃષો પ્રમાણે વિધિ-વિધાનો કરતા હતા. આ યજ્ઞોનો સમન્વય જરૂરી હતો જ અને તે કામ કર્યું મહોપાધ્યાય શ્રીમત્સકલચંદ્રજી ગણિવરે. પૂર્વાચાર્યોની કૃતિઓનો આધાર લઈ તેઓ શ્રીએ એક સળંગ પ્રતિષ્ઠાકરણની બેટ ધરી. આજ ત્રણ ત્રણ શતાબ્દિ જવા છતાં પણ એ ગ્રંથ હજી પ્રચારમાં છે. અર્ધિં જે કે સંસ્કૃત ભાષાનો નિયમ ચૂકાય છે, પરંતુ ઉર્મિને અને ભાષા નિયમનને યદુ ઓછું અને છે. એવી કૃતિઓ હોય તેાય યદુ અસ્થ જ છે. તેઓશ્રીનો આ ગ્રંથ ઉર્મિપ્રધાન અને રસપ્રદ છે. આ ગ્રંથ ક્યા સમયમાં અને સ્થળમાં ગન્યો તેની ચોક્કસ વિગત મળી આવતી નથી. પણ તેઓશ્રીની સત્તરબેદી પૂજા માટે લોક-કહેતી કંઈક એવી છે કે—સત્તરમા શેકનો એ સમય હતો, પૂજ્યશ્રીનું ચાતુર્માસ ત્યારે કપડવંજમાં હતું. ઉપાશ્રયની નજદિક એક કુંભારનું ઘર હતું. તેને ત્યાં ગવેડા હતાં. આ ગવેડાં રાજ નિયમિત ટાઇમે ભૂંકતાં. પૂજ્ય ગુરૂવર્યે ગવેડાને અનુલક્ષીને એક વખત કાઉસગ્ગ કર્યો—“ગવેડા બૂકે ત્યાં સુધી કાઉસગ્ગ” સાડા ત્રણ દિવસ આ કાઉસગ્ગ રહ્યો આ ધ્યાનમાં તેઓશ્રીએ રાગ-રાગણીમય પૂજાઓની રચના કરી જેનો આજે પણ પ્રચાર છે. આ ગ્રંથ પણ આવી જ કોઈ ધ્યાનરથ દશામાં ગન્યો છે એમ ક્ષેત્રાક પૂજ્ય પુરૂષોનું માનવું છે. આવા ભાવના પ્રધાન ગ્રંથનો ભાષાની દૃષ્ટિએ ફેરફાર ને સુદ્ધિ કરતાં મૂળ ભાવનાજ વિદ્યુત બની જવા સંભવ છે; આથી અનેક વિચારો કર્યા યાદ તેમજ અનેકના ગંતવ્યો લીધા યાદ તેમની ભાષામાં જ રહેવા દીધો છે.

प्रतिष्ठादि
विधिभिः ।

॥ १ ॥

नं. १ जिनमुद्रा

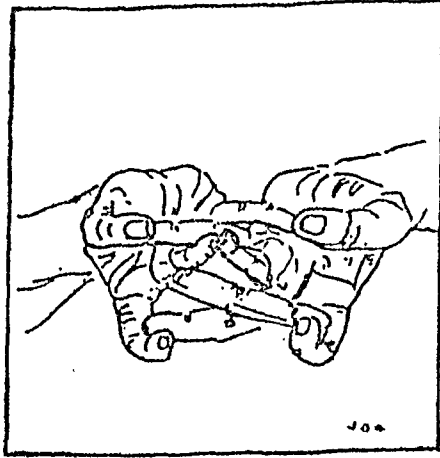


॥ १ ॥

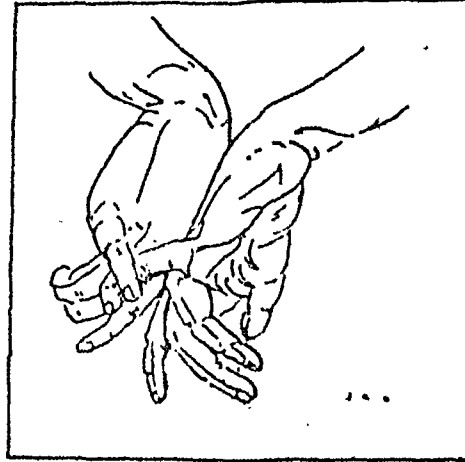
प्रतिष्ठादि
विधौ ।

॥ २ ॥

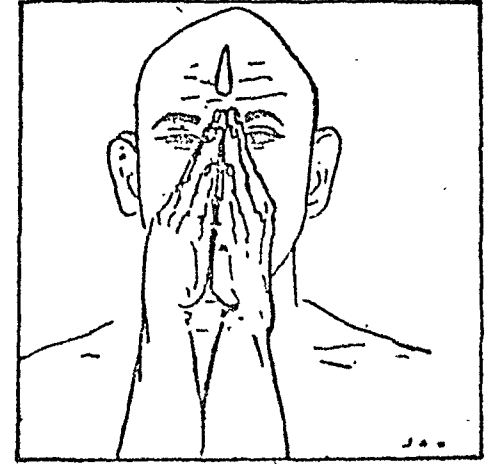
नं. २ परमेष्ठि मुद्रा



नं. ३ गरुड मुद्रा



नं. ४ मुक्ताशुक्ति मुद्रा



- २ उत्तानहस्तद्वयेन वेणीबन्धं विधायान्गुष्ठाभ्यां कनिष्ठे, तर्जनीभ्यां मध्यमे संगृह्य अनामिके समीकुर्यादिति परमेष्ठिमुद्रा ॥
३ आत्मनोऽभिमुख-दक्षिणहस्तकनिष्ठिकया वामकनिष्ठिकां संगृह्याधःपरावर्त्तितहस्ताभ्यां गरुडमुद्रा ॥
४ मुक्ताशुक्तिमुद्रा जत्थ समा दोवि गन्धिया हत्था । ते पुण निलाडदेसे, लगा अन्ने अलगति मुक्ताशुक्तिमुद्रा ॥

॥ २ ॥

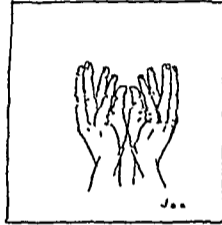
प्रतिष्ठादि
विधिओ।

॥ ३ ॥

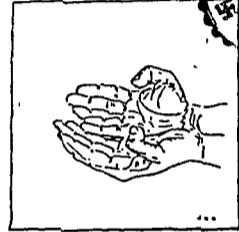
नं. ५ धेनु मुद्रा



नं. ६ पद्म मुद्रा



नं. ७ अंजली मुद्रा

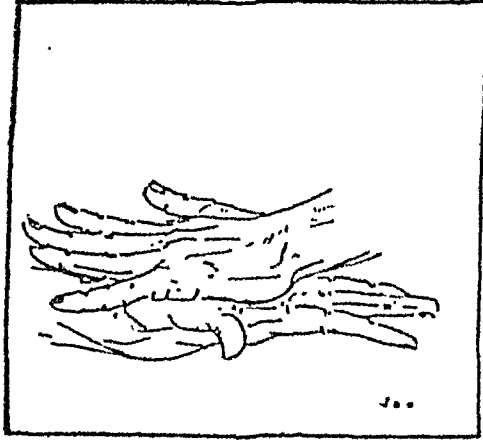


- ५ अन्योऽन्यप्रथिताङ्गुलीषु कनिष्ठानामिकयोः मध्यमातर्जन्योश्च संयोजनेन गोस्तनाकारो धेनुमुद्रा (सुरभिमुद्रा) ॥
६ पद्माकारौ करौ कृत्वा मध्येऽङ्गुष्ठौ कर्णिकाकारौ विन्यसेदिति पद्ममुद्रा ॥
७ उत्तानौ किञ्चिदन्वितकरशाखौ पाणी विधाय धारयेदिति अंजलिमुद्रा ॥

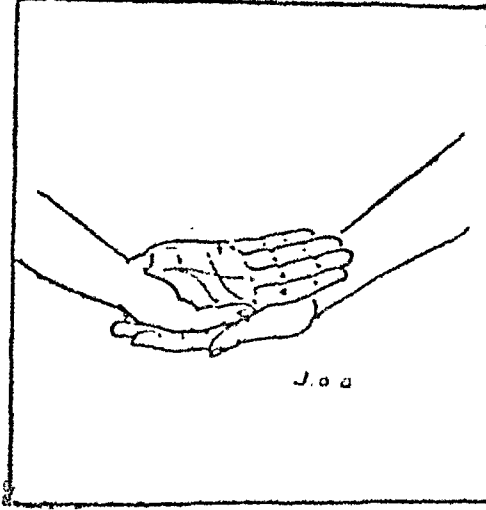
॥ ३ ॥

प्रतिष्ठादि
विधिगो।
॥ ४ ॥

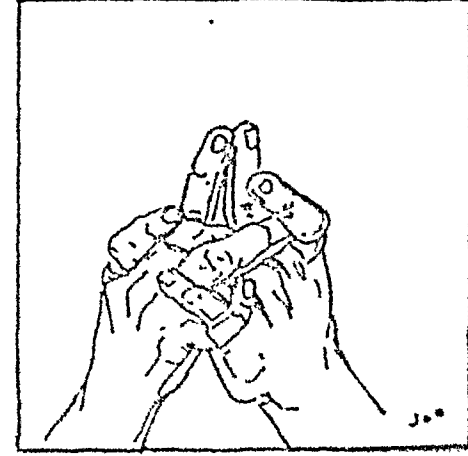
नं. ८ चक्र मुद्रा



नं. ९ आसन मुद्रा



नं. १० सौभाग्य मुद्रा

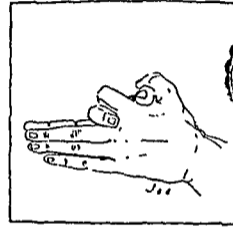
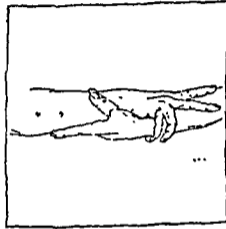
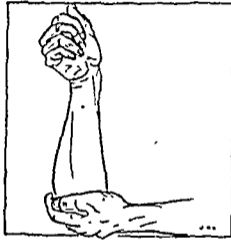


- ८ वामहस्ततले दक्षिणहस्तमूलं निवेश्य करशाखां विरलीकृत्य प्रसारयेदिति चक्रमुद्रा ॥
९ हस्तेलिकोपरि हस्तेलिका कार्या इति आसनमुद्रा ॥
१० परस्पराभिमुखौ प्रथिताङ्गुलिकौ करौ कृत्वा तर्जनीभ्यां अनामिके गृहीत्वा मध्यमे प्रसार्य तन्मध्याङ्गुल्यं निक्षिपेदिति सौभाग्यमुद्रा ॥

नं. ११ मुद्गर मुद्रा

नं. १२ वज्र मुद्रा

नं. १३ प्रवचन मुद्रा

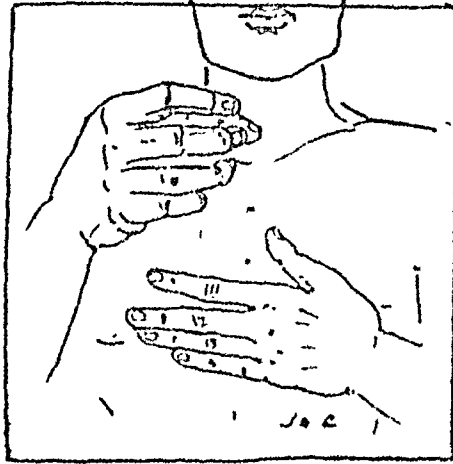


११ तिर्यक्कृतवामहस्तोपरि उर्ध्वाकृतदक्षिणकरः मुद्गरमुद्रा ॥

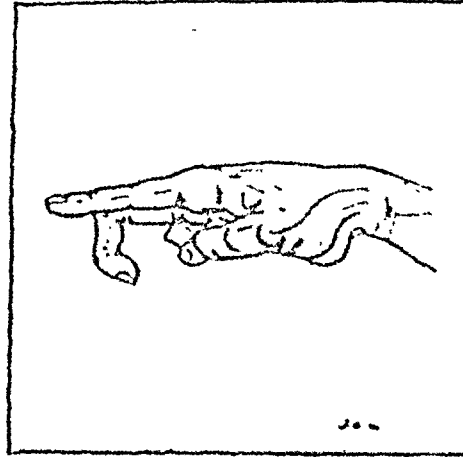
१२ वामहस्तस्योपरि दक्षिणकरं कृत्वा कनिष्ठिकाङ्गुष्ठाभ्यां मणिवन्धं वेष्टयित्वा शेषाङ्गुलीनां विस्फारितप्रसारणेन वज्रमुद्रा ॥

१३ अङ्गुलीत्रिकं सरलीकृत्य तर्जन्यङ्गुष्ठौ मेलयित्वा हृदयाग्रे धारयेदिति प्रवचनमुद्रा ॥

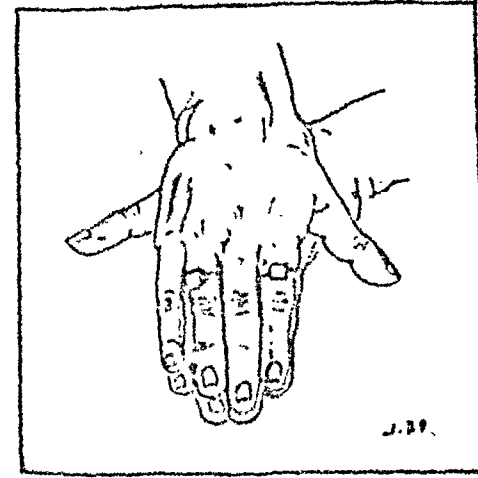
नं. १४ गणधर मुद्रा



नं. १५ अंकुश मुद्रा



नं. १६ मीन मुद्रा



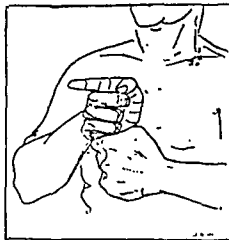
- १४ यत्र दक्षिणहस्तो हृदयसन्निहितो मालान्वितः, वामभुजश्च तिरश्चीनः, सा गणधरमुद्रा ॥
१५ दक्षिणहस्तस्य तर्जनीं प्रसार्य मध्यमाया इषद्वक्करणे अङ्कुशमुद्रा ॥
१६ वामहस्तापृष्ठोपरि दक्षिणहस्ततलं निवेश्याङ्गुष्ठद्वयचालनेन मीनमुद्रा ॥

प्रतिष्ठादि
विधिओ।
॥ ७ ॥

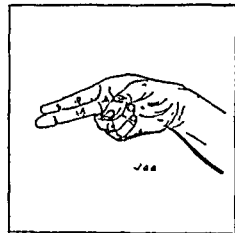
नं. १७ कूर्म मुद्रा



नं. १८ तर्जनी मुद्रा

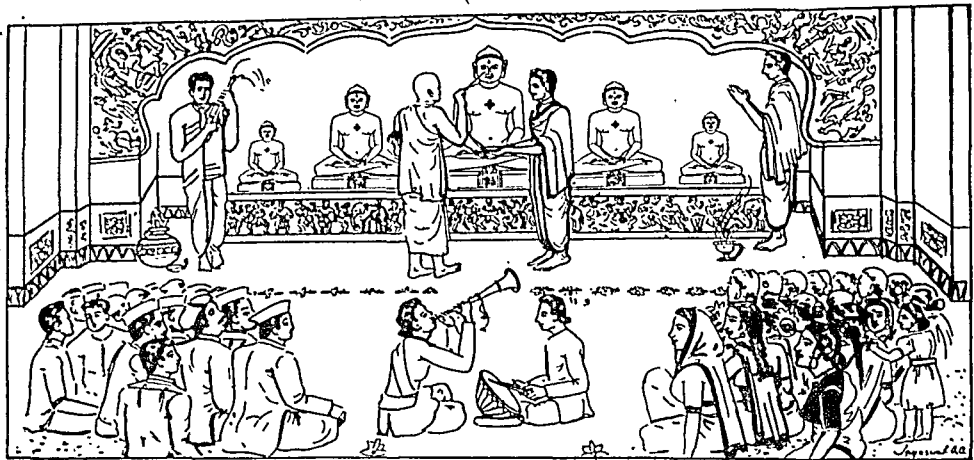


नं. १९ अस्त्र मुद्रा

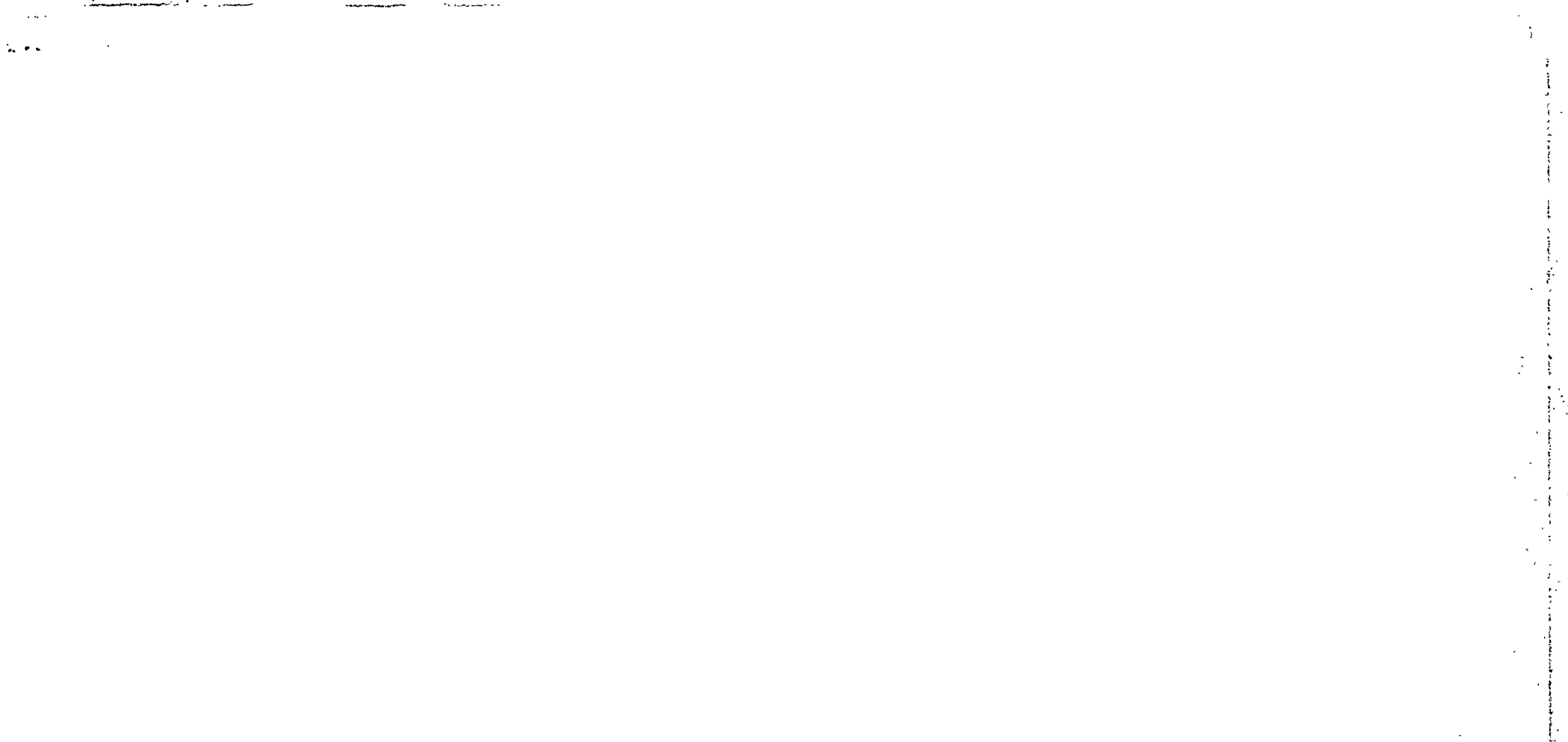


- १७ वामहस्तस्य मध्यमत्र्यङ्गुल्युपरि दक्षिणहस्तस्य मध्यमत्र्यङ्गुलीस्थापनेन द्वयोर्हस्तयोश्चाङ्गुष्ठकनिष्ठिकाश्चालनीया इति कूर्ममुद्रा ।
 १८ वामकरस्संहताङ्गुलिर्हृदयाग्रे निवेश्योपरि दक्षिणकरेण मुष्टिं बद्ध्वा तर्जनीमुर्ध्वोर्कुर्यादिति तर्जनीमुद्रा ॥
 १९ दक्षिणमुष्टिं बद्ध्वा तर्जनीमध्यग्रे प्रसारयेदिति अस्त्रमुद्रा ॥





॥ केवलमानकल्याणक-अंजनक्रिया ॥



प्रतिष्ठादि
विधिओ।
॥ १ ॥

ॐ

॥ नमो जिष्णुं ॥

श्रीशङ्खेश्वरपार्श्वनाथाय नमोनमः

॥ अनन्तलब्धिनिधानश्रीगौतमगणधरेभ्यो नमोनमः ॥

पूज्यपादश्रीमन्महोपाध्याय-श्रीसकलचन्द्रजीगणिकृत-
प्रतिष्ठाकल्प-(अञ्जनशालाकाविधि)नो
गुजराती अनुवाद
तथा अन्य उपयोगि विधिओ भाग पहेलो

॥ १ ॥

प्रणम्य श्रीमहावीरं, लब्धसामग्रीसंयुतम् । जिनविम्बस्य प्रतिष्ठा-पूजां वक्ष्ये विधानतः ॥१॥

अतिशयादि सामग्रीयुक्त श्रीमहावीरपरमात्माने नमस्कार करीने श्रीजिनविंबनी प्रतिष्ठा अने पूजानुं

विधान कहीश.

प्रतिष्ठा करनार श्रावकनुं लक्षणः—

विनीत, बुद्धिमान, प्रीतिवाळो, न्यायोपार्जितधनवाळो, चारित्रशील, द्रव्य-क्षेत्र-काळ-भावनो ख्याल राखनारो, माया-ममता विनानो, शुद्ध मनवाळो, श्रद्धालु श्रावक त्रैलोक्यपूज्य जिनविम्बनी प्रतिष्ठा करवानी योग्यतावाळो छे. ॥२॥३॥

प्रतिष्ठा करावनार आचार्यनुं लक्षणः—

दर्शन-ज्ञान चारित्रयुक्त, निष्परिग्रही, महाप्रभावक आचार्य प्रतिष्ठा करवानी योग्यतावाळा छे. ॥४॥

जे चारित्रशील माणसे न्यायोपार्जित द्रव्यथी मोक्षना ध्येय माटे जिनप्रतिमा करावेल छे; ते माणस देव देवेन्द्रो अने मानवेन्द्रोथी पूजित तीर्थंकर पदने भोगवे छे, तेमज तेणे जिनेश्वरनी आज्ञा मानवापूर्वक पोतानो जन्म सार्थक करीने पोताना कुळने उज्ज्वळ कर्युं छे. ॥५॥

जे माणस वीतराग-जिननी प्रतिमा करावे छे, ते परलोकमां सुखकारक धर्मरत्न प्राप्त करे छे. ॥६॥७॥

जे माणस ऋषभदेवादि वर्तमान चोवीशीना कोइपण तीर्थंकर परमात्मानी अंगुठा मात्र प्रमाणनी पण प्रतिमा भरावे छे, ते दीर्घकाळ सुधी उंचा प्रकारनां स्वर्गमुख भोगवी मोक्षसुख मेळवे छे. ॥८॥

मल्लिनाथ, नेमिनाथ अने महावीरस्वामी केवल वैराग्यग्रेक होवाथी चैत्यमां स्थापवा पण घरमां स्थापन करेला शुभोत्पादक नथी. ॥९॥

साक्षीपाठ—

*मल्लि-नेमि-वीरा, जिणभवणे सावर्ण पूजाइ । इगवीसं तित्थगरा, संतिगरा पूइया वंदे ॥(मेहे) ॥१॥
धर्मकर्मना ऊंडाणने समजनाराओए मोक्षमुखमां कारणभूत, दर्शन-ज्ञान-चारित्रना निश्चयरूप अने शुक्लध्यानरूप अग्निथी कर्मकाष्ठने वाळी नाखनार सर्व जिनेन्द्रोनां प्रतिष्ठापूर्वक अभिषेकादि तमाम कार्यो महोत्सवपूर्वक करवां, ते अभिषेकादि कार्यो वे प्रकारे छे—१ नित्य अने २ नैमित्तिक. ॥१०॥११॥

१ जिनेश्वरोनुं नित्यस्नात्र-लोकोने परलोकमां हितकर छे. ॥१२॥

२ नैमित्तिक स्नात्र-सर्वलोकोने आ लोक अने परलोकमां सुख आपनार छे. ॥१३॥

मंडपनुं स्वरूपः—

निर्मळ, विस्तीर्ण अने श्रेष्ठ वेदिकायुक्त तोरणवाळो, लटकती फूलनी माळाओवाळो, चार द्वारवाळो, विधविध वार्जित्रोना शब्दोथी भरपूर अने मंगलगीतोथी युक्त मंडप कराववो ॥१४॥१५॥

मण्डपनुं माप निर्वाणकलिकामांथी जोई लेवुं.

*मल्लि-नेमि-वीरा, जिणभवणे श्रावकेण पूजायै । पक्वविंशतिस्तीर्थकराः, शान्तिकराः पूजिता वन्दे (गृहे) ॥१॥

चार खुणावाळा ऋण हाथना मंडपमां वेदिका करी स्नात्र माटे श्री जिनेश्वरनी प्रतिमानी स्थापना करवी. ॥१६॥

दशे दिशाओमां दिक्पालो तथा आदित्यादि नव ग्रहो कल्पवा. ॥१७॥

खुणाओमां चार वेदिका छत्र सिंहासनयुक्त (कल्पी) करावी, इन्द्र सर्व कार्य करे. ॥१८॥

निर्मल अने शुद्ध प्रतिमा विधिपूर्वक लावीने, महोत्सव पूर्वक इन्द्रपणुं कल्पवुं ॥१९॥

पछी प्रतिमानी उत्तम जातिनां सुगंधी पत्र-पुष्प-जलथी पूजा करवी, ते प्रतिमा सन्मुख विशुद्धिने माटे मूल मन्त्रनो उच्चारण पूर्वक १०८ वार जाप करवो. ॥२०॥२१॥

मन्त्रः-ॐ अर्हं नमो अरिहंताणं, ॐ अर्हं नमो सयंसंबुद्धाणं, ॐ अर्हं नमो पारगयाणं ॥

पछी तेनी वहार पूर्वादि दिशाओमां अनुक्रमे प्रसिद्ध-१ जया २ अजिता ३ विजया अने ४ अपराजिता नामनी विद्याओ तेमज शासनदेवी, यक्ष, शक्र अने मङ्गलनी स्थापना करवी. ॥२२॥

त्यारवाद कळश स्थापीने 'शान्तिघोषणा' करतां स्वस्तिक आलेखवो पछी साक्षात् मन्त्रोच्चारपूर्वक पुष्पांजली करवी. तथा जिनेश्वर प्रभु तेमज सर्वे देवोने तैयार करवा, पछी १०८ मुद्रानी किंमतना-कंकोल, पुष्प, कपूर, अगर अने चंदनथी श्रीजिनेश्वर प्रभुना विंचने स्नान कराववुं. पछी गीत वाजिंत्र करवां. पछी जिनेश्वर परमात्माना अतिशयो याद करवा पूर्वक तीर्थजळथी स्नान करवुं. पछी प्रदक्षिणा-पूजा अने देववंदन करी विंचने वासक्षेप करवो अने शलाका [सळी]थी अंजन करवुं. पछी भक्तिपूर्वक ध्वज, चामर, छत्र विंगेरे

धरवां. पछी सर्व अंगे स्पर्श करी उत्तम नैवेद्य धरवां. आ रीते श्रीअरिहंत भगवंतनी पूजा करी सिद्ध महर्षिओ अने श्रावकोने शान्ति तुष्टि-पुष्टि आशिष आपवी. २३।२४।२५।२६।२७।२८।२९।

पछी आमन्त्रेला सर्वेने विसर्जन करी विवप्रतिष्ठा करी गुरूप शान्तिपाठ बोलवो. तेमां पहेलां वैधृत, व्यतिपांत वि. छोडी देवा पूर्वक उत्तम मुहूर्त जोवुं. ॥३०।३१।

त्यारवाद भूमिशोधन करवुं ते नीचे प्रमाणे:—

१०८ हाथ प्रमाणनुं “मङ्गलगृह” करवुं. पछी घरमां तेमज जिनालयमां सुवर्णजल लावी नवकार गणी श्री शान्तिनाथ अने पार्श्वनाथ भगवाननुं नाम लेवा पूर्वक “ॐ ह्रीं अहं भूर्भुवः स्वधायै(य) स्वाहा” ए मन्त्राक्षरे सात वार मन्त्री छांटवुं. घरमां तो ते पुष्प, अक्षत अने चंदन सहित पण छंटाय छे. पछी त्यां स्वस्तिक करीने दीपक तथा धूप करवो.

त्यारवाद वेदिका करवी ते नीचे प्रमाणे:—

(विशेष माप निर्वाणकलिकामांथी जोइ लेवुं)

चार सुणावाळी, ऋण हाथ लांबी पहोळी अने दोढ हाथ जंची काण्ठथी जडेली वेदिकाने वांसना मंडप तथा तोरणोथी सुशोभित करवी तथा तेमां पंचरत्ननी पोटली मूकवी.

१. पंचरत्न-सोनुं, रूपुं, मोती परचालां अने तांबुं.

प्रतिष्ठादि
विधियो।
॥ ६ ॥

प्रतिष्ठाना मुहूर्तं पहेलां दश दिवस सुधी प्रतिष्ठा करनारे एकाशन आदि तप करवो तथा ब्रह्मचर्य पाळवुं.
दातण करतां बोलातो मन्त्रः—ॐ ह्रीं यक्षाधिपतये नमः ॥

मुख साफ करतां बोलवानो मन्त्रः—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं कामदेवाधिपतये ममाभीप्सितं पूरय पूरय स्वाहा ॥

अग्निमन्त्रः—ॐ ह्रीं र रा रि री रु रू रे रै रो रौ रंरः ज्वालामालिनि अग्निश्श्वं अग्निः संस्थं कुरु कुरु स्वाहा ॥

जलमन्त्रः—ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय स्वाहा ॥

स्नानमन्त्रः—ॐ ह्रीं अमले विमले विमलोद्भवे सर्वतीर्थजलोपमे पां पां वां वां अशुचिः शुचिर्भवामि स्वाहा ॥

वस्त्रमन्त्रः—ॐ ह्रीं आं क्रौं नमः ॥

तिलकमन्त्रः—ॐ आं ह्रीं क्रौं अर्हते नमः ॥

पहेला दिवसनो मन्त्रविधिः—

जलयात्रानुं विधान करवुं. (जलयात्रानां उपकरणो माटे परिशिष्ट १ लामां जोवुं) प्रथम महोत्सवपूर्वक चतुर्विध संघ सहित पवित्र जलाशये जवुं. त्यां विधिपूर्वक १स्नात्र भणाववुं, शान्तिकलश भणवो. पछी मालो-
दघाटन करवुं.

पछी गंध, पुष्प, धूप तथा नैवेद्य, २ बलिदान विगेरेथी प्रतिमा, दिक्पाल तथा नवग्रहोनुं पूजन करवुं.

१ भूमिशुद्धिमन्त्र पीठस्थापनमन्त्र जलशुद्धि ॐ आपोऽष्काया एकेन्द्रिया जीवा, नवग्रह वासक्षेपमन्त्रः आच-
मनमस्तु गन्धोस्तु इत्यादि ए प्रमाणे दिक्पालमन्त्रदिनकरे ।

२ बलिमन्त्र-गाथा ॐ भवणवद्वाण०

प्रतिष्ठादि
विधिभो ।
॥ ७ ॥

त्यारवाद दर्शन-ज्ञान-चारित्र्यं पूजन करी आरति-मङ्गलदीवो करवो, त्यारवाद चैत्यवंदन करवुं ते नीचे प्रमाणे:-
प्रथम चैत्यवंदन करी 'श्री शान्तिनाथ आराधनार्थं' करेमि काउस्सग्गं वंदणवत्तियाए-अन्नत्थ १ लोगस्सनो
काउस्सग्ग करी नमो० कही नीचेनी-स्तुति वोळवी:-

श्रीशान्तिः श्रुतशान्तिः, प्रशान्तिकोऽसावशान्तिमुपशान्तिम् ।

नयतु सदा यस्य पदाः, मुशान्तिदाः सन्तु सन्ति जने ॥१॥

पछी श्रीद्वादशाङ्गी आराधनार्थं करेमि काउ० वंदण० अन्नत्थ० कही १ नवकारनो काउस्सग्ग करी पारी
नमो० कही नीचेनी स्तुति कहेवी.

सकलार्थसिद्धिसाधन-बीजोपाङ्गा सदा स्फुरदुपाङ्गा । भवतादनुपहतमहा-तमोपहा द्वादशाङ्गी वः ॥२॥

पछी "श्री शान्तिदेवयाए करेमि काउ०" विगेरे कही:-

श्रीचतुर्विधसङ्घस्य, शासनोन्नतिकारिणी । शिवशान्तिकरी भूयात्, श्रीमती शान्तिदेवता ॥३॥

पछी "शासनदेवयाए करेमि काउ०" विगेरे कही:-

या पाति शासनं जैनं, सद्यः प्रत्यूहनाशिनी । साभिप्रेतसमृद्ध्यर्थं, भूयाच्छासनदेवता ॥४॥

१. चैत्यवंदन नमुत्थुणं अरिहंतचेइयाणं एक नवकारनो काउ० पारी नमो० कही अर्हंस्तनोतु स श्रेयः इत्यादि
प्रण थोय कहेवी. चोथी थोय श्रीशान्तिःथी वोळवुं. इति विम्बप्रवेशविधौ.

॥ ७ ॥

प्रतिष्ठादि
विधौ ।
॥ ८ ॥

पछी "खित्तदेवयाए करेमि काउ० वि. कही:-

यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रिया । सा क्षेत्रदेवता नित्यं, भूयान्नः सुखदायिनी ॥५॥

पछी अच्छुतादेवीए करेमि काउ० वि. कही:-

चतुर्भुजा तडिद्वर्णा, कमलाक्षी वरानना । भद्रं करोतु संवस्या-च्छुप्ता तुरगवाहना ॥६॥

पछी समस्तवेयावच्चगराणां इत्यादि पाठ कही करेमि काउ० वि. कही :-

संवेऽत्र ये गुरुगुणौघनिवे सुवैया-वृत्यादिकृत्यकरणैकनिवद्धकक्षाः ।

ते शान्तये सह भवन्तु सुराः सुरीभिः, सद्दृष्टयो निखिलविघ्नविघातदक्षाः ॥७॥

पछी जलदेवयाए करेमि काउ० वि. कही :-

मकरासनसमासीनः, कुलिशाङ्गकुशचक्रपाशपाणिशयः ।

आशामाशापालो, विकिरतु दुरितानि वरुणो वः ॥ ८ ॥ पछी

करोतु शान्तिं जलदेवताऽसौ, मम प्रतिष्ठाविधिमाचरिष्यतः ।

धादास्यतो वा मम वारि तत्कृते, प्रसन्नचित्ता प्रदिशत्वनुज्ञाम् ॥ ९ ॥

आ जलदेवतानी प्रार्थनानो श्लोक बोलवो पछी १ नवकार कही नमुत्थुणं थी जयवीरराय सुधी कहेवुं.
स्तवन ॐ मिति नमो भगवओ०

॥ ८ ॥

पछी कुचाकांठे जइ करवानो विधि:-

मन्त्र युक्त वास कुंडुम अने चंदनना छांटा नाखवा त्यारवाद नीचेना मन्त्रथी त्रण वार आचमन करवुं.

ॐ गुरुतच्चाय नमः, ॐ [अर्हं] आत्मतच्चाय स्वाहा, ह्रीं विद्यातच्चाय स्वाहा, ह्रीं पार्श्वतच्चाय स्वाहा,

ॐ मुक्ति.तच्चाय स्वाहा. आ मन्त्रो त्रणवार बोली आचमन करवुं.

त्यारवाद. अङ्गन्यास करवो ते नीचे प्रमाणे:-

ॐ ह्रीं नमो अरिहंताणं ह्रीं शीषं रक्ष रक्ष स्वाहा, ॐ ह्रीं नमो सिद्धाणं ह्रीं वदनं रक्ष रक्ष स्वाहा,

ॐ ह्रीं नमो आयरियाणं ह्रीं हृदयं रक्ष रक्ष स्वाहा, ॐ ह्रीं नमो उवज्जायाणं ह्रीं नाभिं रक्ष रक्ष स्वाहा,

ॐ ह्रीं नमो लोए सच्चसाहूणं ह्रीं पादौ रक्ष रक्ष स्वाहा, ॐ ह्रीं नमो ज्ञानदर्शन-चारित्रान् ह्रीं सर्वाङ्गं

रक्ष रक्ष स्वाहा ।

त्यार वाद करन्यास करवा-

ॐ ह्रीं अर्हं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । ॐ ह्रीं सिद्धाः तर्जनीभ्यां नमः । ॐ ह्रीं आचार्या मध्यमाभ्यां

नमः । ॐ ह्रीं उपाध्याया अनामिकाभ्यां नमः । ॐ ह्रीं सर्वसाधवः कनिष्ठकाभ्यां नमः । ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं

ह्रीं ह्रीं-असिआउसा सम्यग्ज्ञानदर्शनचारित्रान् धर्मं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः । पछी-

क्षीरोदधिः स्वयंभूथ, सरे पद्ममहाद्रहे । शीता शीतोदका कुण्डे, जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥१॥

गङ्गे च यमुने चैव, गोदावरि सरस्वति । कावेरि नर्मदे सिन्धो, जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥ २ ॥

प्रतिष्ठादि
विधिओ।

॥ १० ॥

ए प्रमाणे श्लोको कही अंकुश मुद्राए जल खेंवुं.

त्यारवाद ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय सं सं क्लीं क्लीं ब्रुं ब्रुं
द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ह्रीं जलदेवीदेवा अत्र आगच्छत आगच्छत स्वाहा ।

ए पाठ त्रण वार बोली कूर्ममुद्राए अथवा मत्स्यमुद्राए जल स्थापवुं. पछी 'ॐ ह्रीं क्लीं ब्रुं जल-
चंदनपुष्पाक्षतफलनैवेद्यदीपधूपं समर्पयामि'

एम् बोली वलीदानरूपे पुष्प नालियेर अथवा बीजा फलो वि. पाणीमां पधराववा. ते वखते ॐ आं ह्रीं
क्रौं जलदेवि ! पूजावलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा । ए पाठ बोलवो ।

पछी ४ अथवा ८ कलशो भरवा तथा त्यां लाडु वि. नैवेद्य सूकवां. पछी नीचेनो पाठ बोलवो.

ॐ ह्रीं ऋषभाजितसंभवाभिनंदनसुमतिपद्मप्रभसुपार्श्वचन्द्रप्रभसुविधिशीतलश्रेयांसवासुपूज्यविमलानन्तधर्मशान्ति-
कुंथ्वरमल्लिमुनिमुत्रतनमिनेमिपार्श्ववर्द्धमानादितीर्थकराः परमदेवाः तदधिष्ठायकाः देवाः शान्तिं पुष्टिं ऋद्धिं वृद्धिं
जयमङ्गलं कुरु कुरु पां पां वां वां नमः स्वाहा ।

ए रीते कलशो भरी चन्दन पुष्पथी सुशोभित करी धवल मङ्गल अने वार्जित्रना नाद पूर्वक कुमारिका
अथवा सौभाग्यवती स्त्रीओ पासे लेवडावी चैत्य अथवा घरमां प्रदक्षिणा दइने पवित्र स्थाने पधरावी मंगल
गीत तथा वार्जित्रनो घोष करवो ।

॥ इति जलयात्रा विधि ॥

॥ १० ॥

प्रतिष्ठादि
विधिभो।
॥ ११ ॥

त्यारंवाद १०८ तीर्थजलथी कलश भरी नीचेना पृथ्वी मन्त्रथी स्थापन करवो.

ॐ ह्राँ भूः स्वाहा, ॐ ह्रीँ भूमिः स्वाहा, ॐ ह्रूं भुवः स्वाहा, ॐ ह्रौँ पृथिवी स्वाहा, ॐ ह्रः वसुमती स्वाहा.

पछी क्षेत्रपाल स्थापना मन्त्र बोलवो.

ॐ क्षाँ क्षीँ क्षुँ क्षैँ क्षौँ क्षः क्षेत्रपालाय नमः स्वाहा.

पछी क्षेत्रपाल पूजननो मन्त्र बोलवो.

ॐ ह्रीँ क्षाँ क्षेत्रपालं गन्धाक्षतजलपुष्पतैलसिन्दूरैः दीपधूपोषैः पूजयामि । पछी ॐ ह्रीँ दिक्पालाय नमः ॐ ह्रीँ नवग्रहेभ्यो नमः ।

ए मन्त्र बोलने नीचेना श्लोकथी भूताने दशे दिशामां बलिदान आपवुं.

उपसर्पन्तु ये भूता, ये भूता भूमिसंस्थिताः । ये भूता विघ्नकर्तार-स्ते नश्यन्तु जिनाज्ञया ॥ १ ॥

पछी 'ॐ ह्रीँ अवतर अवतर सोमे सोमे कुरु कुरु बल्लु बल्लु निवल्लु निवल्लु सुमणे सोमणसे महु महुरे ॐ कवल्लि कः क्षः स्वाहा' ए मन्त्रथी मीढळ नाडाछडी आदि मन्त्रीने जमणे हाथे, कलशे, निम्बे देवालये अने घेर मंगल माटे बांधवा.

पछी ॐ ह्रीँ अर्हद्भ्यो नमः, ॐ ह्रीँ सिद्धेभ्यो नमः ॐ ह्रीँ आचार्येभ्यो नमः, ॐ ह्रीँ उपाध्यायेभ्यो नमः ॐ ह्रीँ सर्वसाधुभ्यो नमः, ॐ ह्रीँ सम्यग्दर्शनेभ्यो नमः, ॐ ह्रीँ सम्यग्ज्ञानेभ्यो नमः, ॐ ह्रीँ सम्यक्-

प्रतिष्ठादि
विधिओ।
॥ १२ ॥

चारित्र्येभ्यो नमः ॐ ह्रीं सम्यक्तपोभ्यो नमः । आ मंगल पाठ बोली + मूलमन्त्र पूर्वक मंगल कलश
स्थापन करवो.

पछी वांस ८ अने शराकला ८ मां जवारा वाववा ॥

॥ इति प्रथम दिन विधिः ॥

—: कुंभस्थापनना दिवसनो विधि :—

प्रथम नहावाना पाणीनो मन्त्र कही पाणी मन्त्रवुं. पछी शरीरे आमळा, पीठी, कंकोडी चोळी नहावुं.
पछी वस्त्र पहेरवां. केसर मन्त्री तिलक करवुं. नाडुं अने मीढळ वांधवा पछी भूमि शुद्ध करवी पछी वासचोखा
फुल मन्त्रित करवा. पछी कुंभने गेवासूत्र वांधवुं. कुंभ उपर मन्त्र लखवो. “ॐ ह्रीं श्रीं सर्वोपद्रवं नाशय नाशय
स्वाहा.” कुंभमां चंदननो साथियो कराववो रु. १) तथा पंचरत्ननी पोटली नं. १ तथा सोपारी नं. ५
ब्रह्मचर्यवाळा पुरुषनी पासे मूकाववा. जो ब्रह्मचर्यवाळो पुरुष न मळे तो तेने ब्रह्मचर्यनी वाधा कराववी
पछी कुवानुं थोडुं पाणी लई तथा वीजुं शुद्ध पाणी लई अखंडधाराथी शुभ मुहूर्ते घडो
भराववो [निर्विघ्ने] थाळी वेलण साथे. पछी घडा उपर पान श्रीफळ, वस्त्र, मीढळ, मरडासींग वांधी,
फुलनो हार पहेराववो पछी ज्यां स्थापवो होय त्यां चंदरवो प्रथम वंधाववो. पछी घडो भरनार वहेन पासे
कंकुनो साथियो कराववो तेना उपर डांगरनो साथियो करावी सोपारी मूकाववी पछी ऋण प्रदक्षिणा देवराववी

+ मूलमन्त्र पहेलां आवी गयेलं छे ।

॥ १२ ॥

प्रतिष्ठादि
विधिओ।
॥ १३ ॥

ते घडो मन्त्र कहीने स्थापवो, पछी गुरु पासे मन्त्र कही वासक्षेप कराववां. प्रभुनी जमणी वाजु कुम्भ स्थापवो. तांवाना कोडियामां साथीयो करावी रुपियो १ तथा पंचरत्ननी पोटली नंग-१ तथा सोपारी मूकाववी तेमज १०८ तारनी दीवेट पण मूकाववी पछी घीनो मन्त्र कही घीनी वाढीथी घी अखंडधाराथी पुराववुं ने दीपनो मन्त्र कही दीप प्रगटाववो. पछीथी अंदर माटीनुं खामणुं करावी तेना पर दीपने स्थापन करवो उपर फानस ढांकवुं. गुरु पासे वासक्षेप पण कराववो पछी सरावलां नंग ४ जवाराना भराववां दरेक सरावलां पर कंकु सोपारी तथा पैसो चढाववो, कंकुना छांटा नंखाववा. अडायानो भूको, माटी, जार, जव, घउं, सरसव अने डांगर मेळवी जवारा ववडाववा ते घडानी चारे खूणे मूकाववा पछी वेन पासे गहुंली कराववी-[कुंभ पासे पाटळो मूकी कंकुनो साथीयो, चोखा, श्रीफल तथा सोपारी मूकाववी.] पछीथी स्मरण +सात गणाववां त्रण टंक हंमेश गणवां. पछीथी स्नात्र भणावी अष्टप्रकारी पूजा करी आरती मंगल दीवो उतारवो. कुंभस्थापनना मुहूर्तनी जो वार होय तो स्नात्र पहेळुं भणावी शकाय.

अखंडधाराथी घी पुराववानो मन्त्र :-

ॐ घृतमायुर्बुद्धिकरं, भवतु परं जिन[गु]दृष्टिसंपर्कात् । तत्संयुक्तः प्रदीपः, पातु सदा भावदुःखेभ्यः स्वाहा ॥

दीप प्रगटावतां बोलवानो मन्त्र :-

+सात स्मरण—सवारे तथा वपोरे नवकार, उवसग्ग०, संतिकरं, तिजयपहुत्त, अजितशांति, भक्तामर अने वृहच्छान्ति । सांजे—उपर प्रमाणेज पण तिजयपहुत्त ने वदले नमिऊण ।

॥ १३ ॥

प्रतिष्ठादि
विधियो।
॥ १४ ॥

ॐ अर्हं पञ्चज्ञान-ज्योतिर्मयोऽयं ध्वांतघातने । द्योतनाय प्रतिमाया, दीपो भूयात् सदाहृतः ॥

कुंभ स्थापवानो मन्त्र वार ७ :- “ॐ ह्रीं ठः ठः ठः स्वाहा” ॥

पंचरत्ननी पोटली मूकवानो मन्त्र :-

ॐ ह्रीं श्रीं नानारत्नौघयुतं, सुगंधपुष्पाधिवासितं नीरम् ।

पत्तात् विचित्रवर्णं, मन्त्राढ्यं स्थापनाविम्बे स्वाहा ॥

(३) सोनावानीनो मन्त्र वार ७ नवकार साथे:- “ॐ ह्रीं श्रीं जीरावलीपार्श्वनाथ ! रक्षां कुरु कुरु
स्वाहा” ।

—: १प्रतिष्ठाने लगतो कार्यक्रम :-

सुगंधि जळथी प्रतिष्ठानी भूमिनुं सिंचन करवुं, पुष्पनी वृष्टि करवी, धूप करवो, प्रतिष्ठामंडपने यक्ष-
कर्दमथी लिंपवो, वेदिकामां स्वस्तिकादिक करवां. चित्रविचित्र वस्त्रोना चंद्रना वांधवा. शुभ मुहूर्ते प्रतिष्ठाना
स्थाने नवीन विम्बोने लावी सिंहासन उपर पूर्व अगर उत्तर सन्मुख स्थापवां तथा चारे दिशाभोमां श्वेत १२
वरघडां मूकवां, चार जवारिया अने आठ शरावलां भरवां. विम्बनी हथेलीमां-प्रियंगु, कपूर अने गोरोचंदन
मूकवुं, पंचरत्ननी पोटली विम्बनी आंगलीये वांधवी.

१ प्रतिष्ठामां जोइता उपकरणोनी यादी परिशिष्ट नं. २ मांथी जोइ लेवी.

प्रतिष्ठादि
विधौ।
॥ १५ ॥

—: अथ द्वितीयदिनविधिः नन्दावर्तपूजनः—

प्रथमं नन्दावर्तनुं आलेखनः— नन्दावर्तनो पट तैयार मले तो ठीक नहिं तो नीचे प्रमाणे आलेखन करवुं.
कपूर केसर अने सुखड विगेरे सात लेपनथी लिप्त करेला श्रीपर्ण (सेवन)ना पाटला उपर अगर सुशोभित
वस्त्रना पट उपर मध्यभागथी सूत्रभ्रमण करवा पूर्वक आठ वलय करवां तेमां १पहेला वलयमां:—

अष्टगंधथी नवखुणी प्रदक्षिणाए 'नन्दावर्त' आलेखवो. तेना मध्यभागमां जिनप्रतिमाने स्थापवी अथवा
चिन्तववी अने तेनी जमणी वाजुए 'इन्द्र (शक्र)' अने 'श्रुतदेवता' अने डावी वाजुए ईशानेन्द्र अने शान्ति-
देवतानुं आलेखन करवुं.

त्रीजा वलयमां :-आठे दिशाओमां अनुक्रमे नीचे प्रमाणे लखवुं :-

१ ॐ नमोऽर्हद्भ्यः २ ॐ नमः सिद्धेभ्यः ३ ॐ नम आचार्येभ्यः ४ ॐ नम उपाध्यायेभ्यः
५ ॐ नमः सर्वसाधुभ्यः ६ ॐ नमो ज्ञानेभ्यः ७ ॐ नमो दर्शनेभ्यः ८ ॐ नमश्चारित्र्येभ्यः ।

त्रीजा वलयमां-चोवीश पत्रो आलेखवां तेमां चोवीश तर्थां करोनी माताओना- मंत्राक्षरो सहित नामो
लखवा ते आ प्रमाणे:-

१ आचारदिनकर, प्रया ने सामाचारीमां शान्तिदेवताने स्थापन करवानुं नथी लखेल ने श्रुतदेवताने इन्द्रनी
नीचे स्थापवानुं लख्युं छे.

२ सर्वत्र स्वाहा इति पदं चिन्मयप्रवेशेऽधिकं दिनकरेऽपि ।

श्री गुरुतराष्ट्रीय
ज्ञान मन्दिर, जयपुर

॥ १५ ॥

प्रतिष्ठादि
विधिओ।
॥ १६ ॥

१ ॐ मरुदेवाए + नमः २ ॐ विजयाए नमः ३ ॐ सेणाए नमः ४ ॐ सिद्धत्याए नमः
५ ॐ मंगलाए नमः ६ ॐ सुसीमाए नमः ७ ॐ पुहवीए नमः ८ ॐ लक्ष्णाए नमः ९ ॐ
रामाए नमः १० ॐ नंदाए नमः ११ ॐ विष्णुए नमः १२ ॐ जयाए नमः १३ ॐ सामाए नमः
१४ ॐ सुजसाए नमः १५ ॐ सुञ्जयाए नमः १६ ॐ अचिराए नमः १७ ॐ सिरीए नमः १८ ॐ देवीए नमः
१९ ॐ पभावईए नमः २० ॐ पउमावईए नमः २१ ॐ वप्पाए नमः २२ ॐ सिवाए नमः २३ ॐ वामाए नमः
२४ ॐ तिसलाए नमः ।

पवी रीतना उच्चारपूर्वक चोवीसे जिनेश्वरनी माताओनी पूजा करवीः—

चोथा वलयमां :- आठे दिशाओमां वे वे गृह करवां अने तेमां १६ विद्यादेवीओना मन्त्र लखवा ते
आ प्रमाणेः—

२१ ॐ नमो रोहिण्यै ३सां त्मां स्वाहा २ ॐ प्रज्ञप्त्यै रां क्षां स्वाहा ३ ॐ वज्रशृङ्गायै ४लीं स्वाहा
४ ॐ वज्राङ्कुशायै ५ल्मां वां स्वाहा ५ ॐ अप्रतिचक्रायै ६क्ष्मां स्वाहा ६ ॐ पुरुपदत्तायै ७ल्मां वां स्वाहा

+ वधे आवतो नमः शब्द पूजाना अर्थमां छे मात्र प्रणामार्थक नथी ।

१ स्वाहा इति पदं सर्वत्र विम्बप्रवेशे-दिनकरेऽपि ।

२ ॐ रोहिणीय स्वां त्मां स्वाहा इत्यादि प्राकृतमां नामो प्रपामां मतमतान्तर तरीके गणावेल छे.

३ स्वां ४ लां-ईं ५ क्ष्मां ६ हं ७ सां

॥ १६ ॥

प्रतिष्ठादि
विधियो।

॥ १७ ॥

७ ॐ काल्यै १साँ हे स्वाहा ८ ॐ महाकाल्यै ॐ २क्ष्मीं स्वाहा ९ ॐ गार्ग्यै पुँजुः [ह्र] स्वाहा १० ॐ गान्धार्यै ३रं
४क्ष्मीं स्वाहा ११ ॐ सर्वासामहाज्वालायै लृं ५हां स्वाहा १२ ॐ मानव्यै ६वूं क्ष्मां स्वाहा १३ ॐ वैरुट्यायै
ह्रं मां स्वाहा १४ ॐ अच्छुप्त्यायै यूं नां स्वाहा १५ ॐ मानस्यै ७.लुं मां स्वाहा १६ ॐ महामानस्यै ८हं
९सं स्वाहा.

पांचमा वलयमां २४ भवन वनावी लोकान्तिकादि देवोना मन्त्रो आलेखवा ते नीचे प्रमाणे:-

१ ॐ सारस्वतेभ्यः स्वाहा २ ॐ आदित्येभ्यः स्वाहा ३ ॐ वह्न्येभ्यः स्वाहा ४ ॐ १०वरुणेभ्यः
स्वाहा ५ ॐ गर्दतोयेभ्यः स्वाहा ६ ॐ तुषितेभ्यः स्वाहा ७ ॐ अन्यावाधेभ्यः स्वाहा ८ ॐ अरिष्टेभ्यः स्वाहा
९ ॐ अग्न्याभेभ्यः स्वाहा १० ॐ सूर्याभेभ्यः स्वाहा ११ ॐ चन्द्राभेभ्यः स्वाहा १२ ॐ सत्याभेभ्यः स्वाहा
१३ ॐ श्रेयस्करेभ्यः स्वाहा १४ ॐ क्षेमंकरेभ्यः स्वाहा १५ ॐ वृषभेभ्यः स्वाहा १६ ॐ कामचारेभ्यः स्वाहा
१७ ॐ निर्वाणेभ्यः स्वाहा १८ ॐ दिशान्तरक्षितेभ्यः स्वाहा १९ ॐ आत्मरक्षितेभ्यः स्वाहा २० ॐ सर्वरक्षितेभ्यः
स्वाहा २१ ॐ मारुतेभ्यः स्वाहा २२ ॐ वसुभ्यः स्वाहा २३ ॐ अश्वेभ्यः स्वाहा २४ ॐ विश्वेभ्यः स्वाहा ।

ए रीते चोवीस धरोमां चोवीस मन्त्रो आलेखवा:-

छद्दा वलयमां:-आठेय दिशाओमां नीचेना मन्त्रो आलेखवा:-

१ सां २ क्ष्मीं ३ रां ४ क्ष्मां ५ मां ६ यूं ७ ह्रं ८ ह्रं ९ सुं
१० अग्ने नम इत्यधिकं सर्वत्र विम्बप्रवेशे ।

॥ १७ ॥

प्रतिष्ठादि
विधिओ।
॥ १८ ॥

१ १ ॐ सौधर्मादीन्द्रादिभ्यः स्वाहा २ ॐ तद्देवीभ्यः स्वाहा ३ ॐ चन्द्रादीन्द्रादिभ्यः स्वाहा ४ ॐ तद्देवीभ्यः
स्वाहा ५ ॐ चमरादीन्द्रादिभ्यः स्वाहा ६ ॐ तद्देवीभ्यः स्वाहा ७ ॐ किन्नरादीन्द्रादिभ्यः स्वाहा ८ ॐ तद्देवीभ्यः स्वाहा।

सातमा वलयमां आठे दिशाओमां नीचेना मन्त्राक्षरो आलेखवाः-

१ ॐ इन्द्राय स्वाहा २ ॐ अग्नये स्वाहा ३ ॐ यमाय स्वाहा ४ ॐ नैऋतये स्वाहा ५ ॐ वरुणाय
स्वाहा ६ ॐ वायवे स्वाहा ७ ॐ कुबेराय स्वाहा ८ ॐ ईशानाय स्वाहा।

आठमां वलयमां नीचेना आठ मन्त्रो आलेखवाः-

१ ॐ रआदित्येभ्यः स्वाहा २ ॐ सोमेभ्यः स्वाहा ३ ॐ मंगलेभ्यः स्वाहा ४ ॐ बुधेभ्यः स्वाहा
५ ॐ बृहस्पतिभ्यः स्वाहा ६ ॐ शुक्रेभ्यः स्वाहा ७ ॐ शनैश्वरेभ्यः स्वाहा ८ ॐ राहुकेतुभ्यः स्वाहा।
उपर प्रमाणेनां आठे वलयोनी बहार चार द्वारवाळा तथा श्रीशान्ति, भूति, बल अने आरोग्य नामनां
तोरणो सहित तेमज वर्धमान, गज, सिंह अने ध्वजो सहित त्रणं प्राकार (किल्लाओ) आलेखवा तेमांना-

पहेला प्राकारनां पूर्वादिक द्वारोमां:-अनुक्रमे १ चर्म, २ दंड, ३ पाश अने ४ गदायुक्त हाथवाळा अनुक्रमे
१ सोम, २ यम, ३ वरुण अने ४ कुबेर नामना द्वारपाळोने आलेखवा ।
बीजा प्राकारना पूर्वादि द्वारोमां—१ जया, २ विजया, ३ अजिता अने ४ अपराजिता नामनी द्वार-
पालिकाओने आलेखवी।

१ नम इत्यधिकम् अग्रे. २ सूर्याय, इत्याद्येकवचनं सर्वत्र निम्नप्रवेशे।

॥ १८ ॥

त्रीजा प्राकारना पूर्वादि द्वारोमां—हाथमां लाकडीवाला तुंबरुने आलेखवा. पछी पहेला गोल वप्रमां—
आग्नेयादि विदिशाओमां त्रण त्रण एम वार सभाओमां अनुक्रमे १ साधु, २ साध्वी, ३ वैमानिकदेवी ।
४ भवनपतिदेवी, ५ व्यंतरदेवी, ६ ज्योतिष्कदेवी । ७ भवनपतिदेव, ८ व्यंतरदेव, ९ ज्योतिष्कदेव । १० वैमा-
निकदेव, ११ मनुष्य अने १२ मनुष्यनी स्त्री आम वार पर्यदा आलेखवी.

वीजा प्राकारमां—तिर्यंचो आलेखवा. त्रीजा प्राकारमां—देव अने मनुष्यांनां वाहन विगेरे आलेखवुं.
प्राकारोना चारे दरवाजे वंने वाजुपर कमलवनोथी शोभित वावो आलेखवी.

१पछी वज्रना चिह्नवालुं इन्द्रपुर आलेखीने दिशाओमां “परविद्या क्षः फुट्ट” अने विदिशाओमां “पर-
मन्त्राः क्षः फुट्ट” एम-आलेखवुं.

चारं २दुणामां चार पूर्णकलशो आलेखी तेनी वठार-वायुभवन आलेखवुं.

इति नंदावर्तनी आलेखन विधि ।

नंदावर्त पूजन विधिः—प्रथम जिननुं परमेष्ठी मुद्राए आह्वान करी ‘ॐ जिनाय नमः’ कही पूजन करवुं.

नंदावर्तः उपर कुसुमांजलि प्रक्षेप करवी, ते वखते बोलवानो श्लोकः—

कर्त्याणवल्लीकन्दाय, कृतानन्दाय साधुषु । सदा शुभविवर्ताय, नन्दावर्ताय ते नमः ॥१॥

१ ल-क्षनुं चिह्न दरेक खुणामां करवुं—इति विम्बप्रवेशे.

२ प्रपामां पूजनमां पण स्वाहा यतावेल छे.

प्रतिष्ठादि
विधिओ।
॥ २० ॥

पहेला वलयमां:-जिननी स्थापना करी तेमनी वास अने कपूर विगेरेथी पूजा करवी, पछी तेमनी दक्षिण भागमां रहेला इन्द्र शुक्र अने श्रुतदेवतानी पूजा करवी पछी तेमना उत्तर भागमां रहेला ईशानेन्द्र अने शान्ति- देवतानी पूजा करवी.

बीजा वलयनुं पूजन:-नीचे आपेला पाठपूर्वक अनुक्रमे आठ पदनुं पूजन करवुं:-
१ ॐ १ नमोऽर्हद्भ्यः २ ॐ नमः सिद्धेभ्यः ३ ॐ नम आचार्येभ्यः ४ ॐ नम उपाध्यायेभ्यः

५ ॐ नमः सर्वसाधुभ्यः ६ ॐ नमो दर्शनेभ्यः ७ ॐ नमो ज्ञानेभ्यः ८ ॐ नमश्चारित्र्येभ्यः ।
त्रीजा वलयनुं पूजन:- २४ तीर्थकरनी माताओनुं पूजन नीचेना मन्त्राक्षरोथी करवुं.

१ ॐ मरुदेवाए +नमः २ ॐ विजयाए नमः ३ ॐ सेणाए नमः ४ ॐ सिद्धत्थाए नमः ५ ॐ मंगलाए नमः ६ ॐ सुसीमाए नमः ७ ॐ पुहवीए नमः ८ ॐ लक्ष्मणाए नमः ९ ॐ रामाए नमः १० ॐ नंदाए नमः ११ ॐ विष्णुए नमः १२ ॐ जयाए नमः १३ ॐ सामाए नमः १४ ॐ सुजसाए नमः १५ ॐ सुव्वयाए नमः १६ ॐ अचिराए नमः १७ ॐ सिरीए नमः १८ ॐ देवीए नमः १९ ॐ पभावईए नमः २० ॐ पउमावईए नमः २१ ॐ वष्पाए नमः २२ ॐ सिवाए नमः २३ ॐ वामाए नमः २४ ॐ तिसलाए नमः ।

चोथा वलयनुं पूजन:-नीचेना मन्त्रोच्चारपूर्वक सोल विद्यादेवीओनुं पूजन करवुं:-

१ चारे खुणामां देवोनी चार निकायना नामो प्रणव नमः स्वाहा पूर्वक लखवा-इति त्रिवप्रवेशे.
+ अहिं सर्व जग्याए नमः शब्द पूजाना अर्थमां हे मात्र प्रणामना अर्थमां नथी.

प्रतिष्ठादि
विधिभो।
॥ २१ ॥

१ ॐ रोहिणीए नमः २ ॐ पद्मतीए नमः ३ ॐ वज्रसिखलाए नमः ४ ॐ वज्रकुसीए नमः ५ ॐ
अपडिचकाए नमः ६ ॐ पुरिसदत्ताए नमः ७ ॐ कालीए नमः ८ ॐ महाकालीए नमः ९ ॐ गोरीए नमः
१० ॐ गंधारीए नमः ११ ॐ सव्वत्थमहाजालाए नमः १२ ॐ माणवीए नमः १३ ॐ वेरुटाए नमः १४ ॐ
अच्छुत्ताए नमः १५ ॐ माणसीए नमः १६ ॐ महामाणसीए नमः ।

पांचमा वलयनुं पूजन नीचेना मन्त्राक्षरोथी करवुं:-

१ ॐ सारस्वतेभ्यो नमः २ ॐ आदित्येभ्यो नमः ३ ॐ वह्निभ्यो नमः ४ ॐ वरुणेभ्यो नमः
५ ॐ गर्दतोयेभ्यो नमः ६ ॐ तुषितेभ्यो नमः ७ ॐ अव्यावाधेभ्यो नमः ८ ॐ अग्न्याभेभ्यो नमः
९ ॐ अरिण्टेभ्यो नमः १० ॐ सूर्याभेभ्यो नमः ११ ॐ चन्द्राभेभ्यो नमः १२ ॐ सत्याभेभ्यो नमः
१३ ॐ श्रेयस्करेभ्यो नमः १४ ॐ क्षेमंकरेभ्यो नमः १५ ॐ धृपभेभ्यो नमः १६ ॐ कामचारेभ्यो नमः
१७ ॐ निर्वाणेभ्यो नमः १८ ॐ दिशान्तरक्षितेभ्यो नमः १९ ॐ आत्मरक्षितेभ्यो नमः २० ॐ सर्वरक्षितेभ्यो
नमः २१ ॐ मरुतेभ्यो नमः २२ ॐ वसुभ्यो नमः २३ ॐ अश्वेभ्यो नमः २४ ॐ विश्वेभ्यो नमः ।

छद्दा वलयनुं पूजन नीचेना पाठपूर्वक करवुं:-

१ ॐ सौधर्मादीन्द्रादिभ्यो नमः २ ॐ तद्देवीभ्यो नमः ३ ॐ चन्द्रादीन्द्रादिभ्यो नमः ४ ॐ तद्देवीभ्यो
नमः ५ ॐ चमरादीन्द्रादिभ्यो नमः ६ ॐ तद्देवीभ्यो नमः ७ ॐ किन्नरादीन्द्रादिभ्यो नमः ८ ॐ तद्देवीभ्यो नमः ।
पञ्जी सातमा वलयनुं पूजन नीचेना पाठथी करवुं.

श्री सरस्वती
नमः नन्दिर, अय्युर

॥ २१ ॥

प्रतिष्ठादि
विधिओ।
॥ २२ ॥

१ ॐ इन्द्राय नमः २ ॐ आग्नेयाय नमः ३ ॐ यमाय नमः ४ ॐ नैऋताय नमः ५ ॐ वरुणाय नमः ६ ॐ वायवे नमः ७ ॐ कुबेराय नमः ८ ॐ ईशानाय नमः ।

आठमा वलयनुं पूजन नीचेना पाठथी करवुं:-

१ ॐ आदित्येभ्यो नमः २ ॐ सोमेभ्यो नमः ३ ॐ मंगलेभ्यो नमः ४ ॐ बुधेभ्यो नमः ५ ॐ बृहस्पतिभ्यो नमः ६ ॐ शुक्रेभ्यो नमः ७ ॐ शनैश्वरेभ्यो नमः ८ ॐ राहुकेतुभ्यो नमः ।

पछी बहार रहेला ऋण प्राकारोमांना पहेला प्राकारमां—अग्निखुणामां १ साधु २ साध्वी ३ वैमानिक देवीनुं—‘ॐ गणधरादिपरिपत्त्रिकाय नमः’ आ मन्त्रथी, नैऋत्यखुणामां ४ भवनपतिदेवी ५ व्यंतरदेवी ६ ज्योतिष्क- देवीनुं ‘ॐ भवनपत्यादिदेवीत्रिकाय नमः’ मन्त्रथी, वायव्यखुणामां ७ भवनपतिदेव ८ व्यंतरदेव ९ ज्योतिष्कदेवनुं ‘ॐ भवनपत्यादिदेवपरिपत्त्रिकाय नमः’ मन्त्रथी अने ईशानखुणामां १० वैमानिकदेव ११ मनुष्य १२ मनुष्यनी स्त्रीनुं ‘ॐ वैमानिकदेवादिपरिपत्त्रिकाय नमः’ मन्त्रथी पूजन करवुं.

बीजा प्राकारमां—तिर्यंचोनुं अने त्रीजा प्राकारमां वाहनोनुं वासक्षेपथी पूजन करवुं (मंत्र नथी) पछी— पहेला वप्रमां—‘ॐ सोमाय नमः’ इत्यादि मंत्रोथी १ सोम २ यम ३ वरुण अने ४ कुबेर नामना द्वारपालोनुं पूजन करवुं.

बीजा वप्रमां— ॐ जयायै नमः इत्यादि मंत्रोथी १ जया २ विजया ३ अजिता अने ४ अपराजिता नामनी द्वारपालिकाओनुं पूजन करवुं.

प्रतिष्ठादि
विधिओ।
॥ २३ ॥

श्रीजा वप्रमां—चार तुम्बरुनी 'ॐ तुम्बरवे नमः' मंत्रथी अने चार तोरणोनी 'ॐ शान्ति ॐ भूति
ॐ बल ॐ आरोग्य तोरणेभ्यो नमः' मंत्रथी पूजन करवुं.

पछी- १ धर्म २ मात्र ३ गज अने ४ सिंह आ चार ध्वजोनी 'ॐ धर्मध्वजाय नमः' इत्यादि मंत्रोथी
दिशाओमां—'परविद्याः क्षः फुट्'नी तथा विदिशाओमां 'परमंत्राः क्षः फुट्'नी तेमज इन्द्रादि सर्वनी पूजा करवी.
'ॐ पृथ्वीमण्डलाय नमः'थी इन्द्रपुरनी 'ॐ पूर्णकलशाय नमः' थी चार पूर्णकलशोनी 'ॐ वायुमण्डलाय नमः'थी
वायुभवननी पूजा करवी.

इति नंदावर्तपूजनविधिः ।

पछी त्यां पांच प्रकारनां पकाम्न मूकवां. दिशाओ अने विदिशाओमां बलिवाकुला उछाळवा. तयारवाद
चैत्यवंदन करवुं. [मूलनायकनु] पछी श्रुतदेवता आराधनार्थं काउ० करुं ?.....करेमि काउस्सग्गं वंदण० कहां
१ नव० काउ० पारी नमो० कही नीचेनी स्तुति बोलवी.

वद वदति न वाग्वादिनि, भगवति कः श्रुतसरस्वति गमेच्छुः । रंगतरंगमतिवर-तरणिस्तुभ्यं नम इतीह ॥

पछी श्री शान्तिनाथ आराधनार्थं करेमि काउस्सग्गं वंदण० कही नव० काउ० करी पारी नमो० कही-
शान्तिः शान्तिकरः श्रीमान्, शान्तिं दिशतु मे गुरुः । शान्तिरेव सदा तेषां, येषां शान्तिगृहे गृहे ॥२॥

ए थोय कहेवी. पछी क्षेत्रदेवता आराधनार्थं क० का० अन्नत्थ कही एक नवकारनो काउ० करी पारी नमो० कही-

प्रतिष्ठादि
विधौ।

॥ २६ ॥

सदा वह्निदिशो नेता, पावको मेपवाहनः । संवस्य शान्तये सोऽस्तु, वलिपूजां प्रयच्छतः ॥

आवाहन मन्त्रः— ॐ ह्रीं रं रां रुं रैं रौं रः अग्नि संवौपट् ।

ॐ नमो भगवते आग्नेयदिवपालाधीश महाज्वाल ज्वालाकराधीश, ॐ अग्निमूर्त्तये, शक्तिहस्ताय
मेपवाहनाय, सायुधाय, सपरिच्छदाय, ^{इह} अमुकनगरे, अमुकगृहे जिनेन्द्रप्रतिष्ठामहोत्सवे आगच्छ आगच्छ,
पूजां गृह्ण गृह्ण, पूजायामवतिष्ठ स्वाहा ।

पूजननो मन्त्रः— ॐ ह्रीं अग्नये नमः ।

३ यम दिक्पालनो पूजनविधिः—

आवाहन श्लोकः—

दक्षिणस्यां दिशि स्वामी, यमो महिपवाहनः । संवस्य शान्तये सोऽस्तु, वलिपूजां प्रयच्छतः ॥

आवाहन मन्त्रः— ॐ क्षुं हुं हौं क्षः यम संवौपट् ।

ॐ नमो भगवते, यमाय, महिपवाहनाय, दक्षिणदिग्दलासनाय, महाकालदण्डरूपधारिणे, कृष्णमूर्त्तये, सायुधाय
सपरिच्छदाय ^{इह} अमुकनगरे, अमुकगृहे जिनेन्द्रप्रतिष्ठामहोत्सवे आगच्छ आगच्छ, पूजां गृह्ण गृह्ण पूजायामवतिष्ठ
स्वाहा ।

पूजन मन्त्र— ॐ ह्रीं यमाय नमः ।

४ नैऋत दिक्पालनो पूजनविधिः—

आवाहन श्लोकः—

॥ २६ ॥

प्रतिष्ठादि
विधिओ।
॥ २७ ॥

यमापरान्तरालोऽसौ, नैऋतः शववाहनः । संघस्य शान्तये सोऽस्तु, वलिपूजां प्रयच्छतः ॥

आहान मन्त्रः-ॐ ग्लौं हों नैऋत संवोपद्र ।

ॐ नमो भगवते नैऋताय तिशित्तिनिष्टतिमदाराक्षसमूर्ताय खड्गहस्ताय शववाहनाय सवाह० सायु० सपरि०
इह अमुक० अमुक० जिनेन्द्रप्र० अत्र आगच्छ आगच्छ, पूजां गृह्ण गृह्ण पूजायामवतिष्ठ स्वाहा ।

पूजन मन्त्रः-ॐ ह्रीं नैऋतये नमः ।

५ वरुण दिक्पालनो पूजनविधिः-

आहान श्लोकः-

यः प्रतीचीदिशो नाथो, वरुणो मकरस्थितः । संघस्य शान्तये सोऽस्तु, वलिपूजां प्रयच्छतः ॥

आहान मन्त्रः- ॐ श्लौं हों वरुण संवोपद्र ।

ॐ नमो भगवते वरुणाय, पश्चिमदिग्दलाधीश्वराय, पाशहस्ताय, मकरवाहनाय, परशुहस्ताय, सवाह०
सपरि० इह अमुक० अमुक० जिनेन्द्रप्र० आगच्छ आगच्छ, पूजां गृह्ण गृह्ण पूजायामवतिष्ठ स्वाहा ।

पूजन मन्त्रः-ॐ ह्रीं वरुणाय नमः ।

६ वायुदिक्पालनो पूजनविधिः-

आहान श्लोकः-

हरिणो वाहनं यस्य, वायव्याधिपतिर्मरुत् । संघस्य शान्तये सोऽस्तु, वलिपूजां प्रयच्छतः ॥

॥ २७ ॥

प्रतिष्ठादि
विधिओ।
॥ २८ ॥

आह्वान मन्त्रः- ॐ क्लौं हो वायु संवौपद् ।

ॐ नमो भगवते वायव्याधिपतये, त्रिभुवनव्यापकमूर्त्तये, जगज्जीवनाय, ध्वजहस्ताय, मृगवाहनाय सायु०
सपरि० इह अमुक० अमुक० जिनेन्द्रप्र० आगच्छ आगच्छ, पूजां गृह्ण गृह्ण पूजायामवतिष्ठ स्वाहा ।

पूजन मन्त्रः- ॐ ह्रीं वायवे नमः ।

७ कुबेर दिक्पालनो पूजनविधिः-

आह्वान श्लोकः-

निधाननवकारूढ, उत्तरस्यां दिशि प्रभुः । संघस्य शान्तये सोऽस्तु, बलिपूजां प्रयच्छतः ॥

आह्वान मन्त्रः- ॐ क्लौं हो कुबेर संवौपद् ।

ॐ नमो भगवते धनदाय नरवाहनाय नवनिधिकराय, उत्तरदिग्दलासनाय गदायुधाय निधानमूर्त्तये, सायु०
सपरि० इह अमुक० अमुक० जिनेन्द्रप्र० आगच्छ आगच्छ, पूजां गृह्ण गृह्ण पूजायामवतिष्ठ स्वाहा ।

पूजन मन्त्रः- ॐ ह्रीं कुबेराय नमः ।

८ ईशान दिक्पालनो पूजनविधिः-

आह्वान श्लोकः-

सिते वृषेऽधिरूढश्च, ऐशान्याश्च दिशो विभुः । संघस्य शान्तये सोऽस्तु, बलिपूजां प्रयच्छतः ॥

आह्वान मन्त्रः- ॐ हाँ हुँ हो हः ईशान संवौपद् ।

ॐ नमो भगवते, ईशानाधिपतये, वृषाधिरूढाय, त्रिशूलहस्ताय, सवाह० सायु० सपरि० इह अमुक० अमुक०

॥ २८ ॥

प्रतिष्ठादि
विधिओ।
॥ २९ ॥

जिनेन्द्रप्र० आगच्छ आगच्छ पूजां गृह्ण गृह्ण पूजायामवतिष्ठ स्वाहा ।

पूजनमन्त्रः—ॐ ह्रीं ईशानाय नमः ।

९ नागलोक दिक्पालनो पूजनविधिः—

आह्वान श्लोकः—

पातालाधिपतियोऽस्ति, सर्वदा पद्मवाहनः । संघस्य शान्तये सोऽस्तु, वलिपूजां प्रयच्छतः ॥

आह्वान मन्त्रः—ॐ आँ ह्रीं क्रोँ ऐँ ह्यौँ पद्मावतीसङ्घिताय धरणेन्द्र संवोषट् ।

ॐ नमो भगवते पद्मावतीधरणेन्द्राय, पातालाधिपतये, पद्मवाहनाय, समस्तफणावलिभास्कर-रत्नावलिभूषिताय,
नवकुलनागलोकध्वन्दपरिवृताय सपरि० इह० अमुक० अमुक० जिनेन्द्रप्र० आगच्छ आगच्छ, पूजां गृह्ण गृह्ण,
पूजायामवतिष्ठ स्वाहा ।
जैवः

१० ब्रह्मलोक दिक्पालनो पूजनविधिः—

आह्वान श्लोकः—

ब्रह्मलोकविभुर्यस्तु, राजहंससमाश्रितः । संघस्य शान्तये सोऽस्तु, वलिपूजां प्रयच्छतः ॥

आह्वान मन्त्रः—ॐ ह्रीं ह्रूं व्रूं (चन्द्रः ?) ब्रह्म संवोषट् ।

ॐ नमो भगवते ब्रह्मदेवलोके अप्रतिहतये, कृतस्थितये, परमानन्दिने, देवमूर्तये ऊर्ध्वलोकाधिष्ठायकाय, राजहंस-
वाहनाय, सायु० सपरि० इह० अमुक० अमुक० जिनेन्द्रप्र० आगच्छ आगच्छ, पूजां गृह्ण गृह्ण, पूजायामवतिष्ठ स्वाहा ।
जैवः

श्री सरस्वतीय
म.न.म.दि.र. प.प.प.

॥ २९ ॥

प्रतिष्ठादि
विधिओ।

॥ ३० ॥

पूजन मन्त्रः—ॐ ह्रीं ब्रह्मणे नमः ।

उपर प्रमाणे दिक्पालनुं पूजन करी वलि बाकुल नाखवा.

नीचेनो मन्त्र बोली सफेद धजा चढाववी.

मन्त्रः—ॐ ह्रीं इन्द्रादयो दिक्पाला स्वस्वदिशि विघ्नशान्तिकरा भगवदाज्ञायां सावधाना भवन्तु स्वाहा ।

इति दिक्पालपूजनविधिः

पछी नीचेना मन्त्रथी भैरवनुं पूजन करवुं. मन्त्रः—ॐ ह्रीं क्षां क्षः भैरवाय नमः ।

पछी सोळ विद्यादेवीओनुं नीचेनी विधिथी पूजन करवुं.

“रोहिणी प्रथमा ताम्रु, प्रज्ञप्तिर्वज्रशृङ्खला । वज्राङ्कुशाऽप्रतिचक्रा, समं पुरुषदत्तया ॥१॥

काली तथा महाकाली, गौरी गान्धार्यथापरा । ज्वालामालिनी मानवी, वैरोढ्या चाच्युता (चाच्छुप्ता) मता ॥२॥

मानसी महामान—स्येतास्ता देवता मताः । अभिषेकोत्सवे जैने, यथास्थानमनिन्दिताः ॥३॥

ए प्रमाणे श्लोको बोली आह्वान करवुं,

आह्वान मन्त्रः—

“ॐ ऐं क्लीं ह्रीं आं क्रौं षोडशमहादेव्यो, हंसगजकमलनरसिंहवाहनाय, छत्रचामरधराय, सायु०
सवाह० सपरि० इह अमुक० अमुक० जिनेन्द्रप्र० आगच्छ आगच्छ पूजां गृह्ण गृह्ण पूजायामवतिष्ठ स्वाहा ।

पछी नीचेना मन्त्रथी पूजा करवीः—

॥ ३० ॥

“ॐ ह्रीं षोडशमहादेवीभ्यो नमः ”

पछी श्रावके बीजा सेवनना पाटला उपर ग्रहमण्डल करवुं अने तेमां ग्रहोनी स्थापना करवी. तेनी रचना अने उपकरणो माटे जुओ परिशिष्ट नं. ४

इति विद्यादेवी पूजनविधिः ।

नवग्रहपूजन विधिः-

१ सूर्यपूजनः-

आह्वानश्लोकः-

सूर्यो द्वादशरूपेण, माठरादिभिरावृतः । अशुभोऽपि शुभस्तेषां, सर्वदा भास्करो ग्रहः ॥

मन्त्रः-“ॐ ह्रीं आदित्य, पद्मप्रभजिनशासनवासिन् ! श्रीसूर्याय, सहस्रकिरणाय, गज-घृषभ-सिंह-तुरगवाहनाय, रक्तवर्णाय, दिव्यरूपाय, धृतिरूपाय, सायुधाय, सवाहनाय, सपरिच्छदाय, इह अमुकनगरे, अमुकगृहे, जिनेन्द्र-प्रतिष्ठामहोत्सवे, आगच्छ आगच्छ, पूजां गृह्ण गृह्ण, पूजायामवतिष्ठ स्वाहा”

पूजनमन्त्रः- ॐ सूर्याय नमः

२ चन्द्रपूजनः-

आह्वानश्लोकः-

अत्रिनेत्रसमुद्भूत-भीरसागरसंभवः । जातो यवनदेशे तु, चित्रायां समदृष्टिकः ॥

प्रतिष्ठादि
विधिओ।

॥ ३१ ॥

॥ ३१ ॥

प्रतिष्ठादि
विधिओ।
॥ ३२ ॥

आह्वान मन्त्रः-

ॐ ह्रीं चन्द्र चन्द्रप्रभजिनशासनवासिन् प्रतीचीदिग्दलोद्भूत ! अक्षमालाकमलाम्बुपाणये, अमृतात्मने, श्रीसोमाय,
धवलघृतिकराय, मृगवाहनाय, सायु० सपरि० इह अमुक० अमुक० जिनेन्द्रप्र० आगच्छ आगच्छ, पूजां
गृह्ण गृह्ण, पूजायामवतिष्ठ स्वाहा" ।

पूजन मन्त्र :- ॐ सोमाय नमः ।

३ मङ्गल पूजन :-

आह्वानश्लोक :-

सर्वदा वासुपूज्यस्य, नाम्ना शान्तिकरो भवेत् । रक्षां कुरु धरापूत्र !, अशुभोऽपि शुभोऽपि वा ॥

आह्वान मन्त्र :-

"ॐ ह्रीं भौम श्रीवासुपूज्यजिनशासनवासिन् वारुणदिग्दलासिने, रक्तप्रभाक्षसूत्रवलयकुण्डिकालंकृते, श्रीभौमाय,
गजवाहनाय, सायु० सपरि० इह अमुक० अमुक० जिनेन्द्रप्र० आगच्छ आगच्छ, पूजां गृह्ण गृह्ण, पूजायामवतिष्ठ
स्वाहा" ।

पूजन मन्त्र :- ॐ भौमाय नमः ।

४ बुधपूजन :-

आह्वानश्लोक :-

कर्केटिरूपरुपाद्यैः, धूपपुष्पानुलेपनैः । दग्धान्नैर्वरनारिगै-स्तर्पितः सोमनन्दनः ॥

आह्वान मन्त्र :-

ॐ ह्रीं बुध शान्तिजिनशासनवासिन् ! ह्रीं [?]पूर्वोत्तरदिग्दलासिने, हेमप्रभाक्षकमण्डलुव्यप्रप्राणये ॐ बुधाय
केसरिवाहनाय, गदाधराय, सवाह० सायु० सपरि० इह अमुक० अमुक० जिनेन्द्रप्र० आगच्छ आगच्छ, पूजां
गृह्ण गृह्ण, पूजायामवतिष्ठ स्वाहा ।
जंवे

पूजन मन्त्रः-ॐ बुधाय नमः ।

५ गुरुपूजन :-

आह्वानश्लोक :-

उत्तराफाल्गुनीजातः, सिन्धुदेशसमुद्भवः । दध्यन्नमातुलिङ्गैश्च, तृष्टः पुष्पैर्विलेपनैः ॥

आह्वान मन्त्रः-

ॐ ह्रीं बृहस्पते श्रीआदिनाथजिनशासनवासिन् ! उत्तरदिग्दलासिने, पीतद्युत्यक्षत्रकुण्डिकायुतपाणये ॐ
त्रिदशाचार्यबृहस्पतये, पुस्तकहस्ताय हंसगरुडवाहनाय, सायु० सवाह० सपरि० इह अमुक० अमुक० जिनेन्द्रप्र०
भागच्छ आगच्छ, पूजां गृह्ण गृह्ण पूजायामवतिष्ठ स्वाहा ।

पूजन मन्त्रः-ॐ बृहस्पतये नमः ।

६ शुक्रपूजन :-

प्रतिष्ठादि
विधौ ।
॥ ३४ ॥

आह्वानश्लोक :-

शुक्रश्चेतमहापन्नं, षोडशार्चिकटाक्षदृक् । सुगन्धचन्दनालेपैः, श्वेतपुष्पैश्च धूपनैः ॥

आह्वान मंत्र :-

ॐ ह्रीं शुक्र श्रीसुविधिजिनशासनवासिन् ! पूर्वदिग्दलासिने, धवलवर्णाक्षसूत्रकमण्डलुपाणये, असुरमन्त्रिणे,
ॐ शुक्राय शूकरवाहनाय, सायु० सवाह० सपरि० इह अमुक० अमुक० जिनेन्द्रप्र० आगच्छ आगच्छ, पूजां,
गृह्ण गृह्ण पूजायामवतिष्ठ स्वाहा ।
जंद्रुद्वीपै

पूजन मन्त्र :- ॐ शुक्राय नमः ।

७ शनैश्चरपूजन :-

आह्वानश्लोक :-

नीलपत्रिकया प्रीति-स्तैलेन कृतलेपनम् । उत्पत्तिः काच-कांसार-पद्मगुलो मेपवाहनः ॥

आह्वान मंत्र :- ॐ ह्रीं क्रौ शने श्रीमुनिमुव्रतजिनशासनवासिन् ! अपरदिग्दलासिने, श्याममूर्त्तये, श्रीशनैश्चराय,
मेपवाहनाय, सायु० सवाह० सपरि० इह अमुक० अमुक० जिनेन्द्रप्र० आगच्छ आगच्छ पूजां गृह्ण गृह्ण
पूजायामवतिष्ठ स्वाहा । पूजन मन्त्र :- ॐ शनैश्चराय नमः ।
जंद्रु

८ राहूपूजन :-

आह्वानश्लोक :-

प्रतिष्ठादि
विधिभो ।
॥ ३५ ॥

संजातो बन्धरे कूले, मुधूपैः कृष्णलेपनैः । तिलपुष्पैर्नालिकेरै-स्तिलमापैस्तु तर्पितः ॥

आदान मंत्रः-ॐ ह्रीं राहो श्रीनेमिजिनशासनवासिन् ! दक्षिण(परा)दिग्दलासिने, अतिकृष्णवर्णपाण्यवहित्थ-
मुद्रमहातमस्वभावात्मने श्रीराहवे सवाह० सपरि० इह अमुक० अमुक० जिनेन्द्रप्र० आगच्छ आगच्छ पूजां गृह
गृह, पूजायामवतिष्ठ स्वाहा ।
जंशुद्धीच

पूजन मन्त्रः- ॐ राहवे नमः ।

९ केतुपूजन :-

आदानश्लोक :-

राहुः सप्तमराशिस्थः, कारणे दृश्यतेऽम्बरे । दाडिमस्य विचित्रान्नै-स्तृप्यते चित्रपूजया ॥

आदान मन्त्रः-ॐ ह्रीं केतो श्रीपार्थजिनशासनवासिन् ! अपरोत्तरदिग्दलासिने, धूमवर्णाक्षसूत्रकुण्डिकालङ्कृत-
पाणिद्वयानेकस्वभावात्मने, श्रीकेतवे, सवाह० सायु० सपरि० इह अमुक० अमुक० जिनेन्द्रप्र० आगच्छ आगच्छ,
पूजां गृह गृह, पूजायामवतिष्ठ स्वाहा ।

पूजन मन्त्रः-ॐ केतवे नमः ।

पछी " जगद्गुरुं नमस्कृत्य" इत्यादि नवेय ग्रहो माटे ग्रहशान्तिस्तोत्र बोल्युं.

पछी नीचेनुं काव्य तथा मंत्र बोली वली वाकुला उडाववा.

जिनेन्द्रभक्त्या जिनभक्तिभाजां, जुपन्तु पूजावलिपुष्पधूपान् ।

ग्रहा गता ये प्रतिकूलतां च, सदानुकूला वरदा भवन्तु ॥

॥ ३५ ॥

प्रतिष्ठादि
विधिओ।

॥ ३६ ॥

अहीं पंचवर्णनी नवे ग्रहोनी नव नवकारवाळी गणवी पळी शान्तिजिनेश्वरनो कलश कहेवो ।

॥ इति तृतीयदिन विधिः ॥

॥ अथ चतुर्थदिन विधिः ॥

पहेळां नीचेना मन्त्रोथी अनुक्रमे क्षेत्रपाल, दिक्पाल, ग्रह अने शासनदेवीनुं पूजन करवुं.

क्षेत्रपाल पूजनमन्त्रः-ॐ क्षाँ क्षीँ ध्रुँ क्षैँ क्षौँ क्षः अर्हं जिनशासनवासिन् क्षेत्रपालाय नमः ।

दिक्पालपूजन मन्त्र :-ॐ ह्रीँ दिक्पालाय नमः ।

ग्रहपूजन मन्त्र :- ॐ ह्रीँ ग्रहाय नमः ।

जिनशासनदेवीपूजन मन्त्रः-ॐ ऐँ क्लीँ ह्रीँ भगवते, श्रीजिनशासनेश्वरीचतुर्विंशतिशासनदेव्यः-चक्रेश्वरी-

अम्बिका-पद्मावती-सिद्धायिकाद्या देव्यः सिंहपद्मवाहनाय, खड्गहस्ताय, सायु० सवाह० सपरि० इह अमुक० अमुक०

जिनेन्द्रप्र० आगच्छ आगच्छ, पूजां गृह्ण गृह्ण पूजायामवतिष्ठन्तु स्वाहा । पळी इन्द्रपूजा करवी.

इन्द्रपूजानो विधिः-

ॐ ह्राँ ह्रीँ हुँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः अर्हं ह्रुँ ह्रुँ इन्द्राः श्रीसौधर्मादिचतुःपष्टिः, सायुधाय सवाहनाय सपरिच्छदाय
इह अमुकनगरे, अमुकगृहे, जिनेन्द्रप्रतिष्ठामहोत्सवे आगच्छ, आगच्छ, पूजायामवतिष्ठन्तु स्वाहा ।

ए मन्त्र बोली-जल-चंदन-पुष्प-धूप-दीप विगेरेथी पूजन करवुं.

पळी नीचेनो मन्त्र बोलवो :-

॥ ३६ ॥

“भो भो इन्द्रा ! विघ्नप्रशान्तिकरा भगवदाज्ञया सावधाना भवन्तु स्वाहा”

पछी नीचेना मन्त्रशी भूतोने आपवानो वलि मंत्री दशे दिशाओमां-धूप-दीप-चंदन-पुष्प-जल-वास-लापसी वाकुला-पुडला-वडां-विगेरे सहित वलिवाकुला जिनगृहनी बहार उडाडवा.

मन्त्रः-ॐ नमो अरिहंताणं, ॐ नमो सिद्धाणं, ॐ नमो आयरियाणं, ॐ नमो उवज्जायाणं ॐ नमो लोए सव्वसाहूणं, ॐ नमो आगासगामीणं, ॐ नमो चारणाइलद्धीणं । जे इमे किन्नर-किंपुरिस-महोरग-गरुल-सिद्ध-गंधव्व-जंक्ख-रक्खस-पिसाय-भूय-साइणि-डाइणिपभिइओ जिणघरनिवासिणो नियनियनिलयटियापवि-चारिणो सन्निहििया असन्निहििया ते सव्वे इमे विलेवण-धूव-पुष्फ-फल-पईव-सणाहं वलि पडिच्छंता संतिकरा भवन्तु तुट्टिकरा भवन्तु, पुट्टिकरा भवन्तु सव्वत्थ रक्खं कुणंतु, सव्वत्थ दूरियाणि नासंतु, सव्वासिवमुवसमंतु, संति-तुट्टि-पुट्टि-सुत्थयणकारिणो भवन्तु स्वाहा ।

पछी नीचे प्रमाणेना मन्त्रोपूर्वक अइन्यास करवोः-

बोलवानो मन्त्र

- १ “ॐ नमः सिद्धम्”
- २ “ॐ आँ ह्रीँ क्रौँ वद वंद वाग्वादिनि अर्हन्मुखकमल-निवासिनि नमः”
- ३ “ॐ ह्रीँ ह्रीँ ह्रः अर्हं नमः”

न्यास करवा माटेनुं अइ

मस्तकपरं

मुखपरं

हृदयपरं

प्रतिष्ठादि
विधियो ।
॥ ३८ ॥

- बोलवानो मन्त्र
- ४ "ॐ ह्रीं सर्वसाधुभ्यो नमः"
 - ५ "ॐ ह्रीं असिआउसा नमः"
 - ६ ॐ ह्रीं धर्माय नमः
 - ७ ॐ नमो अरिहंताणं
 - ८ ॐ नमो सिद्धाणं
 - ९ ॐ नमो आयरियाणं
 - १० ॐ नमो उवज्जायाणं
 - ११ ॐ नमो लोए सव्वसाहूणं
 - १२ ॐ नमो धम्माणं

न्यास करवा माटेनुं अङ्ग

- नाभिपर
पगे
शरीरपर
हृदयपर
मस्तकपर
शिखापर
नाभिपर
पगपर
शरीरपर

उपर प्रमाणे अङ्गन्यास कर्या पछी करन्यास करवो ते आ प्रमाणे :-

-: करन्यास विधि :-

बोलवाना मन्त्रो :-

- १ ॐ नमो अरिहंताणं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः
- २ ॐ नमो सिद्धाणं तर्जनीभ्यां नमः

-: न्यासस्थान :-

- बंने अंगुष्ठापर
,, तर्जनी आंगलीओ पर

प्रतिष्ठादि
विधियो।
॥ ३९ ॥

बोलवानो मन्त्र

- ३ ॐ नमो आयरियाणं मध्यमाभ्यां नमः
४ ॐ नमो उवज्झायाणं अनामिकाभ्यां नमः
५ ॐ नमो लोए सव्वसाहूणं कनिष्ठिकाभ्यां नमः
६ ॐ नमो आगासगामीणं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः

न्यासस्थान

- वंने मध्यमा पर
॥ अनामिका ॥
॥ कनिष्ठा ॥
॥ हथेली अने हाथना पाछला भागपर

उपर प्रमाणे करन्यास विधि कर्या वाद सिद्धचक्रपूजन करवुं तेनो विधि:-

आठ पांखडीवाला कमलनो आकार करवो (सिद्धचक्रमंडप भरवो) तेमां नीचे आपेल अनुक्रमे एक श्लोक बोली स्थापना करवी तेमज बीजो श्लोक अने मन्त्र बोली दुष्य, अक्षत, फल, दीप अने धूपधी पूजन करवुं. ते श्लोको अने मन्त्र आ प्रमाणे:-

(१) अरिहंतपद (मध्यभागमां स्थापना करवी)

स्थापना श्लोक:-

अथाष्टदलमध्याब्ज-कर्णिकायां जिनेश्वरान् । आविर्भूतोऽल्लसद्बोधा-नावृतः स्थापयाप्यहं ॥१॥

पूजन श्लोक तथा मन्त्र:-

निःशेषदोषेन्धनधूमकेतू-नपारसंसारसमुद्रकेतून् ।

यजे समस्तातिशयैकहेतून्, श्रीमज्जिनानम्बुजकर्णिकायाम् ॥ २ ॥

स्थापना श्लोक :-

जिनेन्द्रोक्तमतश्रद्धा-लक्षणं दर्शनं यजे । मिथ्यात्वमथनं शुद्धं, न्यस्तमीशानसद्वले ॥१॥

पूजन मन्त्र :- [दर्शनादि चारेमां पूजननो श्लोक बोलवानो नथी मात्र मन्त्र बोलवो]

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनाय नमः स्वाहा ।

[७] ज्ञानपद [अग्निखुणामां स्थापना करवी]

स्थापना श्लोक :-

अशेषद्रव्यपर्याय-रूपमेवावभासकम् । ज्ञानमाग्नेयपत्रस्थं, पूजयामि हितावहम् ॥१॥

पूजन मन्त्र :- ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानाय नमः स्वाहा ।

(८) चारित्रपद (तैर्ऋत्यखुणाना पत्रमां स्थापन करवुं)

स्थापना श्लोक :-

सामायिकादिभिर्भेदै-श्चारित्रं चारु पञ्चधा । संस्थापयामि पूजार्थं, पत्रे हि नैर्ऋते क्रमात् ॥१॥

पूजन मन्त्र :- ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्राय नमः स्वाहा ।

(९) तपपद (वायव्यखुणाना पत्रमां स्थापन करवुं)

स्थापना श्लोक :-

द्विधा द्वादशधा भिन्नं, पूते पत्रे तपः स्वयम् । निधापयामि भक्त्याऽत्र, वायव्यां दिशि शर्मदम् ॥१॥

प्रतिष्ठादि
विधिओ।

॥ ४३ ॥

पूजन मन्त्र :- ॐ ह्रीं सम्यक्तपसे नमः स्वाहा ।

पङ्गी नवेय यदनी स्तुतिरूप नीचेनुं काव्य बोलवुं.

निःस्वेदत्वादिदिव्यातिशयमयतनून् श्रीजिनेन्द्रान्^१ सुसिद्धान्,^२

सम्यक्त्वादिप्रकृष्टा-ष्टगुणभृत इहा-चारसारांश्च स्ररीन्^३ ।

शास्त्राणि प्राणिरक्षा-प्रवचनरचना-मुन्दराण्यादिशन्त-

स्तत्सिद्ध्यै पाठकान्^४ श्री-यतिपतिसहिता^५-नर्चयाम्पर्यदानैः ॥१॥

पङ्गी " ॐ ह्रीं पंचपरमेष्ठिभ्यः सम्यक्दर्शनादिचतुरन्वितेभ्यो नमः स्वाहा "

ए मन्त्र बोली-चंदन, पुष्प, फल, धूप, दीप, नैवेद्य आदिथी पूजन करवुं, रत्नो मृकवां. पङ्गी पहेलां प्रतिष्ठित करेल प्रतिमानी आगल स्नात्रकारक श्रावकोए-कुसुमांजलि, जन्माभिषेक तथा कलश कहेवा पूर्वक स्नात्र करवुं, पङ्गी नमस्कार अने चैत्यवंदन तेमज आठ थोपनुं देववंदन करवुं.

॥ इति चतुर्थदिन विधिः ॥

॥ अथ पंचमदिनविधिः ॥

वीशस्थानक पूजनः-

शरुआतमां नीचेना मन्त्र बोली शान्तिघोषणाना १० श्लोको बोलवा :-

हालमां स्नात्र पहेलां कराय डे माटे आरती करी देवचन्दन करवुं.

॥ ४३ ॥

प्रतिष्ठादि
विधियो।
॥ ४४ ॥

ॐ क्षाँ क्षेत्रपालाय नमः ॐ ह्रीँ दिक्पालेभ्यो नमः ॐ ह्रीँ ग्रहेभ्यो नमः

ॐ ह्रीँ षोडशमहादेवीभ्यो नमः ॐ ह्रीँ जिनशासनदेवीदेवेभ्यो नमः ।

रोगशोकादिभिर्दोषै-रजिताय जितारये । नमः श्रीशान्तये तस्मै, विहितानन्तशान्तये ॥१॥

श्री शान्तिजिनभक्ताय, भव्याय सुखसम्बद्धम् । श्रीशान्तिदेवता देया-दशान्तिमपनीय ते ॥२॥

अम्बा निहितडिम्भा मे, सिद्धबुद्धसमन्विता । सिते सिंहे स्थिता गौरी, वितनोतु समीहितम् ॥३॥

धराधिपतिपत्नी या, देवी पद्मावती सदा । क्षुद्रोपद्रवतः सा मां, पातु फुल्लत्फणावली ॥४॥

चञ्चचक्रधरा चारु-प्रवालदलदीधितिः । चिरं चक्रेश्वरी देवी, नन्दतादवताच्च माम् ॥५॥

खड्गखेटककोदण्ड-वाणपाणिस्तडिद्द्युतिः । तुरङ्गमनाच्छ्रुता, कल्याणानि करोतु मे ॥६॥

मथुरापुरीसुपार्थ - (श्री)सुपार्थस्तूपरक्षिका । श्रीकुबेरा नारूढा, सुतांकाऽवतु वो भयात् ॥७॥

ब्रह्मशान्तिः स मां पाया-दपायाद्वीरसेवकः । श्रीमत्सत्यपुरे सत्या, येन कीर्त्तिः कृता निजा ॥८॥

श्रीशक्रप्रमुखा यक्षा, जिनशासनसंस्थिताः । देवदेव्यस्तदन्येऽपि, सङ्घं रक्षन्त्वपायतः ॥९॥

श्रीमद्विमानमारूढा, यक्षमातङ्गसंगता । सा मां सिध्दायिका पातु, चक्रचापेपुधारिणी ॥१०॥

पछी “चत्तारि मङ्गल” इत्यादि नमस्कार पाठ कहेवो. पछी “वज्रपंजर” स्तोत्र कहेवुं.

पछी श्रावके बीजा पट्टे उपर कुंकुम अने चंदनथी वीश स्थानक (खानां) करवां, पछी अनुक्रमे नीचे आपेला

२० मंत्रोथी वीशे स्थानकोनुं चन्दन, पत्र, पुष्प, फल, सोपारीना टुकडा तथा अक्षतथी पूजन करवुं.

प्रतिष्ठादि
विधिः।
॥ ४५ ॥

वीश स्थानक मंत्राः-

- | | | | | | |
|----|------------------------------|----|---------------------------|----|---------------------------|
| १ | ॐ ह्रीं नमो अरिहंताणं । | २ | ॐ ह्रीं नमो सिद्धाणं । | ३ | ॐ ह्रीं नमो पवयणस्स । |
| ४ | ॐ ह्रीं नमो आयरियाणं । | ५ | ॐ ह्रीं नमो उवज्झायाणं । | ६ | ॐ ह्रीं नमो धेराणं । |
| ७ | ॐ ह्रीं नमो लोए सव्वसाहूणं । | ८ | ॐ ह्रीं नमो नाणस्स । | ९ | ॐ ह्रीं नमो दंसणस्स । |
| १० | ॐ ह्रीं नमो विणयस्स । | ११ | ॐ ह्रीं नमो चरित्तस्स । | १२ | ॐ ह्रीं नमो वंभवयधारीणं । |
| १३ | ॐ ह्रीं नमो किरियाणं । | १४ | ॐ ह्रीं नमो तवस्स । | १५ | ॐ ह्रीं नमो गोयमस्स । |
| १६ | ॐ ह्रीं नमो जिणाणं । | १७ | ॐ ह्रीं नमो चरित्तधरस्स । | १८ | ॐ ह्रीं नमो नाणधरस्स । |
| १९ | ॐ ह्रीं नमो सुयधरस्स । | २० | ॐ ह्रीं नमो तित्थस्स । | | |

(हाल्मां स्नात्र पहेलां कराय छे एटले आरती करी देववंदन करवुं)

पछी उत्तम पुष्प, गंध, अक्षत, प्रदीप, फल, धूप, जल अने पत्रधी श्रीजिनेश्वरप्रभुनी अष्टप्रकारी पूजा करवी। पछी श्रीआदिनाथजीनो कलश बोल्वापूर्वक स्नात्र करवुं । पछी चैत्यवंदन करी आठ थोयनुं देववंदन करवुं अने वीशे स्थानकना नामोच्चारणपूर्वक वीशे नमस्कार गणवा अने नैवेद्य मूफवुं ॥ इति वीशस्थानरूपजनविधिः ॥

॥ इति पंचमदिनविधिः ॥

॥ अथ षष्ठदिनविधिः ॥ (च्यवनकल्याणकविधिः)

ॐ क्लौं ल्लौं स्वां लां धां क्षेत्रपालाय नमः । ॐ दिक्पालेभ्यो नमः । ॐ ग्रहेभ्यो नमः । ॐ ह्रीं षोडश-

॥ ४५ ॥

प्रतिष्ठादि
विधिओ।
॥ ४६ ॥

महादेवीभ्यो नमः । ॐ ह्रीं जिनशासनदेवीदेवेभ्यो नमः । ए मन्त्रोनो उच्चार करी प्रतिष्ठाकारकनी नीचेनी
विधिण इन्द्र तरीकेनी कल्पना करवी।

सद्दृष्टेः प्रविकल्पिताऽतिविशदप्राग्भाभाभासुर - ज्ञानस्यापि विकल्पजालजयिनश्चारित्रतत्त्वस्य च ।

यत्पूर्वैः परिकल्पितं जिनमहे रत्नत्रयाराधकं, चिह्नं तन्निदधे महेशकलितं यज्ञोपवीतं परम् ॥१॥

ए काव्य बोली प्रतिष्ठा करावनारे “सोनानी सांकली” पहेरवी । पत्नी—

रत्नप्ररोहैरुचिरैर्यदुत्थै - राकासमङ्गीकृतभं विभाति ।

तच्छेखरं शेषविधेयविज्ञो, मौल्यं मयूखाढ्यमहं दधामि ॥२॥

ए काव्य बोली “मुकुट अने तिलक” धारण करवुं ।

दिव्यं दिव्यैरत्नजालैरनेकै-नैद्रं धुन्वन्ध्वान्तमन्तः स्फुरद्भिः ।

हेमं हेम्ना निर्मितं विश्वपाणौ, पुण्यं पुण्यैः कङ्कणं स्वीकरोमि ॥३॥

ए काव्य बोली “कङ्कण” पहेरवुं ।

प्रद्योतयन्ती निखिलं स्वकान्त्या, प्रकोष्ठमङ्गद्युतिराजिरम्या ।

मुद्रेव जैनी वरमुद्रिकाभा-मलं करोत्वद्गुलीपर्वमूले ॥४॥

ए काव्य बोली “मुद्रिका” पहेरवी तेमज

केयूरहाराङ्गदकुण्डलानि, प्रालम्बसूत्रं कटिकम्बिमुद्रिके ।

शस्त्री च पट्टं मुकुटं च मेखला, ग्रैवेयकं नूपुरकर्णपूरम् ॥५॥

॥ ४६ ॥

आ काव्य बोली केपूर, हार, कडां, कुंडल विगेरे सोले प्रकारनां आभूषणो प्रतिष्ठा करावनारे पहेरवां. पछी
“ॐ ह्रीं अर्हं ह्रूं हुं इन्द्रं परिकल्पयामि स्वाहा” ए मन्त्र बोलवो अने वासक्षेप मन्त्री प्रतिष्ठा करावनारना
मस्तकपर नाखवो. -

॥ इति इन्द्रस्थापनविधिः ॥

॥ अथ इन्द्राणीस्थापनविधिः ॥

“ ॐ आँ ह्रीं क्रौं एं ह्रीं सौं इन्द्राणीं परिकल्पयामि स्वाहा”

ए मन्त्रथी वासक्षेप मन्त्री प्रतिष्ठा करावनारनी भार्याना मस्तक उपर नाखवो ।

॥ इति इन्द्राणीस्थापनविधिः ॥

पछी “ॐ ह्रीं नमो भगवती विश्वव्यापिनी ह्रौं ह्रीं ह्रूं ह्रूं ह्रौं ह्रः सिंहासने स्वस्तिकं पूरयामि
स्वाहा ।

ए मन्त्र बोली इन्द्र इन्द्राणी पासे धवलगीत साथे वेदिका उपर पांच स्वस्तिक कराववा ।

पछी नीचे आपेला मन्त्रोथी ते ते अंगो पर न्यास करवो—

मन्त्रो

न्यास करवानां अंगो

१ ॐ ह्रीं नमो अरिहंताणं ह्रौं शीर्षं रक्ष रक्ष स्वाहा

मस्तकपर

२ ॐ ह्रीं नमो सिद्धाणं ह्रीं वदनं ” ” ”

मुखपर

प्रतिष्ठादि
विधिओ ।
॥ ४८ ॥

मन्त्रो

३	ॐ ह्रीं नमो आयरियाणं ह्रूं हृदयं	” ” ”
४	ॐ ह्रीं नमो उवज्जायाणं ह्रूं नाभिं	” ” ”
५	ॐ ह्रीं नमो लोए सव्वसाहूणं ह्रूं पादौ	” ” ”
६	ॐ ह्रीं नमो ज्ञानदर्शनचारित्रतपांसि ह्रूः सर्वाङ्गं रक्ष रक्ष स्वाहा	

न्यास करवानां अंगो

हृदयपर
नाभिपर
बंने पगपर
सर्व अंगपर

॥ इति अंगन्यासविधिः ॥

॥ अथ करन्यासविधिः ॥

— मन्त्रो —

१	ॐ ह्रूं अर्हन्तो अंगुष्ठाभ्यां नमः
२	” ह्रूं सिद्धाः तर्जनीभ्यां ”
३	” ह्रूं आचार्या मध्यमाभ्यां ”
४	” ह्रूं उपाध्याया अनामिकाभ्यां नमः
५	” ह्रूः सर्वसाधवः कनिष्ठिकाभ्यां ”
६	” ह्रूः ह्रूं ह्रूं ह्रूं ह्रूः दर्शनज्ञान- चारित्रतपांसि धर्माः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः

न्यास योग्य हाथना विभागो

अंगुष्ठाओ पर
तर्जनी आंगलीओ पर
वचली ” ”
अनामिका,, ”
टचली ” ”
हाथना उपर तथा नीचेना
भागपर

पछी "ॐ ह्रीं नमो अरिहंताणं ॐ ह्रीं नमो अर्हं नमो हंस नमो हंस नमो हंस गुरुपादुकाभ्यां नमः"
ए मन्त्र बोली गुरुपूजन करवुं.

॥ इति गुरुपूजनविधिः ॥

पछी "ॐ ह्रां ह्रीं नमो अर्हं हंस धर्माचार्याय नमः" एम मन्त्र बोली धर्माचार्यनुं पूजन करवुं.

पछी—“ॐ ह्रां ह्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रः अर्हं परमब्रह्मणे असिआउसा नमो हंस स्वाहा” ए मन्त्र बोली
अरिहंतप्रभुना सिंहासनादिकनी पूजा करवी ।

पछी "ॐ ह्रां ह्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रः अर्हद्भ्यो नमः ॐ ह्रीं नमो अरिहंताणं ह्रीं अर्हते नमः" ए
मन्त्रथी वासक्षेप मंत्रीने नवां विधो पर नाखवो ।

पछी "ॐ परमहंसाय, परमेष्ठिने हंसः हंस हंस हूं हूं ह्रां ह्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रः अर्हते नमः" श्रीजिन-
विम्बं स्थापयामि संवोपट्ट" ए मन्त्रथी पाणी साथे वासक्षेप मन्त्रीने नवीन जिनविम्बपर नाखवो तथा तेनुं सर्व अंगे
विलेपन करवुं. पछी तेनी आगल दूधथी भरेलो सुवर्णकलश स्थापवो. पछी—

मुकृतकरणदक्षः पञ्चमुख्यः समस्तः, सकलदुरितनाशः छिन्नदुष्कर्मपाशः ।

विमलकुलप्रवृद्धैर्देवलोकाच्च्युतः श्री-नियतपदसमृद्धैर्मानुषेऽर्हन् सदा त्वम् ॥१॥

रत्नत्रयालंकरणाय नित्य-मञ्जुशयकायाय निरामयाय ।

निःस्वेदतानिर्मलतायुताय, नमोनमः श्रीपरमेश्वराय ॥२॥

प्रतिष्ठादि
विधिभो ।
॥ ५० ॥

ए वे श्लोक बोली "ॐ ह्रीं ह्रीं हूं हूं ह्रौं ह्रः अर्हं नमः हंस श्रीमदर्हं देवलोकाच्च्युत्वा मानुषत्वेऽवा
तरत्, हंस हंस हंस श्रीपरमेश्वराय नमः स्वाहा" ए मन्त्रोच्चारपूर्वक पूर्वे अप्रतिष्ठित जिनविंशने दूधथी भरेला
सुवर्णकलशमां स्थापवा. ॥ इति च्यवनमन्त्रः ॥

पछी—"ॐ ह्रां ह्रीं क्रौं य र ल व श ष स ह क्षौं हं सः [हंस] अमुष्य प्राणान् इह प्राणे, अमुष्य जीव इह स्थितः
सर्वेन्द्रियाणां वाङ्मनश्चक्षुःश्रोत्रमुखजिह्वाः स्थापय संवोपद् स्वाहा स्वधा" ए मन्त्र बोलीने वासक्षेप नाखवो ।

॥ इति प्राणप्रतिष्ठा ॥

पछी नीचे प्रमाणेना मन्त्रोथी जिनविंशना ते ते अङ्गोपर मातृन्यास करवो.

मन्त्रो	अंगन्यास
"ॐ ह्रीं अर्हं ॐ ह्रीं" मोक्षद्वारे	मस्तकपर
"ॐ ह्रीं अर्हं श्रीं अ आ" ललाटे दक्षिणतः	ललाटपर जमणी वाजुए
"ॐ ह्रीं अर्हं, श्रीं ईई" दक्षिणेतरनेत्रयोः	वन्ने आंखोपर
" " " " उऊ" कर्णयोः	कानोपर
" " " " ऋऋ" नासापुटयोः	नासिकापर
" " " " लृलृ" गल्लयोः	गालोपर
" " " " एऐ" ऊर्ध्वाधोदंतपङ्क्तयोष्ठयोः	उपर नीचे दांत तथा होठोपर

प्रतिष्ठादि
विधौ।
॥ ५१ ॥

		मन्त्रो	
“ॐ ह्रीं अहं”	श्रीं ओं	“ओं”	स्कन्धयोः
” ” ”	”	अंअः”	मस्तके जिह्वारे
” ” ”	”	क ख”	मुखमण्डले
” ” ”	”	ग घ”	कण्ठे
” ” ”	”	ङ”	हनुस्थाने
” ” ”	”	च छ ज झ”	दक्षिणभुजे
” ” ”	”	ञ”	वामभुजे
” ” ”	”	ट ठ ड ढ ण”	दक्षिणकुक्षौ
” ” ”	”	त थ द ध न”	वामकुक्षौ
” ” ”	”	प”	दक्षिणोरो
” ” ”	”	फ”	वामोरो
” ” ”	”	ब”	गुह्ये
” ” ”	”	भ”	नाभिमण्डले
” ” ”	”	म”	स्फिजोः इन्द्रियोभयपार्श्वयोः
” ” ”	”	य”	शरीरस्थाने उदरे

		अगन्यास
खभापर		
माथापर	तथा जीभना	अग्रभाग पर
मुखपर		
कंठपर		
दाढीपर		
जमणा हाथपर		
डावा हाथपर		
जमणी कुरुपर		
डावी कुखपर		
जमणा साथळमां		
डावा साथळमां		
गुह्यस्थानमां		
नाभिपर		
वे कुला उपर तथा इन्द्रियना वन्ने		पडखे
शरीर स्थान ने उदर पर		

॥ ५१ ॥

प्रतिष्ठादि
विधिभो ।
॥ ५२ ॥

मन्त्रो	
“ॐ ह्रीं अर्हं श्रीं रं”	ऊर्ध्वरोमाञ्चे
“ ” ” ” ल”	पृष्ठे
“ ” ” ” व”	ग्रीवाकक्षादिसन्धिषु
“ ” ” ” श”	जानुयुग्मयोः
“ ” ” ” प”	गुल्फमूलयोः
“ ” ” ” स”	पादयोः
“ ” ” ” ह”	हृदये

ए रीते विंशति सर्वा अंगे मातृन्यास करवा.

पछी “ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा, ॐ ह्रीं नमो अरिहंताणं, ॐ ह्रीं नमो अरहंताणं ॐ ह्रीं नमो अरुहंताणं वा, अर्हं नमः स्वाहा, ॐ ह्रीं नमो अरहंताणं, ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अर्हं नमः स्वाहा” ए मन्त्रथी मन्त्रीने प्रभुना मस्तक उपर वासक्षेप नाखवो.

पछी नीचेना मन्त्रथी कानमां उपदेश करीने वासक्षेप मस्तक उपर नाखवो—

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा ह्रीं नमः स्वाहा “इति कर्णौ”, उपदेशमन्त्रः—ॐ ह्रीं परमहंसाय, परमेष्ठिने, परमहंसः ह्रूं ह्रां ह्रीं ह्रौं ह्रः परमेश्वराय परमेष्ठिने नमः स्वाहा”

पछी नीचेनो आशिष मन्त्र बोलवो—

अंगन्यास	
ऊर्ध्वस्थानना रोमांच एटले	मस्तकादना वालीपर
	पीठपर
कंठ तथा कक्षा (काख)	विगेरे सांधाओमां
वन्ने जानु (घुंटाण)	उपर
घुंटाणना मूल [ढांकणी]	पर
वन्ने पग	उपर
	हृदयपर

“ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वद वद वाग्वादिनी भगवती ह्रीं नमः, ॐ नमो अरुहंताणं धातृभ्योऽभीप्सितफलदेभ्यः
स्वाहा ॥”

पत्नी स्वप्नदर्शनने लगता नीचेना बे श्लोको अने मन्त्र बोलवो—

गजो वृषो हरिः साभि-पेकथ्रीः स्रक् शशिरवी । महाध्वजपूर्णकुम्भो, पद्मसरः सरित्पतिः ॥१॥

विमानं रत्नपुञ्जथ, निर्धुमाग्निरिति क्रमात् । ददर्श स्वामिनी स्वप्नान्, मुखे प्रविशतस्तदा ॥२॥

“ॐ ह्रीं स्वामिनीस्वप्नदर्शनमिति स्वाहा.”

* पत्नी स्नात्रकारके चैत्यवंदन करवुं. श्रावकोए कुमुमांजलिपूर्वक श्री पार्श्वजिननो कलश कहेवां.
अष्टप्रकारी पूजा करी आरती करीने पत्नी आठ धोयनुं देववंदन करवुं.

॥ इति च्यवनकल्याणकविधिः ॥

॥ इति षष्ठदिवसविधिः ॥

॥ अथ सप्तमदिनविधिः ॥

“ ॐ नमो अरिहंताणं हृदये” “ॐ नमो सिद्धाणं मस्तके” “ॐ नमो आयरियाणं शिखायां”

“ॐ नमो उवग्नायाणं सन्नाहे” “ॐ नमो लोए सन्वसाहूणं दिव्यास्त्रे”

ए आत्मरक्षाने लगतां पदो बोलवापूर्वक ते ते प्रमाणे हस्तन्यास करवां.

* हालमां स्नात्रपूजा प्रथम भणावाय डे.

प्रतिष्ठादि
विधिभो।
॥ ५४ ॥

पछी नीचेना मन्त्रोथी शुचिकरण करवुं. (सब अंगे त्रणवार स्पर्श करी पवित्र करवां):—

“ॐ नमो अरिहंताणं, ॐ नमो सिद्धाणं, ॐ नमो आयरियाणं, ॐ नमो उवञ्जायाणं, ॐ नमो लोए सव्वसाहूणं, ॐ नमो आगासगामीणं, ॐ नमो इः क्षः अशुचिः शुचीभवामि स्वाहा” ए रीते गुरुए पण स्नात्रीआओने अभिमंत्रित करवा.

पछी “क्षि प ॐ स्वाहा, हा स्वा ॐ प क्षि” ए रीते आरोह [चढवुं] अवरोह [उतरवुं]ना क्रमे पग, नाभि, हृदय, मुख अने भालपर पोतानुं सकलीकरण करवुं.

पछी—“ॐ ह्रीं क्ष्वीं सर्वोपद्रवं विम्बस्य रक्ष रक्ष स्वाहा” ए मन्त्रथी बलिवाकुला मन्त्री प्रतिष्ठास्थानथी जल सहित उडाडवा तेमज धूप, चंदन, पुष्प, अक्षत वि. उछालवां. श्रावकोए दरेक नवीन विंचोपर कुसुमांजलि प्रक्षेप करवो अने नीचेनो श्लोक बोलवो.

अभिनवसुगन्धविकसित—१पुष्पौघवृता २सुगन्धधूपाढ्या ।

विम्बोपरि निपतन्ती, मुखाणि पुष्पाञ्जलिः कुरुताम् ॥

पछी गुरुए बंने बचली आंगलीओ ऊंची करीने नवीन विंचोने रौद्रद्रष्टिथी तर्जनीमुद्रा देखाडवी पछी श्रावकोए डावा हाथमां जल लइने “ज्महां म्लो” ए मन्त्र बोली प्रतिमाने आच्छोटन करवुं.

पछी गुरुए“ॐ ह्रीं क्ष्वीं सर्वोपद्रवं विम्बस्य रक्ष रक्ष स्वाहा” ए मन्त्र भणी विम्बोको द्रष्टिदोष

पाठा० १ भृता २ सुधूपगन्धाढ्या इति प्रपायाम् ॥

॥ ५४ ॥

प्रतिष्ठादि
निधिभो ।
॥ ५५ ॥

निवारवा-वज्रमुद्रा, गरुडमुद्रा तथा हुद्गरमुद्राए करी त्रणवार कवच करयुं तेमज तेज मन्त्रथी दिग्बंधन करयुं.
पछी श्रावकोए-शण, कलथी, राइ, जव, सरसव, कांग तथा अडदनी त्रण मुठीओ विम्बपर नाखवी
तेमज कुलदेवी-अंविकानी पूजा करी नीचेनां वे काव्यो अने मन्त्र भणवो.
संसारद्रुमदावपावकमहाज्वालाकलापोपमं, ध्यानं श्रीमदनन्तबोधकलितं त्रैलोक्यतत्त्वोपमम् ।
श्रीमच्छ्रीजिनराट्प्रसूतिसमयस्नानं मनःपावनं, कुम्भैर्नः शुभसंभवाय गुरभिद्रव्याद्वयवाः पूरितैः ॥१॥
नमस्त्रिलोकीतिलकाय लोका-लोकावलोकैकविलोकनाय ।

सर्वेन्द्रवन्द्याय जितेन्द्रियाय, प्रसूतभद्राय जिनेश्वराय ॥२॥

“ॐ ह्रीं ह्रीं हूं हूं ह्रौं ह्रः अर्हतीर्थकरपरमदेवाय, ह्रीं मातृकुक्षिप्रसवजन्मने, जगज्ज्योतिःकराय, अर्हते
नमः स्वाहा”

पछी छप्पनदिक्कुमारिकाने लगता नीचे प्रमाणेना श्लोको तथा मन्त्रो बोलवा.
(तेमज ते ते दिक्कुमारीओनी रचना करवी)—

उद्योतस्त्रिजगत्यासी-इध्वान दिवि दुन्दुमिः । पट्पञ्चाशद्विकुमार्यः, समागत्याकृत क्रियाम् ॥१॥
कुमार्योऽष्टावधोलोक-वासिन्यः कम्पितासनाः । अर्हज्जन्माववेज्ञात्वा, -ऽभ्येयुस्तत्सूतिवेश्मनि ॥२॥

१ अधोलोकवासिनी आठ दिक्कुमारीओनां नाम-(तेओए आवी प्रभु तथा माताने नमन करी भूमि
तेमज सृतिकागृह शुद्ध करयुं.)

श्री गणेशाय नमः ।
- १ - अर्हते, अर्हते

॥ ५५ ॥

प्रतिष्ठादि
विधिओ।
॥ ५६ ॥

भोगंकरा भोगवती, सुभोगा भोगमालिनी । सुवत्सा वत्समित्रा च, पुष्पमाला त्वनिन्दिता ॥१॥
नत्वा प्रभुं तदम्बां चे-शाने स्रुतिगृहं व्यधुः । संवर्तेनाशोधयन् क्ष्मा-मायोजनमितां गृहात् ॥२॥

“ॐ ह्रीं अष्टावधोलोकवासिन्यो देव्यो योजनमण्डलं स्रुतिकागृहं शोधयन्ति स्वाहा”

२ ऊर्ध्वलोकवासिनी आठ दिक्कुमारीका-(तेओए सुंधी जल तथा पुष्प वरसाववां)

मेघंकरा मेघवती, सुमेघा मेघमालिनी । तोयधारा विचित्रा च, वारिषेणा वलाहका ॥१॥
अष्टोर्ध्वलोकादेत्यैता, नत्वाऽर्हन्तं समातृकम् । तत्र गन्धाम्बुपुष्पौघ-वर्षां हर्षाद्वितेनिरे ॥२॥

“ॐ ह्रीं अष्ट ऊर्ध्वलोकवासिन्यः देव्यः योजनमण्डलं गन्धाम्बुपुष्पौघं वर्षयन्ति स्वाहा”

३ पूर्वरुचकवासिनी आठ दिक्कुमारिका - (तेओए दर्पण वरवा)

अथ नन्दोत्तरा नन्दा, आनन्दानन्दिवर्धने । विजया वैजयन्ती च, जयन्ती चापरार्जिता ॥

“ॐ ह्रीं अष्टौ पूर्वरुचकवासिन्यः देव्यः विलोकनार्थं दर्पणानि अग्रे धरन्ति स्वाहा”

४ दक्षिणरुचकवासिनी आठ दिक्कुमारिका-(तेओए पूर्णकलश लङ् अभिषेक करवा अने गीतगान करवां).

समाहारा सुप्रदत्ता, शुद्धबुद्धा यशोधरा । लक्ष्मीवती शेषवती, चित्रगुप्ता वसुन्धरा ॥

“ॐ ह्रीं अष्टौ दक्षिणरुचकवासिन्यः देव्यः स्नानार्थं करे पूर्णकलशान् धृत्वा अभिषेकं कुर्वन्त, गीतगाने विदधति स्वाहा”

५ पश्चिमरुचकवासिनी आठ दिक्कुमारिका—(तेओए पंखा वींझवा).

इलादेवी^१ सुरादेवी^२, पृथिवी^३ पद्मवत्यपि । एकनासा^४ नवमिका^५, भद्राशीतेति^६ नामतः ॥

“ॐ ह्रीं अष्टौ पश्चिमरुचकवासिन्यः देव्यः वीजनार्थं व्यजनानि वीजयन्ति स्वाहा”

६ उत्तररुचकवासिनी आठ दिक्कुमारिका—(तेओए चामर वींझवा).

अलम्बुया^१ मिश्रकेशी^२, पुण्डरीका^३ च वारुणी^४ । हासा^५ सर्वप्रभा^६ श्री ह्रीं-रष्टोदश्रुचकाद्रितः ॥

“ॐ ह्रीं अष्टौ उत्तररुचकवासिन्यः देव्यः वालव्यजनानि चामराणि वीजयन्ति स्वाहा”

७ चार विदिशाओमां रहेली रुचकवासिनी चार दिक्कुमारिका (दीपकनो प्रकाश आपे).

चित्रा^१ च चित्रकनका^२, सुतारा^३ वसुदामिनी^४ । दीपहस्ता^५ विदिक्ष्वेताः, स्युर्विदिग्रुचकाद्रितः ॥

“ॐ ह्रीं चतस्रो विदिग्रुचकवासिन्यः देव्यः प्रदीपहस्ता उद्योतं कुर्वन्ति स्वाहा”

८ चार रुचकद्वीपवासिनी दिक्कुमारिका (चार आंगलनी नाल छेदी भूमि खोदीने नाखे)

रूपा^१ रूपासिका^२ चापि, मुरूपा^३ रूपकावती^४ । चतुरङ्गुलतो^५ नालं छित्त्वा खातोदरेऽक्षिपन् ॥

“ॐ ह्रीं चतस्रो रुचकद्वीपवासिन्यः चतुरङ्गुलतो नालं छित्त्वा भूखातोदरेऽक्षिपन् स्वाहा”

ए प्रमाणे करी नीचेना मन्त्रो बोलवा—

“ॐ ह्रीं पूर्वोत्तरदक्षिणेषु रम्भागृहत्रयं व्यधुः स्वाहा”

“ॐ राँ रीँ हँ रैँ रौँ रः उत्तरे अरणिकाष्ठाभ्यां अग्निमुत्पाद्य चन्दनाद्यैर्जुहुयात् वषट्”

ए मंत्र बोली अरणिनां लाकडांथी अग्नि उत्पन्न करीने तेमां चंदन विगेरेनो होम करी रक्षा पोटली बांधवी.
पछी अनुक्रमे नीचे प्रमाणेना मंत्रोथी पवित्र १ जलकलश २ चंदन ३ पुष्प अने ४ स्नात्रपुटिका

(धूप)नुं अभिमंत्रण करवुं ते मन्त्रो :—

१ जलमन्त्रः—“ॐ नमो यः सर्वशरीरावस्थिते महाभूते अपः जलं गृह्ण गृह्ण स्वाहा”

२ चंदनमन्त्रः—“ॐ नमो यः सर्वशरीरावस्थिते पृथु पृथु गन्धान् गृह्ण गृह्ण स्वाहा”

३ पुष्पमन्त्रः—“ॐ नमो यः सर्वतो मेदिनी पुष्पवती पुष्पं गृह्ण गृह्ण स्वाहा”

४ धूपमन्त्रः—“ॐ नमो यः सर्वतो बलिं दह दह महाभूते तेजोधिपते धूपं गृह्ण गृह्ण स्वाहा”

पछी दृष्टिदोष निवारण माटे नीचेना मंत्रथी मंत्रित पंचरत्ननी रक्षापोटली नवीन विंवना जमणा हाथनी
आंगलीओमां बांधवी तेमज कंठमां अरीठामाला अने जवमाला नाखवी.

मन्त्रः—“ॐ क्षाँ क्षीँ झ्रीँ स्वाहा”

पछी जलयात्राथी लावेला जलने पवित्र जलकुंडीमां भरी तेमां वास, चंदन, पुष्प आदि नाखी “ ॐ
ह्रीं नमः” ए मंत्रथी जलदर्शन करवुं तथा धूप, दीप, गीत, गान, नाटक विगेरे करवुं.

॥ इति दिक्कुमार्युत्सवः ॥

प्रतिष्ठादि
विधिओ।
॥ ५९ ॥

। अथ इन्द्राणीमहोत्सवः ।

नीचेना श्लोको बोलवा—

श्रीरिन्द्राण्याद्यग्रमहिषी, सामानिकैश्च संसुता । अंगरक्षकदेवीभिः, समागता जिनगृहे ॥१॥

१ तारा २ तिलोत्तमा ३ तारू-४ र्मनोवेगा च ५ मोहिनी । ६ सुन्दरी ७ त्रिपुरा ८ चैव, ९ माना १० मानवती मुदा ॥२॥

-पछी "ॐ नमो जिणाणं, सरणाणं, मंगलाणं, लोमुत्तमाणं ह्रौं हीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः असियाउसा त्रैलो-
क्यललामभूताय अर्हते नमः स्वाहा"

ए मन्त्रथी इन्द्राणीए कुंकुमथी नवीन विंवना भाल उपर तिलक करवुं, पछी इन्द्राणीए गीत, गायन,
नाटक आदि करवुं.

॥ इति इन्द्राणीमहोत्सवः ॥

। अथ इन्द्रमहोत्सवः ।

पहेलां नीचेना श्लोको बोलवा—

ततः सिंहासनं शाक्रं, चचालाचलनिश्चलम् । प्रयुंज्याथावधिं ज्ञात्वा, अर्हजन्माभिपेचनम् ॥१॥

वज्रचेकयोजनां घण्टां, सुघोषां नैगमेपिणा । अवादयत्ततो घण्टा, रेणुः सर्वविमानगाः ॥२॥

प्रवेलुः सुरागुरेन्द्रा, विविधैर्वाहनैर्घनैः । समागत्य जिनाम्वां च, नत्वा रूपं च पञ्चधा ॥३॥

॥ ५९ ॥

प्रतिष्ठादि
विधिओ।
॥ ६० ॥

एको गृहीततीर्थेशः, पार्श्वौ द्वावात्तचामरौ । एको गृहीतातपत्र, एको वज्रधरः पुरः ॥४॥
शक्रः सुमेरुशृङ्गस्थं, गत्वाऽथो पाण्डुकं वनम् । मेरुचूलादक्षिणेना-तिपाण्डुकम्बलासने ॥५॥
अभिषेकोत्सर्वे जैने, चतुःपष्टिः पुरन्दराः । सुमेर्वधिष्ठिते स्थाने, समेयुस्ते यथाक्रमम् ॥६॥

^१चमरेन्द्रो ^२बलीन्द्रश्च, ^३धरणेन्द्रस्तृतीयकः । ^४भूतानेन्द्रश्च ^५वेण्विन्द्रो, ^६वेणुदालिस्तथैव च ॥७॥

^७हरिकान्तो ^८हरिसखः, ^९अग्निसिंहोऽग्निमानवः । ^{१०}पूर्णेन्द्रोऽथ ^{११}विशिष्टश्च, ^{१२}जलकान्तो ^{१३}जलप्रभः ॥८॥

^{१४}अमृतगतिर्भवनेन्द्रो, - ^{१५}ऽमृतवाहननामतः । ^{१६}वेलम्बकः ^{१७}प्रभञ्जनः, ^{१८}घोषमहाघोषकावपि ॥९॥

^{२१}कालेन्द्रोऽथ ^{२२}महाकालः, ^{२३}सुरूपः, ^{२४}प्रतिरूपकः । ^{२५}पूर्णभद्रो ^{२६}माणिभद्रो, ^{२७}भीमो ^{२८}महाभीमनामकः ॥१०॥

^{२९}किन्नरः ^{३०}किंपुरुषेन्द्रः, ^{३१}सत्पुरुषस्तथैव हि । ^{३२}महापुरुषव्यन्तरेन्द्रो, ^{३३}अतिकायश्च तथा परः ॥११॥

^{३४}महाकायो ^{३५}गीतरति-^{३६}गीतयशाश्च षोडश । ^{३७}सन्निहितः ^{३८}समानितः, ^{३९}धाता ^{४०}विधाताथाऽपरः ॥१२॥

^{४१}ऋषीन्द्रश्च ^{४२}ऋषिपाल, ^{४३}ईश्वरमहेश्वरावपि । ^{४४}सं(सु)वत्सो ^{४५}विशालेन्द्रश्च, ^{४६}हासो ^{४७}हासरतिः ^{४८}पुनः ॥१३॥

॥ ६० ॥

प्रतिष्ठादि
विधिभो ।
॥ ६१ ॥

^{५६}श्वेतेन्द्रो ^{५०}महाश्वेतः, ^{५१}पयगपयगपतीश्वरौ । ^{५२}चन्द्रादित्यौ ^{५३}ज्योतिषीन्द्रौ, ^{५४}कल्पेन्द्रा दशधा पुनः ॥१४॥

^{५५}सौधर्मेन्द्र ^{५६}ईशानेन्द्रः, ^{५७}सनत्कुमारपुरन्दरः, । ^{५८}माहेन्द्रो ^{५९}ब्रह्मेन्द्रश्च, ^{६०}लान्तकेन्द्रस्तु वज्रिणः ॥१५॥

^{६१}शुक्रेन्द्रश्च ^{६२}सहस्रारः, ^{६३}आनतप्राणताभिधः । ^{६४}आरणाच्युतशक्रश्च, इतीन्द्राः चतुःपष्टिका ॥१६॥

एवी रीतना श्लोको भणीने

“ॐ ह्रीं क्षुं हुं सौधर्मेन्द्रादिचतुःपष्टिरिन्द्रा अस्मिन् प्रतिष्ठामहोत्सवे, सर्वविघ्नप्रशान्तिकरा भगवदाज्ञया सावधाना भवन्तु स्वाहा”

एवी रीतनो मन्त्र भणवो. पछी,

श्रीमन्मन्दरमस्तके शुचिजलैर्धौते सदर्भाक्षते । पीठे मुक्तिवरं निधाय रुचिरे तत्पादपुष्पस्रजा ।

इन्द्रोऽहं निजभूषणार्थममलं यज्ञोपवीतं दधे, मुद्राकंकणशेखराण्यपि तथा जैनाभिषेकोत्सवे ॥१॥

विश्वैश्वर्यैकवर्यास्त्रिदशपतिशिरःशेखरस्पृष्टपादाः, प्रक्षीणाशेषदोषाः सकलगुणगणग्रामधामान एव ।

जायन्ते जन्तवो यच्चरणसरसिजद्वन्द्वपूजान्विताः श्री-रईन्तं स्नात्रकाले कलशजलभृतैरेभिराष्ठावयेत्तम् ॥२॥

एवी रीतनां काव्यो भणीने

॥ ६१ ॥

प्रतिष्ठादि
विधिओ।
॥ ६२ ॥

“ ॐ हाँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः अर्हते तीर्थोदकेन अष्टोत्तरशतोपधिसहितेन पष्टिलक्षैककोटिप्रमाणकलशैः
स्नापयामीति स्वाहा”

एवी रीतनो मंत्र भणवो. पछी,

चतुर्वृषभरूपाणि, शक्रः कृत्वा ततः स्वयम् । शृङ्गाष्टकक्षरत्क्षीरै - रकरोदभिषेचनम् ॥१॥

ए श्लोक बोली—

“ॐ हाँ ह्रीँ अर्हते क्षीरेण स्नापयामीति स्वाहा” ए मन्त्र बोली प्रभुने स्नान कराववुं.

पछी प्रतिष्ठा करावनारे रूपाना चोखार्थी प्रभु पासे अष्टमंगल पूरी नीचे प्रमाणे स्तुति करवी—

सन्मङ्गलप्रदीपं ते, विधायारात्रिकं पुनः । संगीतनृत्यवाद्यादिं, व्यधुर्विधिमुत्सवम् ॥१॥

तत्र पूर्वमच्युतेन्द्रो, विदधात्यभिषेचनम् । ततोऽनुपरिपाटीतो, यावच्चन्द्रार्यमादयः ॥२॥

ए प्रमाणे स्तुति करी आठ थोयनुं देववंदन करवुं.

पछी इन्द्र जिनेश्वरने लावी माता पासे मूकी ३२ क्रोड रत्न मुवर्ण अने रूपानी वृष्टि करे. तेने लगतो श्लोक-
शक्रस्तु जिनमानीय, विमुच्याम्बान्निकेतने । द्वात्रिंशद्रत्नरैरुष्य-कोटिवृष्टिं विरच्य सः ॥

॥ इति इन्द्रमहोत्सवः ॥

॥ इति जन्मकल्याणक । सप्तमदिनपूजाविधिः ॥

॥ ६२ ॥

प्रतिष्ठादि
विधिओ।
॥ ६३ ॥

आठमा दिवसनो पूजाविधि (अठार अभिषेकविधि)

जन्मकल्याणकना विधान वाद प्रियवंदा दासी राजा पासे जाय, त्यां पुत्रजन्मनो वृत्तान्त जणावे त्यारे राजा (अहिं श्रावको) पण महोत्सवपूर्वक वार दिवस सुधी पुत्रजन्मसंबंधी क्रिया करे, तेमां पहेला अठार प्रकारनां स्नात्रथी शुद्धि करे एटले के एक नवी कुंडीमां पवित्र जल नाखबुं तेमां वास, चंदन, पुष्प विगेरे थोडां नाखी जे जे प्रकारनुं स्नात्र करवानुं होय ते स्नात्रचूर्ण नाखी तेना चार कलशो भरवा. पछी जिनमुद्राधी + देव-सन्मुख उभा रहीने दरेक स्नात्र माटे नीचे आपेलां काव्यो तेमज गीत, गान पंचशब्द वाजिंत्रो साथे मंत्रथी अभिमंत्रित करायेला स्नात्रजलथी अठार स्नात्रो करवां ते आ प्रमाणे—

पहेलुं [हिरण्योदक] स्नात्र

सुवर्णना चूर्णथी [सोनाना वरख मिथित न्हवणथी] चार कलशो भरी 'नमोऽर्हत' कही नीचेनो श्लोक बोलवो—
पवित्रतीर्थनीरेण, गन्धपुष्पादिसंयुतैः । पतञ्जलं विम्बोपरि, हिरण्यं मन्त्रपूतनम् [०पावनम्] ॥१॥
सुवर्णद्रव्यसम्पूर्णं, चूर्णं कुर्यात्मुनिर्मलम् । ततः प्रक्षालनं चाद्भिः, पुष्पचन्दनसंयुतैः ॥२॥*

+ मुद्राओनी आकृतिओ परिशिष्ट नं. १ मां जुओ ।

* केटलीक जग्याप नीचेनो मात्र एकज श्लोक पण बोलाय छे—

प्रतिष्ठादि
विधियो।
॥ ६४ ॥

सुपवित्रतीर्थनीरेण, संयुतं गन्धपुष्पसंमिश्रम् । पततु जलं विम्बोपरि, सहिरण्यं मन्त्रपरिपूतम् ॥

“ॐ ह्रीं ह्रीं परम-अर्हते गन्धपुष्पाक्षतधूपसम्पूर्णैः स्वर्णेन स्नापयामीति स्वाहा”

ए मन्त्रोच्चारपूर्वक स्नात्र करी बिबने तिलक, पुष्प, वास, धूप विगेरेथी पूजन करवुं. इति प्रथमं हिरण्योदक-
स्नात्रम् ॥

ए रीते दरेक स्नात्र वखते करता रहेवुं.

बीजुं (पंचरत्न चूर्ण) स्नात्र

मोती, सोनुं, रूपुं, प्रवाल अने तांबु. ए पंचरत्ननुं चूर्ण करी उपरनी जेमज कुंडीमां वास चंदन पुष्पवाला
पाणीमां नाखी चार कलशो भरी 'नमोऽर्हत्'नो पाठ कही नीचेना श्लोको अने मंत्र बोली न्हवण करवुं.

यन्नामस्मरणादपि श्रुतवशादप्यक्षरोच्चारतो, यत्पूर्णं प्रतिमाप्रणामकरणात्संदर्शनात्स्पर्शनात् ।

भन्यानां भवपङ्कहानिरसकृत्स्यात्तस्य किं सत्पयः-स्नात्रेणापि तथा स्वभक्तिवशतो रत्नोत्सवे तत्पुनः ॥१॥

नानारत्नौघयुतं, सुगन्धपुष्पाभिवासितं नीरम् । पतताद्विचित्रचूर्णं, मन्त्राढ्यं स्थापनाविम्बे ॥२॥

“ॐ ह्रीं ह्रीं परम-अर्हते मुक्तास्वर्णरौप्यप्रवालत्र्यम्बकपञ्चरत्नैः स्नापयामीति स्वाहा”

आम दरेक स्नात्र कान्यो अने मंत्र बोलवापूर्वक ते ते स्नात्र करी तिलक, पुष्प, वास, धूप विगेरेथी पूजन
करवुं. इति द्वितीयस्नात्रम् ।

प्रतिष्ठादि
विधिभो ।
॥ ६५ ॥

त्रीजुं (कपाय) स्नात्र

कपायचूर्णयुक्त पाणीना कलशो भरी 'नमोऽर्हत्' कही
प्लक्षाश्वत्थोदुम्बर-शिरीषच्छल्यादिकल्कसंमिश्रम् । विम्बे कपायनीरं, पततादधिवासितं जैने ॥१॥
पिप्पली पिप्पलश्वैव, शिरीषोम्बरकः पुनः । वटादिकं महाछल्ली, स्नापयामि जिनेश्वरम् ॥२॥
“ॐ ह्रीं ह्रीं परम-अर्हते पिप्पल्यादिमहाछल्लैः स्नापयामीति स्वाहा” इति तृतीयस्नात्रम् ॥

चोथुं [मंगलमृत्तिका] स्नात्र

आठ जातिनी माटीनुं चूर्ण करी पाणीमां नाखी चार कलश भरवा-‘नमोऽर्हत्’ कही
परोपकारकारी च, प्रवरः परमोज्ज्वलः । भावनाभव्यसंयुक्तै-मृच्चूर्णेन च स्नापयेत् ॥१॥
पर्वतसरोनदीसंगमादि-मृद्धिश्च मन्त्रपूताभिः । उद्वर्त्य जैनविम्बं, स्नापयाम्यधिवासनासमये ॥२॥
“ ॐ ह्रीं ह्रीं परम-अर्हते नदीनगतीर्थादिमृच्चूर्णैः स्नापयामीति स्वाहा ” इति चतुर्थस्नात्रम् ॥

पांचमुं (सदोपधि) स्नात्र

ओपधिओनुं चूर्ण करी जलमां नाखवुं अने कलश भरी 'नमोऽर्हत्' कही
सहदेवी शतमूली, शतावरी शंखपुष्पिका । कुमारी लक्ष्मणा चैव, स्नापयामि जिनेश्वरम् ॥१॥
सहदेव्यादिसदोपधि-वर्गेणोद्धतितस्य विम्बस्य । संमिश्रं विम्बोपरि, पतज्जलं हरतु दुरितानि ॥२॥
“ॐ ह्रीं ह्रीं परम-अर्हते सहदेव्यादिसदोपधिना सह स्नापयामीति स्वाहा” इति पंचमस्नात्रम् ॥

॥ - ६५ ॥

प्रतिष्ठादि
विधिओ।
॥ ६६ ॥

छद्दुं [प्रथमाष्टकवर्ग] स्नात्र

उपलोट वि० आठ वस्तुओनुं चूर्ण करी जलमां नाखवुं अने कलश भरिने 'नमोऽर्हत्' कही
नानाकुष्ठाद्योपधि—सन्मिश्रे तद्युतं पतञ्जीरम् । विम्बे कृतसन्मन्त्रं, कर्मौघं हन्तु भव्यानाम् ॥१॥
उपलोटत्रचालोद्—हीरवणीदेवदारवः । ज्येष्ठीमधुऋद्धिवृद्धिः, स्नापयामि जिनेश्वरम् ॥२॥

“ॐ ह्रीं परम—अर्हते उपलोट्याष्टकवर्गेण स्नापयामीति स्वाहा” इति षष्ठस्नात्रम् ॥

सातमुं (द्वितीयाष्टकवर्ग) स्नात्र

पतञ्जारी वि० आठ वस्तुओनुं चूर्ण करी कलश भरवाना पाणीमां नाखवुं
'नमोऽर्हत्' कही—

मेदाद्योपधिभेदो—ऽपरोऽष्टवर्गः सुमन्त्रपरिपूतः । निपतन् विम्बस्योपरि, सिद्धिं विदधातु भव्यजने ॥१॥
पतञ्जारी विदारी च, कर्चूरः कच्चुरी नखः । कङ्कोडी क्षीरकन्दश्च, मुसलैः स्नापयाम्यहम् ॥२॥

“ॐ ह्रीं परम—अर्हते पतञ्जार्थष्टकवर्गेण स्नापयामीति स्वाहा” इति सप्तमस्नात्रम् ॥

आठमुं (सर्वोपधि) स्नात्र

प्रियंगु वि० ३३ औपधिओनुं चूर्ण करी जलमां नाखवुं अने कलश भरवा
सुपवित्रमूलिकावर्ग - मर्दिते तदुदकस्य शुभधारा ।

विम्बेऽधिवाससमये, यच्छतु सौख्यानि निपतन्ती ॥१॥

॥ ६६ ॥

प्रतिष्ठादि
विधिः।
॥ ६७ ॥

प्रियङ्गुवच्छकंकली, रसालादितरुद्भवैः । पल्लवैः पत्रमल्ल्यात, एलचीतजसत्फलैः ॥२॥

विष्णुकान्ता हिमवाल-लवङ्गादिभिरष्टभिः । मूलाष्टकरतथाद्रव्यैः, सदापधिविमिश्रितैः ॥३॥

सुगन्धद्रव्यसन्दोहा-मोदमत्तलिसंकुलैः । विदधेऽर्हन्महारनात्रं, शुभसन्ततिस्रवकम् ॥४॥

“ॐ ह्रीं ह्रीं परम-अर्हते प्रियङ्गवादिभिः सर्वोपधैः स्नापयामीति स्वाहा” इति अष्टमस्नात्रम् ।

त्यारपछी गुरु उभा थइ-परमेष्ठिसुद्रा गरुडसुद्रा, अने मुक्ताशुक्तिसुद्रा ए त्रण सुद्रायी जिनेश्वरनुं आदान करे.

आदान करवानो मन्त्र-“ॐ नमोऽर्हत्परमेश्वराय, त्रैलोक्यगताय अष्टदिक्कुमारीपरिपूजिताय, देवेन्द्रमहिताय,

दिव्यशरीराय, त्रैलोक्यपरिपूजिताय आगच्छ आगच्छ स्वाहा”

नवमं (पंचगव्यं अथवा पंचामृत) स्नात्रम् ।

पंचामृतना कलशं भरी ‘नमोऽर्हत्’ कही.

जिनविम्बोपरि निपतंतु, घृतदधिदुग्धादिद्रव्यपरिपूतम् । दधोदकसन्मिश्रं, पंचगव्यं हरतु दुरितानि ॥१॥

वरपुष्पचन्दनैश्च, मधुरैः कृतनिःस्वनैः । दधिदुग्धघृतमिश्रैः, स्नापयामि जिनेश्वरम् ॥२॥-

“ॐ ह्रीं ह्रीं परम-अर्हते पञ्चामृतेन स्नापयामीति स्वाहा” इति नवमस्नात्रम् ॥

१. २. ३. परिशिष्ट नं. २. ३. ४. जुओ.

॥ ६७ ॥

प्रतिष्ठादि
विधियो ।
॥ ६८ ॥

दशमुं (सुगंधौषधि) स्नात्र

अंवर वि० सुगंधि वस्तुओनुं चूर्णं करी जलमां नाखवुं अने कलश भरवा 'नमोऽर्हत्' कही-
सर्वविघ्नप्रशमनं, जिनस्नात्रसमुद्भवम् । वन्दे सम्पूर्णपुण्यानां, सुगन्धैः स्नापयेज्जिनम् ॥१॥
सकलौषधिसंयुक्त्या, सुगन्ध्या घर्षितं सुगतिहेतोः । स्नपयामि जैनविम्बं, मन्त्रिततन्नीरनिवहेन ॥२॥
“ॐ ह्राँ ह्रीँ परम-अर्हते अम्बरउशीरादिसुगन्धद्रव्यैः स्नापयामीति स्वाहा” इति दशमस्नात्रम् ॥

अगीयारमुं (पुष्प) स्नात्र

१ सेवंत्रा २ चमेली ३ मोगरा ४ गुलाब ५ जुई ए पांच जातनां फुलो पाणीमां नाखवां अने कलश
भरवा 'नमोऽर्हत्' कही
अधिवासितं सुमन्त्रैः, सुमनःकिञ्जल्कराजितं तोयम्,
तीर्थजलादिसुपृक्तं, कलशोन्मुक्तं पततु विम्बे ॥१॥
सुगन्धपरिपुष्पौघै-स्तीर्थोदकेन संयुतैः । भावनाभव्यसन्दोहैः, स्नापयामि जिनेश्वरम् ॥२॥
“ॐ ह्राँ ह्रीँ परम-अर्हते पुष्पौघैः स्नापयामीति स्वाहा” ॥ इति एकादशस्नात्रम् ॥

वारमुं (गन्ध) स्नात्र

१ केसर २ कपूर ३ कस्तूरी ४ अगर ५ चंदन ए घसी जलमां नाखी 'नमोऽर्हत्' कही

गन्धाङ्गस्नानिकया, सम्मृष्टं तदुदकस्य धाराभिः । स्नपयामि जैनविम्बं, कमौघोच्छित्तये शिवदम् ॥१॥
कुंकुमादिकूर्परैश्च, मृगमदेन संयुतैः । अगरैश्चन्दनोन्मिश्रैः, स्नापयामि जिनेश्वरम् ॥२॥

“ॐ ह्रीं ह्रीं परम-अर्हते गन्धेन स्नापयामीति स्वाहा ” ॥ इति द्वादशं स्नात्रम् ॥”

तेरमुं (वास) स्नात्र

१ चंदन २ केशर अने ३ कपूरतुं चूर्ण करी जलमां नाखतुं. कलश भरवा 'नमोऽर्हत्' कही—
हृद्यैराहादकरैः, स्पृहणीयैर्मन्त्रसंस्कृतैर्जेनम् । स्नपयामि मुगतिहेतो-र्वासैरधिवासितं विम्बम् ॥१॥
शिशिरकरकराभैश्चन्दनैश्चन्द्रमिश्रै-र्बहुलपरिमलौघैः प्रीणितं प्राणगन्धैः ।

विनमदमरमौलिप्रोवतरत्नांशुजालैः, जिनपतिवरशृङ्गे स्नापयेद् भावभक्त्या ॥२॥

“ ॐ ह्रीं ह्रीं परम-अर्हते मुगन्धवासचूर्णैः स्नापयामीति स्वाहा ” ॥ इति त्रयोदशं स्नात्रम् ॥

चौदमुं (चन्दनदुग्ध) स्नात्र

चंदनने दूधना कलशमां नाखी 'नमोऽर्हत्' कही
शीतलंसरसमुगन्धि-मनोमतश्चन्दनद्रुमसमुत्थः ।

चन्दनकल्कः सजलो, मन्त्रयुतः पततु जिनविम्बे ॥ १ ॥

क्षीरेणाक्षतमन्मथस्य च महत् श्रीसिद्धिकान्तापतेः, सर्वज्ञस्य शरच्छशाङ्कविशदज्योत्स्नारसस्पर्द्धिना ।
कुर्मः सर्वसमृद्धयस्त्रिजगदानन्दप्रदं भूयसा, स्नानं सद्विक्रमत्कुशेशयपदन्यासस्य शस्याकृतेः ॥२॥

प्रतिष्ठादि
विधिओ।

॥ ६९ ॥

॥ ६९ ॥

प्रतिष्ठादि
विधिओ।
॥ ७० ॥

“ॐ ह्रां ह्रीं परम-अर्हते क्षीरचन्दनाभ्यां स्नापयामीति स्वाहा” ॥ इति चतुर्दशस्नात्रम् ॥

पंदरमुं (केशर साकर) स्नात्र

केशर अने साकरने जलमां नाखी कलश भरी 'नमोऽर्हत्' कही
काश्मीरजसुविलिप्तं, विम्बं तन्नीरधारयाभिनवम् ।

सन्मत्रयुक्तया शुचि, जैनं स्नपयामि सिद्धयर्थम् ॥१॥

वाचः स्फारविचारसारमपरैः स्याद्वादशुद्धामृत-स्यन्दिन्या परमार्हतः कथमपि प्राप्यं न सिद्धात्मनः ।

मुक्तिश्रीरसिकस्य यस्य सुरसस्नात्रेण किं तस्य च, श्रीपादद्वयभक्तिभावितधिया कुर्मः प्रभोस्तत्पुनः ॥२॥

“ॐ ह्रां ह्रीं परम-अर्हते काश्मीरजशर्कराभ्यां स्नापयामीति स्वाहा” ॥ इति पञ्चदशस्नात्रम् ॥

[उपर प्रमाणेनी वावत पहेला दिवसनी कुलमर्यादारूप छे, पछी त्रीजे दिवसे चन्द्र-सूर्यनुं दर्शन करावाय एटले
चिंवोने आरीसो देखाडवो, पछी छट्टे दिवसे धर्मजागरण एटले धर्मस्तुति करवी, पछी दग्गुठण करवुं.]

सोलमुं (तीर्थोदक) स्नात्र

गंगा आदि एकसो आठ तीर्थोनां पाणी कलशोमां नाखी 'नमोऽर्हत्' कही

जलधिनदीद्रहकुण्डेषु, यानि तीर्थोदकानि शुद्धानि । तैर्मन्त्रसंस्कृतैरिह, विम्बं स्नपयामि सिद्धयर्थम् ॥१॥

नाकनदीनदविहितैः, पयोभिरम्भोजरेणुभिः सुभगैः । श्रीमज्जिनेन्द्रपादो, समर्चयेत्सर्वशान्त्यर्थम् ॥२॥

“ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः परम-अर्हते तीर्थोदकेन स्नापयामीति स्वाहा” ॥ इति षोडशस्नात्रम् ॥

॥ ७० ॥

प्रतिष्ठादि
विधिओ।
॥ ७१ ॥

सत्तरमुं (कपूर) स्नात्र

कपूर कलशमां नाखी 'नमोऽर्हत्' कही
नशिकरतुपारधवला, उज्ज्वलगन्धा मुतीर्थजलमिथा । कपूरोदकधारा, सुमन्त्रपूता पततु बिम्बे ॥१॥
कनककरकनालीमुक्तधाराभिरदिभः, मिलितनिखिलगन्धैः केलिकपूरभाभिः ।
अखिलभुवनशान्तिं शान्तिधारा जिनेन्द्र-क्रमसरसिजपीठे स्नापयेद्वीतरागान् ॥२॥

“ॐ ह्रां ह्रीं हूं ह्रूं ह्रौं ह्रः परम-अर्हते कपूरेण स्नापयामीति स्वाहा” ॥ इति सप्तदशस्नात्रम् ॥

अठारमुं (केशर-चंदन-पुष्प) स्नात्र

केशर, चंदन अने फूल पाणीमां नाखी 'नमोऽर्हत्' कही
सौरभ्यं घनसारपङ्कजरजोनिःप्रीणितैः पुष्करैः, शीतैः शीतकरावदारुचिभिः काश्मीरसन्मिश्रितैः ।
श्रीखण्डप्रसवाचलैश्च मधुरैः नित्यं लभेष्टैर्वरैः, सौरभ्योदकसंख्यसान्धर्वचरणद्वन्द्वं यजे भावतः ॥१॥
“ॐ ह्रां ह्रीं हूं ह्रूं ह्रौं ह्रः परम-अर्हते केशरचन्दनाभ्यां स्नापयामीति स्वाहा” ए मन्त्र बोली स्नात्र
करी, तिलक आदिकथी पूजन करी पुष्पांजलि लइ नीचेनो श्लोक बोलवो—
नानासुगन्धपुष्पांघ-रठिजता चञ्चरीककृतनादा । धूपामोदविमिथा, पततात्पुष्पाञ्जलिर्विम्बे ॥१॥
पछी “ॐ ह्रां ह्रीं हूं ह्रूं ह्रौं ह्रः पुष्पाञ्जलिभिरर्चयामीति स्वाहा” ए मन्त्र बोली पुष्पांजलिथी पूजन
करवुं ।
॥ इति अष्टादशस्नात्रम् ॥

॥ ७१ ॥

प्रतिष्ठादि
विधिभो।

॥ ७२ ॥

पछी श्रीसंघसहित अधिकृत जिननी स्तुति आदिकथी देववंदन करवुं ते आ प्रमाणे स्वमा० इरियावहिया कही सकलकुशल० अधिकृत जिननुं अगर 'ॐ नमः पार्थनाथाय' चैत्य० कही जंकिंचि, नमुत्थुणं, अरिहंतचेइआणं, अन्नत्थ० एक नवकारनो काउ० करी 'नमोऽर्हत्' कही नीचेनी स्तुति कहेवी.

अईंस्तनोतु स श्रेयः, श्रियं यद्ध्यानतो नरैः । अप्येन्द्री सकलात्रैहि, रंहसा सहसोच्यते ॥१॥

पछी लोगस्स० सव्वलोए अरि० अन्नत्थ० १ नवकारनो काउ० स्तुति करी
ॐमिति मन्ता य-च्छासनस्य नन्ता सदा यदंहीथि ।

आश्रीयते श्रिया ते, भवतो भवतो जिनाः पान्तु ॥२॥

पछी 'पुक्खर० मुअस्स भगव० वंदण० अन्नत्थ० १ नव० काउ० करी स्तुति
नवतत्त्वयुता त्रिपदी, श्रितां रुचिज्ञानपुण्यशक्तिमता । वरधर्मकीर्त्तिविद्या-नन्दा स्याज्जैनगीर्जीयात् ॥३॥

पछी श्री'शान्तिनाथ आराधनार्थं क० का० वंदण० अन्नत्थ १ लोगस्स सागरवर गंभीरां काउ० 'नमोऽर्हत्' कही
श्रीशान्तिः श्रुतशान्ति-प्रशान्तिकोऽसावशान्तिमुपशान्तिम् ।

नयतु सदा यस्य पदाः, सृशान्तिदाः सन्तु सन्ति जने ॥४॥

पछी 'सुयदेवयाए करे० काउ०' अन्नत्थ १ नव० काउ०, नमोऽर्हत्' कही स्तुति
वद ! वदति न वाग्वादिनि !, भगवति ! कः श्रुतसरस्वति ! गमेच्छुः ।

रङ्गत्तरङ्गमतिवर-तरणिस्तुभ्यं नम इतीह ॥५॥

॥ ७२ ॥

पत्नी 'शासनदेवयाए करे० काउ०' अन्नत्थ० १ नव० काउ० नमोऽर्हत्' कही नीचेनी स्तुति कहेवी.
उपसर्गवलयविलयन-निरता, जिनशासनावनैकरताः ।

द्रुतमिह समीहितकृते स्युः, शासनदेवता भवताम् ॥६॥

पत्नी 'श्रीअम्बिकायै करे० काउ०' अन्नत्थ १ नव० काउ० नमोऽर्हत्' कही स्तुति
अम्बा वाः अङ्किताङ्कासौ, सौख्यख्यातिं ददातु नः । माणिक्यरत्नालङ्कार-चित्रसिंहासनस्थिता ॥७॥

पत्नी 'अच्छुत्ताए करे० काउ०' अन्नत्थ १ नव० काउ० नमोऽर्हत्' कही स्तुति—
चतुर्भुजा तडिद्वर्णा, कमलाक्षी वरानना । भद्रं करोतु सहस्र्या-च्छुसा तुरगवाहना ॥८॥

पत्नी 'खित्तदेवयाए करे० काउ०' अन्नत्थ १ नव काउ० नमोऽर्हत्' कही स्तुति—
यस्याः क्षत्रं समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रिया । सा क्षेत्रदेवता नित्यं, भूयान्नः सुखदायिनी ॥९॥

पत्नी 'समस्त वेया० क० का०' अन्नत्थ १ नव० का० नमोऽर्हत्' कही स्तुति—
सङ्खेऽत्र ये गुरुगुणौघनिधौ मुवैया-वृत्यादिकृत्यकरणैकनिबद्धकक्षाः ।

ते शान्तये सह भवन्तु सुराः सुरीभिः, सद्दृष्टयो निखिलविघ्नविघातदक्षाः ॥१०॥

पत्नी 'नवकार० नमुत्थुणं० जावंति चे० जावंत के० नमोऽर्हत्' कही नीचे आपेल स्तवन बोलवुं—
ॐमिति नमो भगवओ-अरिहंतमिद्दायरिय उवज्झाय । वरसव्वसाहुमुणिसंघ-धम्मतिस्थप्पवयणस्स ॥१॥

सप्पणव नमो तह, भगवइ मुअदेवयाए मुइयाए । सिवसंतिदेवयाए, सिवपवयणदेवयाणं च ॥२॥

प्रतिष्ठादि
विधियो।
॥ ७४ ॥

इन्द्रागणिजमनेरइय-व्रुणवाउकुवेरईसाणा । वंभो नागुत्तिदसण्ह-मवि य मुदिसाण पाळाणं ॥३॥
सोमजमवरुणवेसमण-वासवाणं तहेव पंचण्हं । तह लोमपालयाणं, सुराडगहाण य नवण्हं ॥४॥
साहंतस्स समक्खं, मज्झमिणं चेव धम्मणुद्वाणं । सिद्धिमविग्गं गच्छउ, जिणाइनवकारओ धणियं ॥५॥

पछी 'जयवीयराय' कही नामस्थापन, पत्रदान अने केशरनां छांटणां करवां.

पछी नीचेनुं काव्य तथा मंत्र बोली वस्त्राभरणथी पूजन करवुं—

चञ्चचारुशुचिप्ररोहविसरत्प्रद्योतिताशामुखे, दिव्यश्रीकदिवाकरद्युतिभरादान्तुसदृगोचरे ।

निर्मूल्ये विशुचि शुचौ जिनमहे, दिव्यैकदेवाङ्गना-ऽऽनीतैराभरणैरलंकृतमहा देहे दधे वाससी ॥

“ॐ ह्रीं ह्रीं परम-अर्हते वस्त्राभरणेन चर्चयामीति स्वाहा ”

पछी नीचेनुं काव्य तथा मन्त्र बोली नैवेद्यपूजन करवुं—

सज्जैः प्राज्याज्ययुक्तैः परिमल्लवहुलैर्मोदकैर्मिश्रिखण्डैः, स्वाद्याद्यैर्लपनश्रीवृत्तवरपृथुलापूपसारैरुदारैः ।

स्निग्धौघोभिर्नितान्तं चरुभिरभिनरैः कर्मवल्लीकुठारान्,

चापे निर्माय धूर्यान् सुरनरमहितान् चर्चयेदहर्बर्गान् ॥१॥

“ॐ ह्रीं ह्रीं परम-अर्हते नैवेद्येन चर्चयामीति स्वाहा” पछी वल्लिवाकुळ उडाववा. ॥इति अष्टमदिनपूजाविधिः॥

— अदार स्नात्रमांती खास खास ओंपधियोनी यादी —

(३) कपाय चूर्णः—१ पीपल २ पीपली ३ शिरीष ४ उंबर ५ वड ६ चंपक ७ अशोक ८ आप्त

॥ ७४ ॥

१ जंबु १० वकुल ११ अर्जुन १२ पाटल १३ वीली १४ दाडम १५ केसूडां १६ नारिंग.

(४) भंगलमृत्तिका:—१ हाथीना दांतनी २ बळदना शिंगडानी ३ पर्वतनी ४ उदेहीनी ५ नदीना फांठानी ६ नदीओना संगमनी ७ सरोवरनी ८ तीर्थनी.

(५) सवौपधि:—१ सहदेवी २ सतावरी ३ कुंभार ४ चालो ५ मोटी नानी रिंगणी ६ मोरशिखा ७ अंकोल ८ शखावली ९ लक्ष्मणा १० आजोकाजो ११ थोर १२ तुलसी १३ मरचो १४ कुंभी १५ गली १६ सरपंखो १७ राजहंसी १८ पीठवणी १९ शालवणी २० गंधनोली २१ महानीली.

(६) अप्रवर्ग १ लो:—१ उपलोट २ वज्र ३ लोद्र ४ हीरवणीनां मूल ५ देवदार ६ जेठीमध ७ दुवां ८ क्रजिवृद्धि.

(७) अप्रवर्ग २ जो:—१ पतंजारी २ विदारिकंद ३ कचूरो ४ कपूरकाचली ५ नखला ६ फंकोडी ७ खीरकंद ८ मुसली-काळी (घोळी).

(८) सवौपधि :— १ प्रियंगु २ हलदर ३ वज्र ४ सूचा ५ चालो ६ मोथ ७ अतिकली ८ मुरमांसी ९ जटामांसी १० उपलोट ११ पलची १२ लवंग १३ तज १४ तमालपत्र १५ नागकेसर १६ जायफल १७ जावंध्री १८ फंकोल १९ सेलारस २० चंदन २१ अगर २२ पत्रज २३ छड २४ निखला २५ घडला २६ कचुरो २७ विरहाली २८ छडोली २९ मरचकंकोल ३० वरधारो ३१ आसंधि ३२ वडीओपधि ३३ सहस्रमूली.

(१०) सुगंधौपधि :—१ अम्बर २ चालो ३ उपलोट ४ कष्ट ५ देवदार ६ मुरमांसी ७ वास ८ चन्दन ९ अगर १० कस्तूरी ११ कपूर १२ पलवी १३ लवङ्ग १४ जायफल १५ जावंध्री १६ गोरोचन १७ केसर.

प्रतिष्ठादि
विधियो।
॥ ७६ ॥

नवमा दिवसनां पूजाविधि

‘ॐमिति नमो बंभीए लिवीए ॐ हा ह्रीं परम-अर्हते लेखकशालाकरणमिति स्वाहा”

ए मन्त्र बोली गोल धाणा, लेखिनी अने मयीभाजननुं प्रदान करवुं. पत्नी विवाहमहोत्सव करवां.

पत्नी प्रतिष्ठा करनार श्रावकोए पोताना डावा हाथथी जिनना जमणा हाथमां ‘साही’ प्रदान करवुं. पत्नी जमणे हाथे सर्वे विंचोना सर्व अंगे प्रथमथी ज अभिमंत्रित घट्ट मुखड अने केसरथी अर्च. करवुं अने दरेक विंचो पासे फूल, धूप, वास वि. मूकवां.

+ + +

पत्नी गुरुए जिनविम्ब प्रत्ये मुरभिमुद्रा, पद्ममुद्रा अने अंजलिमुद्रा देखाडवी.

अधिवासना मन्त्रः—

पत्नी-१ “ॐ नमः शान्तये हुं क्षुं हुं सः” अथवा

२ ॐ नमो खीरासवलद्धीणं, ॐ नमो संभिन्नसोआणं, ॐ नमो पयाणुसारीणं, ॐ नमो कुट्टवुद्धीणं
जमियं विज्जं पउंजामि सा मे विज्जा पसिज्जउ, ॐ अवतर अवतर. सोमे सोमे, कुरु कुरु, वग्गु वग्गु, मुमणे
सोमणसे, महुमहुरे ॐ कविले कः क्षः स्वाहा”

ए वेमांथी गमे ते एक मन्त्रथी त्रणवार मंत्री, ऋद्धिवृद्धिसहित सवला देवोने हाथे मींदलनुं कंठण वांभवुं. तथा

+ मुद्राओ माटे जुओ परिशिष्ट नं. १.

॥ ७६ ॥

प्रतिष्ठादि
विधिओ।
॥ ७७ ॥

+ +
बीजा अधिवासमंत्रथी-‘मुक्ताशुक्ति’ अने ‘चक्रमुद्रा’ करीने श्रावकोए विम्बोनां-मस्तक, वंने स्कंध अने वन्ने
घुंण एम पांचे अंगोपर पर्श करवो तथा धूप उखेववो. पछी गुरुए ‘परमेष्ठिमुद्रा’थी फरीथी नीचे प्रमाणे जिनाहान करवुं.

“ॐ नमोऽर्हत्परमेश्वराय, चतुर्मुखपरमेष्ठिने, त्रैलोक्यगताय, अष्टदिक्कुमारीपरिपूजिताय, देवाधिदेवाय,
दिव्यशरीराय, त्रैलोक्यमहिताय आगच्छ आगच्छ स्वाहा”

+
ए मंत्रथी त्रणवार आहान करी ‘आसनमुद्रा’ देखाडी वास, कपूर आदिथी पूजन करवुं. श्रावकोए पण
चंदन, फल, फूल, धूप, वास वि०थी पूजन करीने दशीवालां वस्त्र ढोकवां. ते उपर नव श्रीफल मूकवां. तेमज
श्रावकोए जुदी जुदी जातनां फल, फूल, बलि, जंबीर, रायण, दाडम, करणां, केलां, द्राख, खारेक, सिंधोडां,
अखरोट, बदाम, कमलकाकडी, पस्तांनां बीज वि० ढोकवां. पछी फुलेकुं चडाववुं. स्त्रीओए प्रभुने पोंखवा, ते
निमित्ते यथाशक्ति सुवर्णनुं दान देवुं. आरती मंगलदीवो करवो. पछी श्रावकोए नवकार भणीने प्रियंगु, बरास,
कपूर तथा गोरोचनथी वंने हाथे विंने हस्तमां लेप करवो.

पछी “ॐ आदित्य” इत्यादिक कहीने नवे ग्रहोने बलिदान देवुं, बांट, खीर, करवो, सेव, कूर,
लापसी, पुडला, वडां तथा भजीआंना थाल भरीने आगल मूकवां. पछी ग्रीवासूत्र तथा केसरथी रंगेला सूत्रथी

+ मुद्राओ माटे जुओ परिशिष्ट नं. १

॥ ७७ ॥

प्रतिष्ठादि
विधियो ।
॥ ७८ ॥

वेष्टित चारी बांधवी. तोरण सहित मण्डप करवो. तेनी नीचे सिंहासन स्थापन करीने, ते पर प्रतिमा स्थापन करवी. सोनानो कलश प्रतिमा पासे मूकवो. घी गोल सहित चार मंगलदीवा स्थापवा, पछी वांट, खीर, कंसार वेवर, करंबो, कूर, घी, मेवा, पुरी, सुखडी एटलां वानां थालमां भरीने सधवा स्त्री त्यां लावीने मूके. ओवारणां ल्ये तेमज त्यां धान्य अने जल मूके, चार नाना घडा त्यां स्थापे. सुंवालीनां कांकणां करवां. ते घडा उपर जवारानां शरावलां मूकवां, तेमज ते घडाओने ग्रीवासूत्र बांधुं.

पछी गुरुए शक्रस्तवपूर्वक चैत्यवंदन करवुं. तथा चंदन, वास, धूप अने फूल सहित कसुंवी वस्त्रथी तेओनुं मुख ढांकवुं. पछी गुरुए सूरिमन्त्रथी मन्त्रित वासक्षेप विंवना मस्तकपर अधिवासित करवो. अने ते वखते उपर क्हा प्रमाणेना १ “ॐ नमः शान्तये हुं क्षुं हूं सः” अथवा २ “ॐ खीरासवलद्धीण” इत्यादि अधिवासना मंत्रो भणवा. वस्त्र दूर करवुं.

पछी लग्न समये—

संसारे भोगयोग्या श्रीः, गृहिधर्मश्च कारणम् । भोगफलसाधनार्थं, तस्माच्च करपीडनम् ॥१॥

ए श्लोक भणीने हथेवालामां ऋद्धिवृद्धि, सोपारी, केसर, सुखड आदिक मूकवां. तेमज ते वखते “ॐ ह्रां ह्रीं ऐं क्लीं ह्रौं अव्यक्ताव्यक्तसम्पन्नाय, संसारभोगकारणाय, मंगलार्थं पाणिपीडनमिति स्वाहा” ए मन्त्र पण बोलवो. वाजिंत्र वंगडाववां, धवलमंगल गवडाववां, पोडशांश होम करवो. टीको कराववो. विंवने वस्त्राभूषण पहेराववां. पछी पांच जातना २५ लाडवा मूकवा. मेवो वहेचवो पछी राज्याभिषेक करवो. पछी

प्रतिष्ठादि
विधिभो ।
॥ ७९ ॥

जयति जगति यस्य प्राग्भवं सम्यगात्मो-दयविजितविपक्षं विश्वकल्याणबीजम् ।

सुरसरिदमलाम्भोधारया धारणीयं, बहुगुणजिननाथं स्थापयेन्पट्टभोगे ॥१॥

ए काव्य भणी "ॐ ह्रीं ह्रीं सिंहासमच्छत्रचामराद्यलंकृतैः राज्याभिषेकोऽयं पट्टस्थापनमिति स्वाहा"

ए मन्त्र भणी प्रभुनुं पट्टस्थापन करयुं. इति पट्टस्थापनविधिः ॥

अथ दीक्षामहोत्सवः ।

संवत्सरं दानवरं वराणा-माधारसारैकवचश्चरित्रम् ।

परं पवित्रं पुरुषं पुराणं, पदप्रकृष्टं मुगरिष्ठज्येष्ठम् ॥१॥

ए काव्य भणी "ॐ ह्रीं ह्रीं परम-अर्हते जिननाथाय स्नापयामीति स्वाहा" ए मन्त्र भणी प्रभुने दीक्षास्नान करावयुं.

पछी महोत्सवपूर्वक इन्द्र इन्द्राणीथी परिवरित दान देता देता अशोकवृक्षनी नीचे जई सर्व अलंकारोयी रदित पंचमुष्टि लोच करवो. पछी "ॐ नमो सिद्धाणं" ए पाठ भण्या वाद

चारित्रचक्रदधतं भुवनैकपूज्यं, स्याद्वादतोयनिधिवर्धनवाल[पूर्ण]चन्द्रम् ।

तच्चार्थभावपरिदर्शनबोधदीप-मैश्वर्यवर्यमुमनं विगताभिमानम् ॥१॥

निग्रन्थनाथममलं कृतदर्पनाशं, सर्वाङ्गभासुरमनन्तचतुष्टयाध्यै(द्वय)म् ।

मिथ्यात्वपङ्कपरिशोषणवासरेशं, क्रोधादिदोपरहितं वरपुण्यकायम् ॥२॥

॥ ७९ ॥

प्रतिष्ठादि
विधिभो।

॥ ८० ॥

ए काव्यो भणीने “ॐ ह्रां ह्रीं परम-अर्हते पञ्चमहाव्रत-पञ्चसमितित्रिगुप्तिधराय, मनःपर्यवज्ञान-विपुल-
मत्यात्मकाय जिननाथाय नमः स्वाहा” ए मन्त्र भणवो. इति दीक्षाकल्याणकम् ॥

पछी गुरुए चैत्यवन्दनथी प्रारंभी त्रण थोय सुधी कही सिद्धाणं० कही अधिवासनादेवीए करेभि काउ०
अघ्नत्थ कही १ लोगस्सनो काउ० करी नमो० कही— थोय—

पातालमन्तरिक्षं, भुवनं वा या समाश्रिता नित्यम् । साऽत्रावतरतु जैनीं, प्रतिमामधिवासनादेवी ॥४॥

पछी ‘सुअदेवयाए क० का०’ अन्नन्थ० १ नवकार० नमो० कही थोय—

वद वदति न वाग्वादिनि, भगवति कः श्रुतसरस्वति गमेच्छुः । रङ्गत्तरङ्गमतिवर-तरणिस्तुभ्यं नम इतीह ॥५॥

पछी ‘संतिदेवयाए क० का०’ अघ्नत्थ १ नव० नमो० कही थोय—

श्रीचतुर्विधसंघस्य, शासनोन्नतिकारिणी । शिवशान्तिकरी भूया-च्छीमती शान्तिदेवता ॥६॥

पछी ‘अंबयाए देवयाए क० का०’ अन्नन्थ० १ नव० नमो० कही.” थोय—

अम्बा बालाङ्किताङ्काऽसौ, सौख्यख्यार्तिं ददातु नः । माणिक्यरत्नालङ्कार-चित्रसिंहासनस्थिता ॥७॥

पछी ‘खित्तदेवयाए क० का०’ अन्नन्थ १ नव० नमो० कही. थोय—

यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रिया । सा क्षेत्रदेवता नित्यं, भूयान्नः सुखदायिनी ॥८॥

पछी ‘शासनदेवयाए क० का०’ अन्नन्थ० १ नव० नमो० कही. थोय—

या पाति शासनं जैनं, सद्यः प्रत्यूहनाशिनी । साऽभिप्रेतसमृद्ध्यर्थं, भूयाच्छासनदेवता ॥९॥

॥ ८० ॥

प्रतिष्ठादि
विधिभो ।
॥ ८१ ॥

पछी 'समस्तवेयावच्च० संति० सम्म० क० का०' अन्नत्थ० १ नव० नमो० कही.' थोय—
संवेऽत्र ये गुरुगुणोघनिधौ सुवैया-वृत्त्यादिकृत्यकरणैकनिवद्धकक्षाः ।

ते शान्तये सह भवन्तु सुराः सुरीभिः, सद्दृष्टयो निखिलविघ्नविघातदक्षाः ॥१०॥

पछी प्रगट नवकार, नमुत्थुणं, जावंतिचे०, जावंत० उवसग्गहरं लघुशांति तथा जयवीरराय कहेवा.

॥ इति देवचंदनम् ॥

पछी गुरु वेसी नीचे प्रमाणे धारणा करे अने ते अधिवासना रात्रे थाय "स्वागता जिनाः सिद्धाः प्रसादं मुधियां
कुर्वन्तु अनुग्रहपरा भवन्तु भव्यानां स्वागतमनुस्वागतम्" ॥ इति दीक्षाकल्याणकनवमदिनपूजाविधिः ॥

दशमा दिवसनो पूजाविधि

प्रथम स्नात्रीयाओने कंकण, मीढल, मरडाशींग, बहुफली वांधवां.

नीचेना श्लोकपूर्वक दश दिक्पालनुं पूजन करवुं—

शक्राग्न्यन्तकनैर्ऋतेशवरुणश्रीवायुवस्वेश्वरा, ईशानोऽब्जभवः प्रभूतफणिभृद्देवा अमी सर्वतः ।

निघ्नन्तो दुरितानि शीघ्रमभितस्तिष्ठन्तु पूजाक्षणे, स्वस्वस्थानमनेकधा द्युतिभृतः प्रोद्यद्विकृष्टासयः ॥१॥

॥ इति दिक्पालपूजा ॥

पछी नीचेना श्लोकथी ग्रहोनुं पूजन करवुं—

प्रतिष्ठादि
विधिओ।
॥ ८२ ॥

+ भानुश्चन्द्रनिशाकरद्युतिकरौ, भौमं बुधं निर्मलं; शान्तिं निर्विघ्नं करोति च गुरुः शुक्रं करोति स्वयम् ।
पीडादूरीकृतं शनैश्चरमतं तत्कारमाराधकं, राहुं केतुसमाश्रितं च भवता पुष्पाक्षतैः पूजयेत् ॥१॥
॥ इति नवग्रहपूजा ॥

नीचेना शान्तिबलिमंत्रथी बलिवाकुला त्रणवार मन्त्री प्रतिष्ठास्थाननी दशे दिशाओमां नाम लङ् लङ्ने
धूप, दीप, वास, बलिवाकला, फूल, अक्षत, पाणी सहित नाखवा.

शान्तिबलिमन्त्र—“ॐ नमो भगवते अर्हते शान्तिनाथस्वामिने—

सकलातिशेषकमहा—सम्पत्तिसमन्विताय शस्याय । त्रैलोक्यपूजिताय च, नमो नमः शान्तिदेवाय ॥

सर्वामरसुसमूह—स्वामिकसंपूजिताय न जिताय । भुवनजनपालनोद्यत—तमाय सततं नमस्तस्मै ॥

ॐ नमो भगवते सर्वदुरितौघनाशनकराय, सर्वाशिवप्रशमनाय । दुष्टग्रहभूतपिशाच—शाकिनीनां प्रमथनाय ॥

ॐ नमो भगवति विजये अपराजिते जयतीति जयावहे ।

सर्वसंघस्य भद्रकल्याणमङ्गलप्रददे, साधूनां शान्तितुष्टिपुष्टिप्रदे, स्वस्तिदे, भव्यानां ऋद्धिवृद्धिनिर्वृतिनिर्वाणजननि,
सत्त्वानामभयप्रदाननिरते, भक्तानां शुभावहे, सम्यग्दृष्टीनां धृतिरतिमतिबुद्धिप्रदानोद्यते ।

जिनशासननिरतानां, शान्तिनतानां च जगति जन्तूनां । श्रीसम्पत्कीर्तियशो—वर्धनी जयदेवि ! विजयस्व ॥

+ भानुं चन्द्रं निर्मलं भूमिपुत्रं, सौम्यं, शान्तं देवपूज्यं सशुक्रम् ।

शौरिं राहुं केतुयुक्तं सुपुण्यैः, संशान्त्यर्थं पूजयेद् भावभक्त्या ॥१॥

प्रतिष्ठादि
विधिभो ।
॥ ८३ ॥

रोगजलज्वलनविषधरदुष्टज्वरव्यन्तरराक्षसरिपुमारीचौरैतिश्चापदोषसर्गादिभयेभ्यो रक्ष रक्ष, शिवं कुरु कुरु, तुष्टिं कुरु कुरु, पुष्टिं कुरु कुरु ॐ नमो नमः ह्रीं ह्रीं हूं हूं ह्रः यः क्षः ह्रीं फुद् फुद् स्वाहा" ।

पञ्ची १ देवचन्दन करबुं तेमां चैत्यचन्दनयी त्रणः स्तुति सुधी कथा बाद सिद्धाणं । अधिचारानादेवयाए (प्रतिष्ठादेवयाए) क० का० अन्नत्थ १ लोमस्सनो काउ० नमो० कही- थोय-

यदधिष्ठिताः प्रतिष्ठाः सर्वाः सर्वास्पदेषु नन्दन्ति । श्रीजिनविभवं सा विशतु, देवता सुप्रतिष्ठमिदम् ॥४॥

शासनदेवयाए क० का० अन्नत्थ० १ नव० नमो० कही थोय-

या पाति शासनं जैनं, सद्यः प्रत्यूहनाशिनी । साभिप्रेतसमृद्ध्यर्थं, भूयाच्छासनदेवता ॥५॥

खित्तदेवयाए क० का० अन्नत्थ० १ नव० नमोऽ० कही थोय-

यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रिया । सा क्षेत्रदेवता नित्यं, भूयान्नः मुखदायिनी ॥६॥

संतिदेवयाए क० का० अन्नत्थ० १ नव० नमो० कही थोय-

श्रीचतुर्विधसंघस्य, शासनोन्नतिकारिणी । शिवशान्तिकरी भूया-च्छ्रीमती शान्तिदेवता ॥७॥

समस्तवेया० संति० सम्म० समा० क० का० अन्नत्थ १ नव० नमो० कही थोय-

संवेऽत्र ये गुरुगुणौघनिधौ मुवैया-वृत्त्यादिकृत्यकरणैकनिबद्धकक्षाः ।

ते शान्तये सह भवन्तु सुराः सुरीभिः, सदृष्टयो निखिलविघ्नविघातदक्षाः ॥८॥

१ देवचन्दन ७२ मा पाना उपरधी करबुं.

॥ ८३ ॥

प्रतिष्ठादि
विधिओ।
॥ ८४ ॥

पछी प्रगट नवकार नमु० जावंति चे० जावंत० नमो० उवसग्ग० जय० कहेवा ॥ इति देववन्दनम् ॥

पछी कसुंबी वस्त्र ढांकवुं, गुरुए वज्रपंजर—‘ॐ परमेष्ठि० आत्मरक्षा, ‘ॐ नमो अरिहंताणं हृदये’ शुची-
करण तथा सकलीकरण, करी मुक्ताशुक्ति अथवा चक्रमुद्रा सहित अधिवासना मन्त्र खूव उच्च स्वरे बोलवो.

स्वागता जिनाः, ॐ नमो खीरासवलद्धीणं तथा सूरिमन्त्र एम दरेक मंत्र त्रणवार बोली प्रभुजी उपर वासक्षेप
कर्या वाद श्रावकोए सर्व विंभप्रत्ये धूप उखेववो तेमज विंभ उपर ढांकैलुं वस्त्र दूर करवुं पछी गुरुए लग्न नजीक आवतां
ऊंचा सादे तथा ऊंचा श्वासथी विंभना ललाटपर “ह्रा”, वंने लोचनपर “श्रीं”, हृदयपर “ह्रीं”, संधिनां
स्थानोपर “रै” अने प्राकारपर “श्लौ” एवा अक्षरो स्थापवा. पछी त्यां घीनुं पात्र मूकवुं पछी नीचेनां
काव्य अने संत्रथी त्रणवार जिननुं आह्वान परमेष्ठि मुद्राथी करवुं— काव्य—

उदयति परमात्मज्योतिरुद्योतितारां, विषयविनययुक्त्या ध्वस्तमोहान्धकारम् ।

शुचितरघनसारोल्लासिभिश्चन्दनांघै—जिनपतिवरगन्धैश्चर्चयेद्भक्तिभावात् ॥१॥

धातिक्षयोद्भूतविशुद्धबोधाः, प्रबोधिताशेषविशेषत्रात्म(विज्ञान्) ।

गुरेन्द्रनामेन्द्रनरेन्द्रवन्द्याः, समर्चयेत् श्रीजिननायकान् ज्ञः ॥२॥

मन्त्रः—“ॐ ह्रां ह्रीं नमोऽर्हत्परमेश्वराय, चतुर्मुत्रपरमेष्ठिने, त्रैलोक्यगताय, अष्टदिक्कुमारीमहिताय, इन्द्रपरि-
पूजिताय, देवाधिदेवाय, दिव्यशरीराय त्रैलोक्यमहिताय, अष्टमहाप्रातिहार्यधराय आगच्छ आगच्छ स्वाहा” ।

॥ इति जिनाह्वानम् ॥

॥ ८४ ॥

प्रतिष्ठादि
विधौ।
॥ ८५ ॥

पछी नीचेना मन्त्रथी अधिष्ठायकदेवतुं आह्वान करवुं—

मन्त्र—“ॐ ह्रीं क्लीं ऋषभादिवर्धमानान्ताः तीर्थंकरपरमदेवाः, तेषां प्रतिहारदेवाः शासनदेवा देव्यश्च प्रत्येक-
मेकादश देवाः छत्रधरचामरधरो, कुण्डलधारको, सिंहासनोभयपार्श्वस्थौ दीपधूपधरो (२) शासनयक्षौ इमे सर्वे
देवाः अत्र आगच्छन्तु आगच्छन्तु अवतरन्तु अवतरन्तु ॐ आं ह्रीं क्लीं नमः स्वाहा”

। इति अधिष्ठायकदेवाह्वानम् ।

स्थापनमन्त्रः—“ॐ ह्रीं क्लीं ऋषभादिवर्धमानान्तास्तीर्थंकरपरमदेवास्तेषामधिष्ठायका देवाः ॐ ह्रीं अत्र तिष्ठन्तु
तिष्ठन्तु स्वाहा” । इति स्थापनम् ।

पछी नीचेना मन्त्रथी सन्निहित (नजीक) करवा—

सन्निहितमन्त्रः— “ॐ ह्रीं क्लीं ऋषभादिवर्धमानान्तास्तीर्थंकरपरमदेवास्तेषामधिष्ठायका देवाः ॐ ह्रीं मम
सन्निहिता भवन्तु वषट्” पछी १ देववन्दन तथा क्षमापना करवी, । इति सन्निहितकरणम् ।

पछी श्रीखण्ड, तंडुल, कुम्भारना चाकनी माटी, समूलो डाम, सोनुं, रूपुं, तांबुं, मोती, लोडुं ए सर्वे
प्रतिमा नीचे स्थापवां. तेमज “ॐ जये ह्रीं सुभद्रे नमः ॐ स्थावरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा” ए मन्त्र भणी स्थिरी-
करण करवुं.

पछी सुवर्णना पात्रमां लालमुरमो, वरास, कस्तूरी, साकर अने घी मिश्रित करी नीचेना मन्त्रथी मन्त्रित करवां.

१ देववन्दन ८० मा पाना उपरथी करवुं.

॥ ८५ ॥

प्रतिष्ठादि
विधिओ।
॥ ८७ ॥

अने गरुडमुद्राओ करी नीचेना मन्त्रनो ऋणवार न्यास करवो.

न्यासमन्त्रः—“ॐ अवतर अवतर, सोमे सोमे, कुरु कुरु, वग्गु वग्गु, निवग्गु निवग्गु, सुमणे सोमणसे महु महुरे ॐ कविले ॐ ह्रीं कः क्षः स्वाहा” पछी वास धूप करवो.

पछी पद्ममुद्राए नीचेना मन्त्रथी विवने समवसरणमां वेसाडवा—“ॐ इदं रत्नमयमासनमलङ्कुर्वन्तु इहोप-
विष्टान् भव्यानलोकयन्तु हृष्टदृष्टया जिनाः स्वाहा”. तेमज मंत्राक्षरसहित ऋण नवकार गणी वासक्षेप करवो.
तथा *३६० करियाणानो पडो हाथपर मूकवो. त्यां चार स्त्रीओए पोंखणुं करवुं. तेज स्त्रीओना हाथे यथाशक्ति
सुवर्णदान देवडाववुं.
। इति केवलज्ञानकल्याणकमहोत्सवः ।

पछी फुलवासनी वृष्टि करवी, धूप करवो, देववंदन करवुं. तेना चैत्य०नां काव्यो—
*आकाशगामित्वचतुर्मुखत्वं, विश्वेश्वरत्वामितवीर्यताद्यम् । प्रिया हिता वागपि यत्र नित्यं, नमोनमस्तीर्थकराय तस्मै ॥१॥
देवेन्द्रवन्द्यमुनिसेवितपादपद्मं, सत्प्रातिहार्यविभवाङ्कितमक्षयं च ।

नाभेयमात्मगुणपूरितसर्वलोकं, चि प्ररूपविजितं प्रणमामि भवत्या ॥२॥

५/३, ६/६.

* ३६० करियाणानुं लिस्ट जुओ परिशिष्ट २

* कल्याणकलिकामां आ श्लोको पाना नं. ८८ उपर लीधेल फूटनोट प्रमाणे छे.

प्रतिष्ठादि
विधिओ।
॥ ८८ ॥

सिंहासने रत्नमयूखचित्रे, ह्यशोकवृक्षाश्रितदिव्यकायम् ।

छत्रत्रयं भाति जिनस्य मूर्ध्नि, सच्चामरैर्नित्यविराजमानम् ॥३॥

नित्योदयं दलितमोहमहान्धकारं, संसारतापहरणं शिवदं प्रकामम् ।

नष्टाष्टकर्मनिचयं च हिरण्यगर्भं, चिद्रूपरूपविजितं प्रणमामि भक्त्या ॥४॥

गजेन्द्रसिंहादिभयास्समुद्र-सङ्ग्रामसर्पादिमहोदराद्याः ।

यतः प्रणाशं ह्युपयान्ति सद्य-स्तस्मात्तमर्चे प्रवरं जिनेन्द्रम् ॥५॥

जंकिंचि० नमु० अरि० अन्नत्थ० जे तीर्थं करनी प्रतिष्ठा होय ते स्तुतिथी मांडी चार थोय सुधी कही
नमु० जावंति० जावंत० ते जिननुं स्तवन० जय० कहेवा. । इति देववन्दनम् ।

कल्याणकलिकामां आ प्रमाणे श्लोको छे.

आकाशगामित्वचतुर्मुखत्वं, विश्वेश्वरत्वाऽमितवीर्यताद्याः ।

प्रिया हिता वागपि यत्र नित्यं नमो नमस्तीर्थकराय तस्मै ॥ १ ॥

देवेन्द्रवन्द्यमनिमेषनिसेविताद्भिन्नं, सत्प्रातिहार्यविभवाञ्छ्रितमाप्तमुख्यम् ।

लोकातिशायिचरितं वरितं गुणौघै-श्चिद्रूपमस्तवृजिनं हि जिनं नमामि ॥ २ ॥

अशोकवृक्षः सुरपुष्पवृष्टिर्दिव्यध्वनिश्चामरमासनं च । भामण्डलं दुन्दुभिरातपत्र-मेतैर्युतं नमि जिनेशरूपम् ॥३॥

नित्योदयं दलितमोहमहान्धकारं, संसारतापहरणं शरणं गुणानाम् ।

नष्टाष्टकर्मकलिलं विजितान्तरारिम्, रूपं व्रजामि शरणं जितशीतभानोः ॥ ४ ॥

गजेन्द्रसिंहादिभयाः समुद्र-संग्रामसर्पाग्निमहोदराद्याः ।

यतः प्रणाशं ह्युपयान्ति सद्यः, सदा तमर्चे शिवदं जिनेन्द्रम् ॥ ५ ॥

॥ ८८ ॥

प्रतिष्ठादि
विधिभो ।
॥ ८९ ॥

पछी नीचेनां काव्यो तथा मन्त्र भणी स्नात्र (न्हवण) कराववुं. काव्यो—
सर्वापायव्यपायादधिगतविमलज्ञानमानन्दसारं, योगीन्द्रं ध्येयमग्यं त्रिभुवनमहितं यत्तथाव्यक्तरूपम् ।
नीरन्त्रं दर्शनाद्यं शिवमशिवहरं छिन्नसंसारपाशं,

चित्ते संचिन्तयामि प्रकरमविकटं मुक्तिकान्तासुकान्तम् ॥१॥

इत्थं सिद्ध प्रसिद्धं सुरनरमहितं द्रव्यभावद्विकर्म-पर्यायध्वंसलब्धाक्षयपुरविलसद्राज्यमानन्दरूपम् ।
ध्यायेद्विध्यातकर्मा-सकलमविकलं सौख्यमप्यैहिकं सद्,

ब्रह्मोपेतं प्रमोदादसमसुखमयं शाश्वतं हेलयैव ॥२॥

मन्त्र-“ॐ ह्रीं ह्रीं परमार्हते अष्टकर्मरहिताय सिद्धिपदं प्राप्ताय पारंगताय स्नापयामीति स्वाहा” पछी
“ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धाय नमः” ए मन्त्र भणी नव अंगे पूजन करवुं. पछी उदार अने उदात्त स्वरथी नीचेनुं
काव्य १०८ वार बोलतां १०८ स्नात्र करवां. काव्य—

चक्रे देवेन्द्रराजैः सुरगिरिशिखरे योऽभिषेकः पयोभि-र्नृत्यन्तीभिः सुरीभिर्ललितपदगमं तूर्यनादैः सुदीप्तैः ।
कर्ता तस्यानुकारं शिवगुणजनकं मन्त्रपूतैः सुकुम्भै-र्विम्बं जैनं प्रतिष्ठाविधिवचनपरः स्नापयाम्यत्र काले ॥१॥
पछी चैत्य० करवुं. पछी नीचेना भूतबलिमन्त्रथी बलिदान मन्त्रवुं.

भूतबलिमन्त्रः-“ॐ नमो अरिहंताणं, ॐ नमो सिद्धाणं, ॐ नमो आयरियाणं, ॐ नमो उवज्जायाणं,
ॐ नमो लोए सब्वसाहूणं, ॐ नमो आगासगामीणं, ॐ नमो चारणाइलद्धीणं, जे इमे किन्नरकिंपुरुसमहोरगगरुल-

॥ ८९ ॥

प्रतिष्ठादि
विधिओ।
॥ ९० ॥

सिद्धगंधवज्रखरकखसपिसायपेयडायिणिप्पभिइओ जिणघरनिवासिणो नियनियनिलयठिया पवियारिणो सन्निहिया असन्निहिया य ते सव्वे विलेवण-धूव-पुप्फ-फल-पईव-सणाहं वलिं पडिच्छंता, तुट्टिकरा भवन्तु, शिवंकरा भवंतु, संतिकरा भवंतु, सत्थयणं कुव्वंतु, सव्वजिणाणं सन्निहाणपभावओ पसन्नभावत्तणेण सव्वत्थ रक्खं कुणंतु, सव्वत्थ दुरियाणि नासंतु, सव्वासिवमुवसमंतु संति-तुट्टि-पुट्टि-सिव-सुत्थयणकारिणो भवंतु स्वाहा”

पछी ते वलि धूप, वास अने फल सहित करी दश दिक्पाल अने नवग्रहनां नाम लइ लइ नाखवो. पछी श्रावकोए बंने हाथमां फूल लइ नीचेना मन्त्रो भणी वलिदान करवुं.

“ॐ हर्म्यां गंधाह्नः प्रतीच्छन्तु स्वाहा, ॐ हर्म्यौ धूपं भजन्तु स्वाहा, ॐ हर्म्ये भूतबलिं जुषन्तु स्वाहा.” पछी कुसुमांजलि लइ नीचेना मन्त्रथी त्रणवार विम्व सामे नाखवी.

“ॐ हर्म्यै सकलसत्त्वलोकमवलोकय भगवन्नवलोकय अवलोकय स्वाहा.”

पछी श्रावकोए पहेलां करेली सर्व पूजा दूर करवी; तेमज चंदन, केशर, फूल, आंगी, वस्त्र, आभरण आदिकथी सघली नवी पूजा करवी. तेमज आगल करेलुं सर्व वलिदान पण दूर करवुं. दान देवुं. तथा बीजेरां आदि फल, लाडु, सुखडी, मेवो मुखवास वि. नैवेद्य मूकवुं. पछी लूण उतारण विधिपूर्वक कपूर, घी अने साकरथी आरति अने मङ्गलदीवो करवो. । इति निर्वाणकल्याणकम् ।

पछी गुरुए संघ साथे चैत्य०थी त्रण थोय सुधी कहा वाद ‘प्रतिष्ठादेवताविसर्जनार्थं का० करुं’ इच्छं प्र. दे. वि. क० का० वंदण० अन्नत्थ० ? लोगस्सनो चन्देसु निम्मलयरा सुधी काउ० नमो कही. थोय-

प्रतिष्ठादि
विधिः।
॥ ९१ ॥

यदधिष्ठिताः प्रतिष्ठाः सर्वाः सर्वास्पदेषु नन्दन्ति । श्रीनजिविम्बं सा विशतु, देवता सुप्रतिष्ठमिदम् ॥४॥

पछी सुअदेवयाए क० का० अन्नत्थ० १ नव नमो० कही. थोय—

वद वदति न चाग्वादिनि, भगवति कः श्रुतसरस्वति गमेच्छुः । रङ्गचरङ्गमतिवर—तरणिस्तुभ्यं नम इतीह ॥५॥

पछी संतिदेवयाए क० का० अन्नत्थ० १ नव० नमो कही. थोय—

उन्मृष्टरिष्टदुष्ट—ग्रहगतिदुःस्वप्नदुर्निमित्तादि । सम्पादितहितसम्प—न्नामग्रहणं जयति शान्तेः ॥६॥

पछी खित्तदेवयाए क० का० अन्नत्थ० १ नव० नमो० कही. थोय—

यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रिया । सा क्षेत्रदेवता नित्यं, भूयान्नः सुखदायिनी ॥७॥

पछी शासनदेवयाए क० का० अन्नत्थ० १ नव० नमो कही. थोय—

उपसर्गवलयविलयन—निरता जिनशासनावनैकरताः ।

द्रुतमिह समीहितकृते, स्युः शासनदेवता भदताम् ॥८॥

पछी समस्तवेया० संति० सम्म० क० का० अन्नत्थ० १ नव० नमो० कही थोय—

संवेऽत्र ये गुरुगुणौपनिधौ सुवैया—वृत्त्यादिकृत्यकरणैकनिबद्धकक्षाः ।

ते शान्तये सह भवन्तु सुराः सुरीभिः, सदृष्टयो निखिलविघ्नविघातदक्षाः ॥९॥

पछी नवकार, नमुत्थुणं०, जावंतिवे०, जावंत० नमो० स्तवन अजितशान्ति अथवा मोटीशान्ति जय०

पछी श्रावकोए अखंड चोखा जेर सवापांच प्रमाणनो थाल गुरु पासे मूकवो. श्रावकोए पुष्पांजलि लड तथा

॥ ९१

प्रतिष्ठादि
विधौ ।
॥ ९२ ॥

गुरुए अखण्ड चोखानी वे हाथे अंजलि लइ श्री संघ सहित उभा रही नीचे प्रमाणेनो मङ्गल पाठ बोली
श्रावकोए पुष्पांजलि तथा गुरुए चोखा उछालवा. मङ्गलपाठ-

जह सिद्धाण पइट्टा, *समग्गलोगस्स मज्झयारंमि । आचंदसूरियं तह, होउ इमा सुप्पइट्टत्ति ॥१॥

जह सग्गस्स पइट्टा, समग्गलोगस्स मज्झयारंमि । " " " " " ॥२॥

जह मेरुस्स पइट्टा, दीवसमुद्दाण मज्झयारंमि । " " " " " ॥३॥

जह जम्बूस्स पइट्टा, समत्थदीवाण मज्झयारंमि । " " " " " ॥४॥

जह लवणस्स पइट्टा, समत्थउदहीण मज्झयारंमि । " " " " " ॥५॥

धम्माऽधम्मागासा-त्थिकायमयस्स सव्वलोगस्स । जह सासया पइट्टा, एसा वि य होउ सुपइट्टा ॥६॥

पंचण्ह वि सुपइट्टा, परमिट्ठीणं जहा सुए भणिया । नियया अणाइनिहणा, तह एसा होउ सुपइट्टा ॥७॥

पछी गुरुए 'प्रवचनमुद्दाथी' नीचे प्रमाणे प्रतिष्ठाना गुणोनुं वर्णन करवा पूर्वक धर्मदेशना आपवी.

राया बलेण वइढइ, जसेण धवलेइ सयलदिसि नाए । सो पुण वइढइ विउलं, सुपइट्टा जस्स देसंमि ॥१॥

उवहणइ रोगमारिं, दुब्बिक्खं हणइ कुणइ सुहभावे । भावेण कीरमाणा, सुपइट्टा सयललोयस्स ॥२॥

जिणविम्बपइट्टं जे, करिंति तह कारविंति भत्तीए । अणुमन्नंति पइदिणं, सव्वे सुहभाइणो हुंति ॥३॥

दव्वं तमेव मन्ने जिणविम्बपइट्टणाइकज्जेसु । जं लग्गइ तं सहलं, दुग्गइजणणं हवइ सेसं ॥४॥

* तिलोअंचूडामणिम्मि सिद्धिपप । पाठा० ।

एवं नाऊण सया, जिणवरविम्बस्स कुण्ह सुपइहं । पावेह जेण जरमरण-वज्जियं सासयं ठाणं ॥५॥

पछी विम्ब आगल पडदो करी श्रीसंवना मुखमां तंबोल आपवां. पछी श्रीसंघे विम्बनां मुख उघाडवा
निमित्ते फल वि० ढोकवा. पछी चैत्य० करवुं. पछी प्रतिष्ठा करावनार श्रावके मोटो मीठो लाडवो मूकवो.
ए रीते दश दिवस सुधी महोत्सवविधि करवो.

१० प्रकारनां नैवेद्यः—रूरखांडघी, खीरखांडघी, घेवर, दहींरूरखांड, लापसी, गोलघुघरी, मीठो वाट
(मीठी थूली), पक्वान्न, गुंजा सिंधोडां अने नारंगी नालीपर वि० फल भराववां.

पछी “ॐ विसर विसर स्वस्थानं गच्छ गच्छ” ए मन्त्रधी नंदावर्त्तनुं विसर्जन करवुं.

पछी नीचेनो श्लोक तथा मन्त्र भणी अञ्जलिमुद्राधी प्रतिष्ठादेवन्तुं विसर्जन करवुं.

देवदेवार्चनार्थं ये, पुराऽऽहृताश्चतुर्विधाः । ते विधायाहृतां पूजां, यान्तु सर्वे यथागताः ॥१॥

मन्त्र—“ॐ विसर विसर प्रतिष्ठादेवते स्वस्थानं गच्छ गच्छ यः यः यः स्वाहा”

पछी नीचेनो श्लोक तथा मन्त्र भणी सर्व देवताओनुं विसर्जन करवुं.

ये देवदेवीगणनागयक्षाः, समागतास्ते कृतशान्तिकृत्याः ।

जिनेश्वरं विम्बविधानपूर्णं, मनोरथाः स्वं सदनं प्रयान्तु ॥१॥

मन्त्र—“ह्रीं विसर विसर सर्वे सुराः स्वस्थानं गच्छत गच्छत यः यः यः स्वाहा”.

पछी ‘मोटीशान्ति’ बोलवी शान्तिधारा देवी, चन्दन, पुष्प अने धूप वि. विधि करवो पछी कङ्कण

प्रतिष्ठादि
विधियो।
॥ ९४ ॥

छोडवुं अने नीचेनी गाथा बोलवी.

^१ थुइदाणमन्तनासो, ^२ आहवणं ^३ तह ^४ जिगाण ^५ दिसिवंधो । ^६ नेचुम्मीलणदेसण-गुरुअहिगारा छ इह कप्पे ॥
॥ इति दशमदिन-पूजाविधिः ॥

ए रीते प्रतिष्ठित करेलां नवीन जिनविम्बोने देवालयमां स्थापन करवां, पण ते पहेलां चाकनी माटी अने दर्भनो स्वस्तिक करवो. वधी जगाए बलिक्षेप करवो तेमज आठ थोयनुं देववंदन करी क्षेत्रदेवतानी स्तुति कहेवी.

विम्बनी स्थापना अने दृष्टि-वारशाखना आठ भाग करी तेमां उपरनो आठमो भाग छोडी सातमा भाग पर मूलनायक विम्बनी स्थापना करवी अने ए सातमा भागना आठ भाग करी आठमो भाग छोडी सातमा भाग पर दृष्टि स्थापवी.

“ॐ कूर्म ! निजपृष्ठे जिनविम्बं धारय धारय स्वाहा” ए मन्त्रथी सात वार पृथ्वी मन्त्री विम्बने स्थापन करवां अने “ॐस्थावरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा” ए मन्त्र सात वार भणवो. पछी सुगंधधूप वि.थी अष्टप्रकारी पूजन करवुं पछी चैत्य० करवुं अने स्तवननी जग्याए शान्ति कहेवी.

पछी पक्वान्न वि. नैवेद्य अने फलादिथी चित्रविचित्र पूजा करवी अने प्रतिमास्थापन पछी ‘लघुशान्ति, म्होटीशान्ति, अजितशान्ति, भयहरउवसग्गहरं, थुणिमो केवलि० अने तिजयपहुत्त स्तोत्र भणवां अने अट्टाइमहोत्सव करवो.

प्रतिष्ठादि
विधिभो ।
॥ ९५ ॥

चौदपूर्वी-पंचमश्रुतकेवली श्रीभद्रवाहुस्वामीए विद्याप्रवादपूर्वमांथी उद्धृत प्रतिष्ठाकल्पमांथी श्री जगच्चन्द्र-
सूरीश्वरे जे प्रतिष्ठाकल्प उद्धर्यो हतो तेना आधारे आ प्रतिष्ठाकल्प वाचक श्रीसकलचन्द्रगणिए रच्यो अने ते
पहेलांना-भट्टारक श्रीहरिभद्रसुरिकृत-हेमाचार्यकृत-श्यामाचार्यकृत-भट्टारकगुणरत्नाकरसुरिकृत प्रतिष्ठाकल्पोनी साथे
श्रीविजयदानसूरीश्वर समक्ष मेलवी शोधन कर्युं.

। समाप्तः श्रीसकलचन्द्रजीकृतप्रतिष्ठाकल्पः ।

+ सकलीकरणविधिः-“ॐ नमो अरिहंताणं हृदयं रक्ष रक्ष, ॐ नमो सिद्धाणं ललाटं रक्ष रक्ष, ॐ नमो
आयरियाणं शिखां रक्ष रक्ष, ॐ नमो उवज्झायाणं कवचं सर्वशरीरं रक्ष रक्ष, ॐ नमो लोए सव्वसाहूणं अस्त्रम् रक्ष रक्ष”
आ प्रमाणे सर्व ठेकाणे आचार्ये ऋण वार मन्त्रन्यास करवो. इति सकलीकरणविधिः ।

शुचिविद्याः-“ॐ नमो अरिहंताणं, ॐ नमो सिद्धाणं, ॐ नमो आयरियाणं, ॐ नमो उवज्झायाणं,
ॐ नमो लोए सव्वसाहूणं, सात वार गणवी.

*ॐ नमो आगासगामीणं, ॐ नमो चारणलद्धीणं, ॐ इहः क्षः नमः, ॐ अशुचिः शुचिर्भूयामि स्वाहा”

+ सकलीकरणविधि, शुचिविद्या अने वलिमन्त्रण जो के प्रतिष्ठाकल्पमां आवी जाय छे पण, चारंवार आवतां
होवाथी ख्याल माटे अलग पाढी आपवामां आवेल छे.

* ॐ नमो सव्वोसद्धिपत्ताणं ॐ नमो विज्जाहराणं इत्यादि कलिकायाम् ।

१ इहः क्षः इति खामाचार्याम् । कं क्षं नमः इति कलिकायाम् ।

॥ ९५ ॥

प्रतिष्ठादि
विधिओ।

॥ ९६ ॥

आ मन्त्रथी आचार्ये सर्वे अङ्ग पवित्रं करवां. केटलाकना मते स्नात्रीयाओ पण आनार्थी ज अङ्गरक्षा करे.

गुरुए बलि मन्त्रवानो मन्त्रः—ॐ ह्रीं क्ष्वीं सर्वोपद्रवं विम्बस्य रक्ष रक्ष स्वाहा” आ मन्त्र २१ वार बोलवो.

— +प्रतिष्ठा—विधिः —

अथातः संप्रवक्ष्यामि, प्रतिष्ठालक्षणं स्फुटम् । जिनशास्त्रानुसारेण, नत्वा वीरं जिनोत्तमम् ॥१॥

इह तावदादौ निष्पन्नविम्बस्य महोत्सवेन शुभवारतिथिनक्षत्रयोगेषु आयतने प्रतिष्ठास्थाने कृतविचित्र-
वस्त्रोल्लोचे पूर्वोत्तरदिग्भिमुखस्य स्थापना, जघन्यतोऽपि हस्तशतप्रमाणक्षेत्रशुद्धिः, तत्र च गन्धोदकपुष्पप्रकरादिभिः
सत्कारः, अमारिघोषणं, राजपृच्छनं, विज्ञानिकसन्माननं, सङ्घाह्वानं, महोत्सवेन पवित्रस्थानाज्जलानयनं, वेदिका-
रचना, दिक्पालस्थापनं, स्नपनकाराश्च समुद्राः, सकङ्कणाः, अक्षताङ्गाः, दक्षाः, अक्षतेन्द्रियाः, कृतविम्बस्थापनानन्तरं
श्रीखण्डरसेन ललाटे ‘ॐ ह्रीं’, हृदये ‘ॐ ह्रीं’, जान्वोः ‘ह्रीं’, पादयोः ‘ह्रीं’, इति वीजाक्षरा न्यसनीयाः
“ॐ नमोऽर्घ्यं प्रतीच्छन्तु पूजां गृह्णन्तु जिनेन्द्राः स्वाहा” इति कवचरक्षा, अखण्डितोज्जलवेपा, उपोषिता, धर्म-
बहुमानिनः, कुलजाश्चत्वारः करणीयाः, तत्रैव मङ्गलाचारपूर्वकमविधवाभिश्चतुःप्रभृतिभिः प्रधानोज्ज्वलनेपथ्याभरणा-
भिर्विशुद्धशीलाभिः सकङ्कणहस्ताभिर्नारीभिः पञ्चरत्नकपायमाङ्गल्यमृत्तिकामूलिकाऽष्टवर्गसर्वोपध्यादीनां वर्त्तनं कारणीयं

+ निर्वाणकलिका, आचारदिनकर, विधिमार्गप्रपा, सुबोधा[चान्द्रीय]सामाचारी, तिलकाचार्यकृत प्रतिष्ठाकल्प,
गुणरत्नसूरिकृत प्रतिष्ठाकल्प तथा नामोल्लेख सिवायना अन्य घणा प्रतिष्ठाकल्पोमां वास्तविक आ प्रमाणेनी
अञ्जनशलाका—प्रतिष्ठाविधि हती ते आपवामां आवेल छे.

॥ ९६ ॥

प्रतिष्ठादि
विधिभो ।
॥ ९७ ॥

क्रमेण, ततो भूतबलिपूर्वकं विधिना पूर्वप्रतिष्ठितप्रतिमास्नानं, ततः सूरिः प्रत्यग्रवस्त्रपरिधानः स्नात्रकारयुक्तः
शुचिरूपोपितो भूत्वा पूर्वं प्रतिमाग्रतश्चतुर्विधश्रमणसङ्घसहितोऽधिकृतस्तुत्या देववन्दनं करोति, ततः शान्तिनाथ-
श्रुतदेवी-शासनदेवी-अम्बिका-ऽच्छुम्भा-समस्तवैयावृत्यकराणां कायोत्सर्गो, ततः सूरिः कङ्कणमुद्रिकाहस्तः सदश-
वस्त्रपरिधानः आत्मनः सकलीकरणं शुचिविद्यां चारोपयति, तच्चेदम्-“ॐ नमो अरिहंताणं हृदये ॐ नमो सिद्धाणं
शिरसि ॐ नमो आयरियाणं शिखायां ॐ नमो उवज्झायाणं कवचं ॐ नमो लोए सच्चसाहूणं अस्त्रं” त्रिस्त्रिर्मन्त्रन्यासः ।

। इति सकलीकरणम् ।

ततः-“ॐ नमो अरिहंताणं ॐ नमो सिद्धाणं ॐ नमो आयरियाणं ॐ नमो आयरियाणं ॐ नमो उवज्झायाणं
ॐ नमो लोए सच्चसाहूणं ॐ नमो आगासगामीणं ॐ हः क्षः नमः” इति शुचिविद्या, अनया त्रिपञ्चसप्तचारा-
नात्मानं परिजपेत्, ततः स्नपनकारानभिमन्त्र्याभिमन्त्रितदिशा बलिप्रक्षेपणं धूपसहितं सोदकं क्रियते, “ॐ ह्रीं
क्ष्वीं सर्वोपद्रवं विम्बस्य रक्ष रक्ष स्वाहा” इत्यनेन एकविंशतिवारान् पठित्वा बल्यभिमन्त्रणं, कुसुमाञ्जलिक्षेपः
अभिनवसुगन्धिविकसित-पुष्पोवभृता सुधूपगन्धाढ्या । विम्बोपरि निपतन्ती, मुखानि पुष्पाञ्जलिः कुरुताम् ॥१॥

तदनन्तरमाचार्येण मध्याङ्गुलीद्वयोर्ध्वीकरणेन शतर्जनीमुद्रा रौद्रदृष्ट्या देया, तदनन्तरं वामकरे जलं गृहीत्वा
प्रतिमा छण्टनीया, ततस्तिलकं पूजनं च प्रतिमायाः मुद्गरमुद्रादर्शनम् अक्षतभृतस्थालदानं वज्रगरुडादिमुद्राभि-
विम्बस्य वज्ररक्षामन्त्रेण (बलिमन्त्रेण) “ॐ ह्रीं क्ष्वीं” इत्यादिना कवचं करणीयं दिग्बन्धाश्चानेनैव त्रिस्त्रिः पठनेन,

१ मुद्राभो माटे जुओ परिशिष्ट नं. १.

॥ ९७ ॥

श्रावकाः सन्तधान्यं (मुष्टिप्रायेण) सण १ लाज २ कुलत्थ ३ यव ४ कङ्ग ५ उडद ६ सर्पप ७ रूपं प्रतिमोपरि
क्षिपन्ति, जिनमुद्रया कलशाभिमन्त्रणं जलाद्यभिमन्त्रणम् । जलाद्यभिमन्त्रणमन्त्रार्थं ते—

“ॐ नमो यः सर्वशरीरावस्थिते महाभूते आ ३ आप ४ ज ४ जलं गृह्ण स्वाहा” इति जलाभिमन्त्रणमन्त्रः ।

“ॐ नमो यः सर्वशरीरावस्थिते पृथु २ गन्धान् गृह्ण ३ स्वाहा ” इति गन्धाधिवासनमन्त्रः ।

सर्वोषधिचन्दनममालम्बनमन्त्रश्च ।

“ॐ नमो यः सर्वतो मे मेदिनी पुष्पवती पुष्पं गृह्ण २ स्वाहा” इति पुष्पाधिवासनामन्त्रः ।

“ॐ नमो यः सर्वतो वलिं दह २ महाभूते तेजोऽधिपते धुधुधूपं गृह्ण २ स्वाहा” धूपाभिमन्त्रणमन्त्रः ।

ततः पञ्चरत्नकग्रन्थिरङ्गुल्यां (दक्षिणस्यां) बध्यते ततः पञ्चमङ्गलसूचकं मूद्रामन्त्राधिवासितैर्जलादि-
द्रव्यैर्गीततूर्यपूर्वकं मुकुशलस्नात्रकारैः स्नात्रकरणं, तद्यथा हिरण्यकलशचतुष्टयस्नानम्—

सुपवित्रतीर्थनीरेण, संयुतं गन्धपुष्पसम्मिश्रम् । पततु जलं विम्बोपरि, सहिरण्यं मन्त्रपरिपूतम् ॥१॥

सर्वस्नात्रेष्वन्तरा शिरसि चन्दनटिकं पुष्पारोपणं धूपश्च ? । पञ्चरत्नजलस्नानम्—

नानारत्नौघयुतं, सुगन्धिपुष्पाधिवासितं नीरम् । पतताद्विचित्रवर्णं मन्त्रादयं म्थापनाविम्बे ॥२॥

कषायस्नानम्—

? मे इति कलिकायां नास्ति.

पञ्चाशत्थोदुम्बर-१ शिरीषल्ल्यादिकल्कसन्मृष्टे । विम्बं कपायनीरं, पततादधिवासितं जैने ॥३॥

मृत्तिकास्नानम्—

पर्वतसरोनदीसङ्गमादि-मृद्धिश्च मन्त्रपूतामिः । उद्वर्त्य जैनविम्बं, स्नपयाम्यधिवासनासमये ॥४॥

पञ्चगव्यस्नानम्—

जिनविम्बोपरि निपतद्-घृतदधिदुग्धादिद्रव्यपरिपूतम् । दधोदकसंमिश्रं, २पञ्चगव्यं हरतु दुरितानि ॥५॥

सर्दोपधिस्नानम्—

सहदेव्यादिसर्दोपधि-वर्गेणोद्धतितस्य विम्बस्य । सन्मिश्रं विम्बोपरि, पतज्जलं हरतु दुरितानि ॥६॥

मूलिकास्नानम्—

सुपवित्रमूलिकावर्ग-मर्दिते तदुदकस्य शुभधारा । विम्बेऽधिवाससमये, यच्छतु सौख्यानि निपतन्ती ॥७॥

प्रथमाष्टकवर्गस्नानम्—

नानाकुष्ठाद्यौपधि-सन्मृष्टे तद्युतं पतश्रीरम् । विम्बे कृतसन्मन्त्रं, कर्मोषं इन्तु भव्यानाम् ॥८॥

द्वितीयाष्टकवर्गस्नानम्—

मेदाद्यौपधिभेदो-ऽपरोऽष्टवर्गः सुमन्त्रपरिपूतः । ३निपतन् विम्बस्योपरि, सिद्धिं विदधातु भव्यजने ॥९॥

१ घटकादिवल्कसंघृष्टम् ।

२ गवम् इति प्रपायां पाठः सामाचार्यामपि ।

३ जिनविम्बोपरि निपतत् [प्रपायां सामाचार्यां दिनकरेऽपि] ।

प्रतिष्ठादि
विधिभो ।

॥ ९९ ॥

॥ ९९ ॥

प्रतिष्ठादि
विधौ ।

॥ १०० ॥

ततः स्वरिरुत्थाय गरुडमुद्रया मुक्ताशुक्तिमुद्रया परमेष्ठिमुद्रया वा प्रतिष्ठाप्य देवताऽऽहानं तदग्रतो भूत्वा ऊर्ध्वः सन् करोति—“ॐ नमोऽर्हत्परमेश्वराय चतुर्भुजपरमेष्ठिने त्रैलोक्यगतायाष्टदिग्विभागकुमारीपरिपूजिताय देवाधि-
देवाय दिव्यशरीराय त्रैलोक्यमहिताय आगच्छ २ स्वाहा” इत्यनेन । दिक्पालाश्चाहूयन्ते—“ॐ इन्द्राय सायुधाय सवाहनाय इह जिनेन्द्रस्थाषने आगच्छ २ स्वाहा १, ॐ अग्नये सायुधाय आगच्छ २ स्वाहा” इत्यादिना, शेषाणामप्याहानं कुर्यात्, पुष्पाणामञ्जलिक्षेपश्च ।

सर्वोपधिस्नानम्—

सकलोपधिसंयुक्त्या, सुगन्धया वर्षितं सुगतिहेतोः । स्नपयामि जैनविम्बं, मन्त्रिततन्नीरनिवहेन ॥१०॥

ततः—“सिद्धजिनादि” मन्त्रः स्वरिणा दृष्टिदोषघाताय दक्षिणहस्तामर्षेण तत्काले विम्बे न्यसनीयः, स चायम्—

‘इहागच्छन्तु जिनाः सिद्धा भगवन्तः स्वसमये महानुग्रहाय भव्यानां भः स्वाहा’ ‘हुं क्षाँ ह्रीँ क्ष्वीँ १ क्ष्वीँ ह्रीँ भः स्वाहा’ इत्ययं वा । ततो लोहेनास्पृष्ट्वेत्सिद्धार्थरक्षापोट्टलिका करे बन्धनीया, तदभिमन्त्रणमन्त्रः—
२ ‘ॐ क्षाँ क्ष्वीँ ह्रीँ स्वाहा’, चन्दनटिक्कं च, ततो जिनपुरतोऽञ्जलिं बद्ध्वा विज्ञप्तिकावचनं कार्यं, तच्चेदं—

+ मुद्राओ माटे जुओ परिशिष्ट नं. १.

१ क्ष्वीँ ओँ इत्यादि प्रपायाम्, क्षुं दिनकरे, क्षीँ स्वीँ ।

२ क्षाँ क्ष्वीँ ह्रीँ स्वाहा इति प्रपायां मन्त्रः ।

॥ १०० ॥

‘स्वागता जिनसिद्धाः प्रसाददाः सन्तु प्रसादधिया कुर्वन्तु अनुग्रहपरा भवन्तु भव्यानां स्वागतमनुस्वागतम्’ ततो-
+ ऽञ्जलिमुद्रया गुवर्णभाजनस्थाद्यर्थं मन्त्रपूर्वकं निवेदयेत्, स च-‘ॐ भः अर्घ्यं प्रतीच्छन्तु पूजां गृह्णन्तु जिनेन्द्राः
स्वाहा’ सिद्धार्थदध्यक्षतघृतदर्भरूपश्चाद्यर्घ्यमुच्यते । ततः-

इन्द्रमग्निं यमं चैव, निर्वर्तिं वरुणं तथा । वायुं कुबेरमीशानं, नागं ब्रह्माणमेव च ॥१॥

‘ॐ इन्द्राय आगच्छ अर्घ्यं प्रतीच्छ २ पूजां गृह्ण २ स्वाहा’ एवमेव शेषाणामपि नवानामाह्वानपूर्वक-
मर्घ्यनिवेदनं च कार्यम् । ततः कुमुमस्नानम्-

अधिवासितं मुमन्त्रैः, मुमनःकिञ्जल्कराजितं तोयम् । तीर्थजलादिमुपृक्तं, कलशोन्मुक्तं पततु विम्बे ॥११॥

ततो गन्धस्नानिकास्नानम्-

गन्धाद्गन्धानिक्रया, सन्मृष्टं तदुदकस्य धाराभिः । स्नपयामि जैनविम्बं, कर्मघोच्छिद्ये शिवदम् ॥१२॥

गन्धा एव शुकुवर्णा वासा उच्यन्ते, त एव मनाक् कृष्णा गन्धा इति । ततो वासस्नानम्-

हृद्यैराहादकरैः, स्पृहणीयैर्मन्त्रसंस्कृतैर्जैनम् । स्नपयामि मुगतिहेतो-विम्बमधिवासितं वासैः ॥१३॥

ततः चन्दनस्नानम्-

शीतलसरसमुगन्धि-मनोमतश्चन्दनद्रुमसमुत्थः । चन्दनकल्कः सजलो, मन्त्रयुतः पततु जिनविम्बे ॥१४॥

ततः कुङ्कुमस्नानम्-

प्रतिष्ठादि
विधिओ।
॥ १०२ ॥

कश्मीरजसुविलिप्तं, विम्बं तन्नीरधारयाऽभिनवम् । सन्मन्त्रयुक्तया शुचि, जैनं स्नपयामि सिद्धचर्थम् ॥१५॥

तत आदर्शकदर्शनं ततस्तीर्थोदकस्नानम्—

जलधिनदीहृदकुण्डेषु, यानि तीर्थोदकानि शुद्धानि । तैर्मन्त्रसंस्कृतैरिह, विम्बं स्नपयामि सिद्धचर्थम् ॥१६॥

ततः कर्पूरस्नानं—

शशिकरतुपारधवला, उज्ज्वलगन्धा सुतीर्थजलमिश्रा । कर्पूरोदकधारा, सुमन्त्रपूता पततु विम्बे ॥१७॥

ततः कस्तूरिकास्नानम्—

मन्त्रपवित्रितपयसा, प्रकृष्टकस्तूरिकासुगन्धयुजा । विहितप्रणताभ्युदयं, विम्बं स्नपयामि जैनेन्द्रम् ॥

अतिसुरभिवहुलपरिमल—वासितपानेन मृगामदस्नानैः ।

मन्त्रैः कृतैः पयोभिः, स्नपयामि शिवाढ्यजिनविम्बम् ॥१८॥

ततः पुष्पाञ्जलिक्षेपः —

नानासुगन्धपुष्पौघ—रञ्जिता चञ्चरीककृतनादा । धूपामोदविमिश्रा, पततात्पुष्पाञ्जलिर्विम्बे ॥१८॥

ततः शुद्धजलकलशैः अष्टोत्तरशत—१०८ स्नानविधिः—

चक्रे देवेन्द्रराजैः सुरगिरिशिखरे योऽभिपेकः पयोभिः—वृत्त्यन्तीभिः सुरीभिल्लितपदगमं तूर्यनादैः सुदीप्तैः ।

कर्तुं तस्यानुकारं शिवसुखजनकं मन्त्रपूतैः सुकुम्भै—विम्बं जैनं प्रतिष्ठाविधिवचनपरः स्नापयाम्यत्र काले ॥१॥

ततोऽभिमन्त्रितचन्दनेन सूरिर्वाभकरधृतप्रतिमां दक्षिणकरेण सर्वाङ्गमालेपयति, कुसुमारोपणं, धूपोत्पाटनं,

॥ १०२ ॥

प्रतिष्ठादि
विधिर्भा।
॥ १०३ ॥

+ + +
वासनिक्षेपः, गुरभिमुद्रादर्शनं, पद्ममुद्रा ऊर्ध्वा दृश्यते, अञ्जलिमुद्रादर्शनं च ततः प्रियङ्गुकर्पूरगोरोचनाहस्तलेपः
अधिवासनामन्त्रेण करे ऋद्धिवृद्धिसमेतमदनफलाख्यकङ्कणवन्धनं, स चायम्—“ॐ नमो खीरासवलदीणं ॐ नमो
महुयासवलदीणं ॐ नमो संभिन्नसोर्दणं ॐ नमो पयाणुसारीणं ॐ नमो कुट्टबुदीणं जमियं विज्जं पउंजामि सामे
विज्जा पसिञ्जउ ॐ अवतर २ सोमे २ कुरु २ ॐ वग्गु निवग्गु मुमणे सोमणसे महूमहुरए कविले ॐ कः क्षः
स्वाहा” अधिवासनामन्त्रः यद्वा “ॐ नमः शान्तये हुं धुं हुं सः” कङ्कणमन्त्रः ५ । अधिवासनामन्त्रोपैव
+
मृक्ताशुक्त्या विम्बे पञ्चाङ्गस्पर्शः—मस्तक १ खांध २ जानु २ वार ७, चक्रमुद्रया वा। धूपश्च निरन्तरं दातव्यः,
+
परमेष्ठिमुद्रां सूरिः करोति, पुनरपि जिनाह्वानं, ततो निपद्यायामुपविश्य नन्द्यावर्त्तं १ मध्यात्प्रभृति पूजयेत्, सदशा-
व्यङ्गवद्देण तमाच्छादयेत्, तदुपरि नालिकेरप्रदानं कार्यं तदुपरि प्रतिष्ठाप्यविम्बस्थापनं, चलप्रतिष्ठाख्यापनाय
विचित्रयन्त्रिविधानं, यथा—जम्बीर—बीजपूरक—नालिकेर—पनसा—ऽऽम्र—दाडिमादिप्रशस्तफलकन्दमूलद्राकानं, ततश्चतुः-
कोणेषु वेदिकायाः पूर्वान्यस्तायाश्चतुस्तन्तुवेष्टनं चतुर्दिशं श्वेतवारकोपरि गोधूमव्रीहियवानां यववारकाः स्थाप्याः,
यादुखीरिकरम्यककीसरकूरुससिद्धविडिपूयली इति सप्त वलिशरावाणि दीयन्ते, पुनस्तन्तुसहितसद्विरण्यचन्दनचर्चित-

+ मुद्राधो माटे जुओ परिशिष्ट नं. १.

१ श्वद्विम्बस्याधो वलकवियुक्तोऽपि नन्द्यावर्त्तः स्थाप्यते इति कस्यचिदाशयः (ता. टी.)

॥ १०३ ॥

प्रतिष्ठादि
विधिः।

॥ १०४ ॥

कलशाश्वत्वारः प्रतिमानिकटे स्थाप्यन्ते, घृतगुडसमेतमङ्गलप्रदीपाः ४ स्वस्तिकपट्टस्य चतसृष्वपि दिक्षु सकपर्द-
कसहिरण्यसजलसधान्यचतुर्वारकस्थापनं, तेषु च मुकुमालिकाकङ्कणानि करणीयानि यववाराश्च स्थाप्याः, पूर्णचतुः-
सूत्रेण वेष्टनं वारकाणाम्, ततः शक्रस्तवेन चैत्यवन्दनं कृत्वाऽधिवासनालग्नसमये पुष्पसमेतऋद्धिवृद्धियुतमदनफला-
रोपणपूर्वकं चन्दनयुक्तेन पुष्पवासधूपप्रत्यग्राभिवासितेन वस्त्रेण वदनाच्छादनं माइसाडी चारोप्यते, तदुपरि चन्दनच्छटा
सूरिणा सूरिमन्त्रेणाधिवासनं च वारत्रयं कार्यं, ततो गन्धपुष्पयुक्तसप्तधान्यस्नपनमञ्जलिभिः, तच्चेदम्—सालि—यब—
गोधूम—मुद्ग—वल्ल—चनक—चवलका इति, पुष्पारोपणं धूपोत्पाटनं, ततः स्त्रीभिरविधवाभिश्चतसृभिरधिकाभिर्वा
प्रोक्षणकं यथाशक्त्या हिरण्यदानं च, ताभिरेव पुनः प्रचुरलङ्कुकादिवलिकरणं, पुटिकाः ३६० दीयन्ते, ततः श्राद्धा
आरात्रिकाऽवतारणं मङ्गलदीपं च कुर्वन्ति, चैत्यवन्दनं कायोत्सर्गोऽधिवासनादेव्याः चतुर्विंशतिस्तवचिन्तनम्, तस्या
एव स्तुतिः—

विधाशेषसुवस्तुषु मन्त्रै—र्याऽजस्रमधिवसति वसतौ । सेमामवतरतु श्री—जिनतनुमधिवासनादेवी ॥१॥

यद्वा—पातालमन्तरिक्षं, भवनं वा या समाश्रिता भवने । साऽत्रावतरतु जैनीं, प्रतिमामधिवासनादेवी ॥२॥

ततः श्रुतदेवी २ शान्ति ३ अम्बा ४ क्षेत्रदेवी ५ शासनदेवी ६ समस्तवैया० ७ कायोत्सर्गाः ।

या पाति शासनं जैनं, सद्यः प्रत्यूहनाशिनी । साऽभिप्रेतसमृद्धयर्थं, भूयाच्छासनदेवता ॥१॥

पुनरपि धारणोपविश्य कार्या सूरिणा, 'स्वागता जिनाः सिद्धाः' इत्यादिनेति ॥

अधिवासनाविधिरयम्—अधिवासना रात्रौ, दिवा प्रतिष्ठा प्रायसः कार्या, इतरथाऽपि कञ्चित्कालं स्थित्वा

॥ १०४ ॥

प्रतिष्ठादि
विधिभो।
॥ १०५ ॥

विभिन्ने प्रतिष्ठालगने प्रतिष्ठा विधेया, तत्र प्रथमं शान्तिवलिः चैत्यवन्दनं प्रतिष्ठादेवतायाः कायोत्सर्गः चतुर्विंशतिस्तवचिन्तनं, ततः स्तुतिदानम्—

यदधिष्ठिताः प्रतिष्ठाः, सर्वाः सर्वास्पदेषु नन्दन्ति । श्रीजिनविम्बं सा विशतु, देवता सुप्रतिष्ठमिदम् ॥१॥

शासनदेवी १ क्षेत्रदेवी २ समस्तवैया० ३, धूपमुत्क्षिप्याच्छादनमपनयेत् लग्नसमये, ततो घृतभाजनमग्रे कृत्वा सौवीरकघृतमधुशर्कराभृतरूप्यवर्तिकायां सुवर्णशलाकया प्रतिमानेत्रोन्मीलनं वर्णन्यासपूर्वकं, यथा—ह्रीं ललाटे, श्रीं नयनयोः, ह्रीं हृदये, रं सर्वसन्धिषु, श्लीं सिंहासने विलिख्य प्राकारेण वेष्टयेत्त्रिगुणं व्योम्नि अन्ते क्रौं समालिखेत्, प्राकारः कुम्भकेन न्यासः शिरसि अभिमन्त्रितवासदानं दक्षिणकर्णे श्रीखण्डादिचर्चित आचार्यमन्त्रन्यासः, प्रतिष्ठामन्त्रेण त्रिपञ्चसप्तवारान् सर्वाङ्गं प्रतिमां स्पृशेत् +चक्रमुद्रया, सामान्ययतिं प्रति मन्त्रो यथा—“वीरे २ जयावीरे सेणवीरे महावीरे जये विजये जयन्ते अपराजिते स्वाहा” अयं प्रतिष्ठामन्त्रः, ततो दधिभाण्डकादर्शकदर्शनं दृष्टेश्चक्षुरक्षणाय सौभाग्याय स्थैर्याय च समुद्रा मन्त्रा न्यसनीयाः, “ॐ अवतर २ सोमे २ कुरु २ वग्गु २” इत्यादिकं, ततः +सौभाग्यमुद्रादर्शनं १, +सुरभिमुद्रा, २, +प्रवचनमुद्रा ३, +कृताञ्जलिः ४ गरुडा पर्यन्ते पुनरप्यवमननं(प्रोक्षणं)स्त्रीभिः, इह च रिथरप्रतिमाधः घृतवर्तिकाश्रीखण्डतन्दुलयुतपञ्चधातुकं कुम्भकारचक्रमृत्तिकासहितं पूर्वमेव निम्बनिवेशसमये न्यसेत्, ततः “ॐ स्थावरे तिष्ठ २ स्वाहा” इति स्थिरीकरणमन्त्रो न्यसनीयः चलप्रतिष्ठायां तु नैपः, नवरं चलप्रतिमाधः सशिरस्कदर्भो वालुका च प्रथमत एव वामाङ्गे न्यसनीया, तत्र च—“ॐ जये श्रीं ह्रीं सुभद्रे नम” इति मन्त्रश्च न्यस्यः, ततः +पद्ममुद्रया रत्नासनस्थापनं कार्यमिति वदता यथा—“इदं

+ मुद्राभो माटे जुओ परिशिष्ट नं. १

॥ १०५ ॥

प्रतिष्ठादि
विधिओ।

॥ १०६ ॥

‘रत्नमयमासनमलङ्कुर्वन्तु इहोपविष्टा भव्यानवलोकयन्तु हृष्टदृष्ट्या जिनाः स्वाहा,’ ततः ‘ॐ ह्यये गन्धान्
प्रतीच्छन्तु स्वाहा ॐ ह्यये पुष्पाणि गृह्णन्तु स्वाहा ॐ ह्यये धूपं भजन्तु स्वाहा ॐ ह्यये भूतवलिं जुपन्तु स्वाहा’
ॐ ह्यये सकलसत्त्वालोककर! अवलोकय भगवन् ! अवलोकय स्वाहा’ इति पठित्वा पुष्पाञ्जलित्रयं क्षिपेत्,
ततो वस्त्रालङ्कारादिभिः समस्तपूजा माइसाडी कङ्कणिकारोपश्च पुष्पारोपणं बल्यादिश्च मौरिंडासुंहालियप्रभृतिको
दीयते, ततो लवणावतारणं आरात्रिकस्यावतारणं मङ्गलप्रदीपस्य च कारणं, ततः सङ्ख्येन सहितः चैत्यवन्दनं
कायोत्सर्गाः श्रुतदेव्यादीनां ‘सुयसंतिखेत्तपवयणाईण’ तिवचनात् शक्रस्तवपाठः शान्तिस्तवभणनं, ततोऽखण्डाक्षताञ्ज-
लिभृतलोकसमेतेन मङ्गलगाथापाठः कार्यः नमोऽर्हत्सिद्धाचार्येत्यादिपूर्वकं यथा-

जह सिद्धाण पइट्ठा,	तिलोयचूडामणिमि सिद्धिपए ।	आचंदसरियं तह,	होउ इमा सुपइट्ठत्ति	॥१॥
जह सग्गस्स पइट्ठा,	समत्थलोयस्स मज्झयारंमि ।	” ” ” ”	” ” ” ”	॥२॥
जह मेस्स पइट्ठा,	दीवसमुदाण मज्झयारंमि ।	” ” ” ”	” ” ” ”	॥३॥
जह जंबुस्स पइट्ठा,	जंबुद्वीवाण मज्झयारंमि ।	” ” ” ”	” ” ” ”	॥४॥
जह लवणस्स पइट्ठा,	समत्थउदहीण मज्झयारंमि ।	” ” ” ”	” ” ” ”	॥५॥

इति पठित्वाऽक्षतान् त्रिः क्षिपेत्, पुष्पाञ्जलींश्च क्षिपेत्, ततः +प्रवचनमुद्रया स्वरिणा धर्मदेशना कार्या,
ततः सङ्ख्यानं मुखोद्घाटनं दिनत्रयं पूजा अष्टाह्निकापूजा वा, तत्रापि प्रशस्तदिवसे ३।५। स्नात्रं कृत्वा जिनवलिं

+ मुद्राओ माटे जुओ परिशिष्ट नं. १

॥ १०६ ॥

प्रतिष्ठादि
विधिओ।

॥ १०७ ॥

विधाय भूतवलिं प्रक्षिप्य चेत्यवन्दनं विधाय कङ्कणमोचनाद्यर्थं प्रतिष्ठादेवताविसर्जनकायोत्सर्गः चतुर्विंशतिस्तवचिन्तनं तस्यैव पठनं, श्रुतदेवी १, शान्ति०—

उन्मृष्टरिष्टदुष्ट-ग्रहगतिदुःस्वप्नदुर्निमित्तादि । संपादितहितसम्प-न्नामग्रहणं जयतु शान्तेः ॥१॥

क्षेत्र०, वैया० कायोत्सर्गः, ततः सौभाग्यमन्त्रन्यासपूर्वकं मदनफलोत्तारणं, स च-‘ॐ अवतर २’ इत्यादि, ततो नन्द्यावर्त्तपूजनं विसर्जनं च, ‘ॐ विसर २ स्वस्थानं गच्छ २ स्वाहा,’ नन्द्यावर्त्तविसर्जनमन्त्रः । ‘ॐ विसर २ प्रतिष्ठादेवते ! स्वाहा’ इति प्रतिष्ठादेवताविसर्जनमन्त्रः । प्रतिष्ठावृत्तौ द्वादशमासिकरूपनानि कृत्वा पूर्णे वत्सरे अष्टाद्विकाविशेषः, पूजां च विधाय आयुर्ग्रन्थि निबन्धयेत्, उत्तरोत्तरपूजा च यथा स्यात्तथा विवेयम्, एवम्—

लेप्पाङ्गम ए वि विही, विंघे एसेव किंतु सविसेसं । कायव्वं ण्हाणाई, दप्पणसंकंतपडिविम्बे ॥१॥

‘ॐ क्षीं नमः’ अम्बिकादीनामधिवासनामन्त्रः । ‘ॐ ह्रीं क्षूं नमो वीराय स्वाहा,’ तेषामेव प्रतिष्ठामन्त्रः, यद्वा ‘ॐ ह्रीं क्ष्मीं स्वाहेति’ देवीप्रतिष्ठामन्त्रः । *पश्चान्नन्द्यावर्त्तलेखनं पूजनं च कार्यम् ।

॥ समाप्तः संक्षिप्तप्रतिष्ठाविधिः ॥

卐

卐

卐

* पृष्ठ १४ थी जुओ.

॥ १०७ ॥

प्रतिष्ठादि
विधिओ ।
॥ १०८ ॥

— अथ जिनबिम्ब-परिकर-प्रतिष्ठाविधिः —

यदि जिनबिम्बेन सह परिकरो भवति तदा जिनबिम्बप्रतिष्ठायामेव वासक्षेपमात्रेण परिकरप्रतिष्ठा पूर्यते ।
१ प्रथमभूते परिकरे पृथक्प्रतिष्ठा विधीयते ।

परिकराकारो यथा-बिम्बाधो गजसिंहकीचरूपाङ्कितं सिंहासनं पार्श्वयोश्चमरधरौ तयोर्बहिश्चाञ्जलिकरौ मस्तकोपरि क्रमोपरिस्थं छत्रत्रयं तत्पार्श्वयोरुभयोः काञ्चनकलशाङ्कितशुण्डाग्रं श्वेतगजद्वयं गजोपरि झञ्झरवाद्य-
कराः पुरुषाः तदूर्ध्वयोः मालाकारौ शिखरे शाङ्खवीयाः तदुपरि कलशः मतान्तरे-सिंहासनमध्यभागे हरिणद्वय-
तोरणाङ्कितं धर्मचक्रं तत्पार्श्वयोरुभयोः ग्रहमूर्त्तयः एवं निष्पन्ने परिकरे बिम्बप्रतिष्ठोचिते लग्ने-भूमिशुद्धिकरणं,
अमारिघोषणं, सङ्घाह्वानम्, बृहत्स्नात्रविधिना जिनस्नात्रं, लघुपञ्चवलयनन्धावर्त्तस्थापनम्, तत्पूजनम्, कलश-
प्रतिष्ठावत् । ततः परिकरे सप्तधान्यपूर्वकं वर्द्धापनं अङ्गुलीद्वयोर्ध्वीकरणेन रौद्रदृष्ट्या वामहस्तचुलुकेन जला-
च्छोटनम्, अक्षतघृतपात्रदानम्, ततः 'ॐ ह्रीं श्रीं जयन्तु जिनोपासकाः सकला भवन्तु स्वाहा' इति मन्त्रेण

परिकरस्य गंधाक्षतपुष्पधूपदीपनैवेद्यैः पूजनं सदशवस्त्रेणाच्छादनं ततश्च तिसृभिः स्तुतिभिश्चैत्यवन्दनं ततः शान्ति-
श्रुत-क्षेत्र-भवन-शासन-वैयावृत्यकर-प्रतिष्ठादेवताकायोत्सर्गस्तुतयः पूर्ववत् ततः सम्प्राप्तायां लग्नवेलायां द्वादश-
भिर्मुद्राभिः सूरिमन्त्रेण वासमभिमन्त्र्य सर्वजनं दूरतः कृत्वा एभिर्मन्त्रैर्वासक्षेपं विदध्यात् मन्त्रो यथा—

१ पृथग्भूते ।

॥ १०८ ॥

“ॐ ह्रीं श्रीं अग्रतिचक्रे धर्मचक्राय नमः” इति धर्मचक्रे वासक्षेपस्त्रिः ।

“ ॐ षृणि च द्रां ऐं ह्रीं ठः ठः क्षां क्षीं सर्वग्रहेभ्यो नमः” इति ग्रहेषु वासक्षेपस्त्रिः ।

“ॐ ह्रीं श्रीं आधारशक्तिकमन्त्रासनाय नमः” इति सिंहासने वासक्षेपस्त्रिः ।

“ॐ ह्रीं श्रीं अर्हद्भवतेभ्यो नमः” इति चामरकरद्वये वासक्षेपस्त्रिः ।

“ॐ ह्रीं विमलवाहनाय नमः” इति राजद्वये वासक्षेपस्त्रिः ।

“ॐ पुष्करेभ्यो नमः” “इति मालाद्वये वासक्षेपस्त्रिः” “ ॐ श्रीशाङ्गधराय नमः ” इति शाङ्गधरे
वासक्षेपस्त्रिः ।

“ॐ पूर्णकलशाय नमः” इति कलशे वासक्षेपस्त्रिः ।

ततोऽनेकफलनैवेद्यद्वौकनम्, पुनर्जिनस्नात्रं बृहत्स्नात्रविधिना, ततश्चैत्यवन्दनम् । प्रतिष्ठादेवताविसर्जन-
कायोत्सर्गः चतुर्विंशतिस्तवचिन्तनं भजनं च नन्द्यावर्चविसर्जनं पूर्ववत् । अष्टाद्विकामहोत्सवः । सङ्घपूजनं ।
दीनमार्गणपोषणं । जलपट्टप्रतिष्ठायां तु जलपट्टोपरि बृहन्नन्द्यावर्चस्थापनम् । तत्पूर्ववत् जलपट्टे क्षीरस्नात्रं
पठ्चरत्ननिक्षेपः वासमन्त्रेण वासनिक्षेपः । नन्द्यावर्चविसर्जनम् । इति जलप्रतिष्ठा । तोरणप्रतिष्ठायां तु बृहत्स्नात्र-
विधिना जिनस्नात्रं मुकुटमन्त्रेण तोरणे द्वादशमुद्राभिर्मन्त्रितवासक्षेपः । मन्त्रो यथा—“ॐ अ आ इ ई उ ऊ
ऋ ॠ इत्यादि हकारपर्यन्त नमो जिनमुरपतिमुकुटकोटिसंघट्टितपदाय इति तोरणे समालोकय समालोकय स्वाहा ”

। इति तोरणप्रतिष्ठा । इति प्रतिष्ठाधिकारे परिकरप्रतिष्ठाविधिः सम्पूर्णः ॥

॥ अथ कलशारोपणविधिः ॥

प्रतिष्ठादि
विधिः ।

॥ ११० ॥

तत्र भूमिशुद्धिः गन्धोदकपुष्पादिसत्कारः, आदितः एव कलशाधः पञ्चरत्नकं—^१सुवर्णं—^२रूप्यं—^३मुक्ता—^४प्रवाल—^५लोह—
कुम्भकारमृत्तिकासहितं न्यसनीयम् । पवित्रस्थानाज्जलानयनं प्रतिमास्नात्रं नन्धावर्त्तपूजनं शान्तिवलिः सोदक—
सर्वोपधिर्वर्त्तनं स्त्रीभिः (४) स्नात्रकाराभिमन्त्रणं सकलीकरणं शुचिविधारोपणं चैत्यवदनं शान्तिनाथादिकायोत्सर्गः ।
श्रुत १ शान्ति २ शासन ३ क्षेत्र ४ समस्तवैया० ५ नमुत्थुणं स्तवन लघुशान्ति जयवीयरायः कलशे कुसुमाञ्ज-
लिक्षेपः । तदनन्तरमाचार्येण मध्याह्नगुलीद्वयोर्ध्वीकरणेन तर्जनीमुद्रा रौद्रदृष्ट्या देया । तदनु वामकरे जलं गृहीत्वा
कलशः आच्छोद्यनीयः । तिलकं पूजनं च । मुद्गरमुद्रादर्शनम् । “ॐ ह्रीं क्ष्वीं सर्वोपद्रवं रक्ष रक्ष स्वाहा” ।

चक्षुरक्षा कलशस्य सप्तधान्यकप्रक्षेपः ^१द्विरण्यकलशचतुष्टयस्नानं ^२सर्वोपधिस्नानं ^३मूलिकास्नानं ^४गन्धोदक—^५वासोदक—
^६चन्दनोदक—^७कुङ्कुमोदक ^८कपूरकुसुमजलकलशस्नानं पञ्चरत्नसिद्धार्थकसमेतग्रन्थिवन्धः । वामकरधृतकलशस्य दक्षिण-
करेण चन्दनेन सर्वाङ्गमालिष्य पुष्पसमेतमदनफलकृद्धिवृद्धियुतारोपणम् । कलशपञ्चाङ्गस्पर्शः, धूपदानं, कङ्कणवन्धः,

स्त्रीभिः प्रोक्षणं, ^१सुरभी—^२परमेष्ठि—^३गरुड—^४अञ्जलि—^५गणधर—मुद्रादर्शनम्, सूरिमन्त्रेण वारत्रयाधिवासनम् । “ॐ
स्थावरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा” वस्त्रेणाच्छादनं, जम्बीरादिफलोहलिवलेर्निक्षेपः । तदुपरि सप्तधान्यकस्य च आरात्रि-

॥ ११० ॥

प्रतिष्ठादि
विधिभो ।
॥ १११ ॥

कावतारणं चैत्यवन्दनम् । स्तुतित्रिकानन्तरम् सिद्धा० अधिवासनादेव्याः कायोत्सर्गः । चतुर्विंशतिरतवचिन्ता ।
तस्याः स्तुतिः—

पातालमन्तरिक्षं, भुवनं वा या समाश्रिता नित्यम् । साऽत्राऽवतरतु जं,ने, कलशेऽधिवासनादेवी ॥

शां० १ अं० २ समस्तधै० ३ । तदनन्तरं नमु० तः जयवीथरायान्तं तदनु शान्तिवर्लिं क्षिप्त्वा शक्रस्तवेन
चैत्यवन्दनं शान्तिभणनं प्रतिष्ठादेवताकायोत्सर्गः । चतुर्विंश० । यदधिष्ठिता० प्रतिष्ठास्तुतिदानम् । अक्षता-
अलिभृतलोकसमेतेन मङ्गलगाथापाठः कार्यः । नमोऽर्हत् सिद्धा०

जह सिद्धाण पङ्क्ता० ॥ जह सग्गस्स पङ्क्ता० ॥ जह मेरुस्स पङ्क्ता० ॥ जह लवणस्स पङ्क्ता, समत्थ-
उदहीण मङ्गयारंमि० ॥ जह जम्बुस्स पङ्क्ता, जम्बुदीवस्स मङ्गयारंमि ॥ आचंद० ॥ पुष्पाळजलिप्रक्षेपः ।
धर्मदेशना ॥

॥ इति कलशप्रतिष्ठाविधिः ॥

— अथ ध्वजारोपणविधिः —

भूमिभृद्धिः, गन्धोदकपुष्पादिसत्कारः । अमारिघोषणम् । संघाटानम् । दिक्पालस्थापनम् । +वेदिका-
विरचनम् । नन्धावर्त्तलेखनम् । ततः सूरिः कंकणमुद्रिकाहस्तः सदशवस्त्रपरिधानः सकलीकरणं शुचिविधां चारो-
पयति । ऋपनकारानभिमन्त्रयेत् । अभिमन्त्रितदिशात्रलिप्रक्षेपणं धूपसहितं सोदकं क्रियते । “ॐ ह्रीं क्ष्वीं
सर्वोपद्रवं रक्ष रक्ष स्वाहा” इति पल्यभिमन्त्रणम् । दिक्पालाह्वानम्—ॐ इन्द्राय सायुधाय सवाहनाय सपरिजनाय

+ आरतिश्लोकः— दुष्टसुरासुररचितं, नरैःकृतं दृष्टिदोषजं चिन्मम् । तद् गच्छत्वन्निदूरं, भविककृताराधिकविधाने ।

॥ १११ ॥

प्रतिष्ठादि
विधिओ।

॥ ११२ ॥

ध्वजारोपणे आगच्छ आगच्छ स्वाहा । एवं-ॐ^२ अग्नये-ॐ^३ यमाय-ॐ^४ नैऋतये-ॐ^५ वरुणाय-ॐ^६ वायवे-ॐ^७
कुवेराय-ॐ^८ ईशानाय-ॐ^९ ब्रह्मणे-ॐ^{१०} नागाय-आगच्छ आगच्छ स्वाहा । शान्तिवलिपूर्वकं विधिना मूलप्रतिमा-
स्नानम् । तदनु चैत्यवन्दनं संवसहितेन (नंदिना देववन्दन करवा स्तवन लघुशांति) गुरुणा कार्यम् । 'वंशे-अभिनव-
सुगंधि विकसित' कुमुदाञ्जलिक्षेपः, तिलकं पूजनं च । हिरण्यकलशादिस्नानानि पूर्ववत् । कनक-पञ्चरत्न-कपाय
-मृत्तिका-मूलिका-अष्टवर्ग-सर्वोपधि-गन्ध-वास-चन्दन-कुङ्कुम-तीर्थोदक-कपूर (तत इक्षुरस-घृतदधिदुग्ध)-
स्नानम् । वंशस्य चर्चनम् । पुष्पारोपणम् । लग्नसमये सदशवस्त्रेणाच्छादनम् । + मुद्रान्यासः । चतुःस्त्रीप्रोखणकम् ।
ध्वजाधिवासनं कासधूपादिप्रदानतः । '× ॐ श्रीं ठः'-ध्वजावंशस्याभिमन्त्रणम् इत्यधिवासना । जवारक-फलोहलि-
वलिहौकनम् । * आरात्रिकावतारणम् । अधिकृतजिनस्तुत्या चैत्यवन्दनम् । स्तुतित्रिकानन्तरं शान्तिनाथकायोत्सर्गः
पश्चात् श्रुदे० १ शान्तिदे० २ शासनदे० ३ अम्बिकादे० ४ क्षेत्रदे० ५ अधिवासनादे० ६ कायोत्सर्गः । चतु-

+ चार खुणे चार नव नव इंचनी वेदिकाओ वनाववी.

+ चक्रमुद्राथी दंडने सर्व जग्याण स्पर्श करवो. अने सुरभि-परमेष्ठि-गरुड-अंजलि अने गणधरमुद्रा देखाडवी ।

× ७-२१ के १०८ वार मन्त्र भणवो ।

* श्लोक कलशप्रतिष्ठामां जुओ ।

॥ ११२ ॥

प्रतिष्ठादि
विधिः।
॥ ११३ ॥

विंशतिस्तवचिन्तनं तस्या एव स्तुतिः—‘पातालमन्तरिक्षं, भवनं वा० । समस्तवैयावृत्यकरकायोत्सर्गः । स्तुति-
दानम् । उपविश्य शक्रस्तवपाठः । शान्तिस्तवादिभणनम् । बलिसप्तधान्यफलोहलिवासपुष्पधूपादिवासनम् । ध्वजस्य
चैत्यपार्श्वेण प्रदक्षिणाकरणम् । शिखरे पुष्पाञ्जलिः । कलशस्नानम् । ध्वजागृहे मर्कटिकारूपे पञ्चरत्ननिक्षेपः ।
इष्टांशे ध्वजानिक्षेपः । ‘ॐ श्रीं ठः’ अनेन सूरिमन्त्रेण वासक्षेपः । इति * प्रतिष्ठा । फलोहलि—सप्तधान्यबलि-
मोरिंडकमोदकादिवस्तूनां प्रक्षेपणम् । महाध्वजस्य ऋजुगत्या प्रतिमाया दक्षिणकरे बन्धनम् । प्रवचनमुद्रया सूरिणा
धर्मदेशना कार्या । संघदानम् । अष्टाद्विकापूजा विषमदिने ३, ५, ७, जिनवर्लिं प्रक्षिप्य चैत्यवन्दनं विधाय
शान्तिनाथादिकायोत्सर्गान् कृत्वा महाध्वजस्य छोटनम् । संघादिपूजाकरणं यथाशक्यत्वा ॥

॥ इति ध्वजारोपणविधिः समाप्तः ॥

ध्वजादंड शिखर अने ध्वजानो मंत्र ।

• ॐ ह्रीं श्रीं ग्ल्यूं ह्म्ल्यूं ह्म्ल्यूं क्लीं ३ आं क्रौं अरिहंत—शिखर—दंड—ध्वजेषुवासिदेवदेवीनां
संघस्य च शांतिं पुष्टिं तुष्टिं ऋद्धिं वृद्धिं कुरु कुरु स्वाहा ॥

ध्वजा तथा दंडनुं माप विगेरे ।

- (१) रेखाए देरासर जेटलुं लांबुं होय, तेटलो ध्वजादंड लांबो करवो. घुमटना प्रमाणनो दंड लांबो चाली शके.
- (२) गभारा करतां शिखर बे इंच रेखाए मोडुं होय तेथी ध्वजादंड गभाराना पद करतां बे इंच मोटो करवो.
- (३) मंदिरनी उंचाईना त्रीजा भागे ध्वजादंड लांबो करवो.

★ प्रतिष्ठामन्त्रः—‘ॐ वीरे वीरे जयवीरे’ सात घार ।

- (४) ध्वजादण्ड जेटलो लांबो होय तेना पहेला गजे ०॥ अंगुल अने बाकीना गजे ०॥ अंगुल व्यास लेवो.
 (५) ध्वजादंडनी लंबाईना छट्टा भागे पाटलीनी लंबाई करवी.
 (६) लंबाईनी अडधी पहोळाई करवी, अने पहोळाईथी अडधी जाडाई करवी.
 (७) गाळा एकी करवा, अने बंगडी वेकी राखवी. आ सर्व मान मध्यम समजवुं. जो श्रेष्ठ मान करवुं होय तो ते माननो दशमो भाग वधारवाथी थाय, अने दशमो भाग घटाडवाथी कनिष्ठ मान थाय. आ सर्व मानथी साल अलग जाणवुं.
 (८) कपडानी ध्वजा दंड प्रमाणे लांबी करवी, अने पहोळाइ लंबाईना आठमा भागे करवी.
 (९) पताका तथा पताकडी विगेरे देशाचार प्रमाणे करवी. शास्त्रीय रीत नथी.
 (१०) घुमटना आमलशाळानी पहोळाइथी त्रण गणो घुमटनो ध्वजादंड लांबो करवो.
 (११) वरसगांठ वखते नवी ध्वजा उपर अगर शरूआतमां ध्वजा उपर चोत्रीसो यंत्र जमणी वाजु लखवो.

चोत्रीसो यंत्र

५	१६	३	१०
४	९	६	१५
१४	७	१२	१
११	२	१३	८

प्रतिष्ठादि
विधिओ।
॥ ११५ ॥

ध्वजा दंड तथा कलश प्रतिष्ठाना सामाननी यदि ।

औषधिओ, पाषडी, सोनानो कळश, कळश. नं. ४, तीर्थजल, गुलाबीखेस, दश दिक्पालनो पाटलो, पांखणां, कंकु, कपूर, मीढळ, मरडासींग, फुल, पान, सोपारी, चोखा, वासक्षेप, फळ, नैवेद्य, वाकळा शेर १।, जवारा, व.सुंवी वस्त्र, आंसळी रूपानी, रु. ३१), पैसा ५१).

रोगने दूर करनार अप्रसिद्ध पण जे कोइ औषध पृथ्वीतलमां मले तेने करियाणा तरीके गणी शकाय छे.

एटला ज माटे परिशिष्ट नं. २ मां करियाणां अनेक प्रकारनां बताववामां आव्यां छे. छतां तेमांथी लाभालाभनी दृष्टि ए योग्य लागे ते लेवां, बीजां छोडी पण देवां, नवां बीजां पण रोगहर लेवां, एम दरेक जातनी छुट छे.

— अष्टमद्गल श्लोक —

मंगलं श्रीमदर्हन्तो, मंगलं जिनशासनम् । मंगलं सकलः संघो, मंगलं पूजका अमी ॥१॥

स्वस्ति भूगगननागविष्टपे-पूदितं जिनवरोदयेक्षणात् ।

स्वस्तिकं तदनुमानतो जिन-स्याग्रतो बुधजनैर्विलिख्यते ॥१॥

अन्तः परमज्ञानं, यद् भाति जिनाधिनाथहृदयस्य । तच्छ्रीवत्सव्याजात्, प्रकटीभूतं बह्विन्दे ॥२॥

विश्वत्रये च स्वकुले जिनेशो, व्याख्यायते श्रीकलशायमानः ।

अतोऽत्र पूर्णं कळशं लिखित्वा, जिनार्चनाकर्म कृतार्थयामः ॥३॥

॥ ११५ ॥

प्रतिष्ठादि
विधिओ।
॥ ११६ ॥

जिनेन्द्रपादैः परिपूज्यप्रष्टै-रतिप्रभावैरभि[ति]सन्निकृष्टम् ।

भद्रासनं भद्रकरं जिनेन्द्र-पुरो लिखेन्मङ्गलसत्प्रयोगम् ॥४॥

त्वत्सेवकानां जिननाथ ! दिक्षु, सर्वासु सर्वे निधयः स्फुरन्ति ।

अतश्चतुर्था नवकोणनन्द्या-वर्त्तः सतां वर्तयतां सुखानि ॥५॥

पुण्यं यशः समुदयः प्रभुता महत्त्वं, सौभाग्यधीविनयशर्मनोरथाश्च ।

वर्धन्त एव जिननायक ! ते प्रसादा-त्तद्वर्धमानयुगसंपुटमादधामः ॥६॥

आत्मा लोकविधौ जनोऽपि सकलस्तीव्रं तपो दुश्चरं, दानं ब्रह्म परोपकारकरणं कुर्वन् परिस्फूर्जति ।

सोऽयं यत्र सुखेन राजति स वै तीर्थाधिपस्याग्रतो, निर्मेयः परमार्थवृत्तिविदुरैः संज्ञानिभिर्दर्पणः ॥७॥

त्वद्वध्यपंचशरकेतनभावक्लृप्तं, कर्तुं मुधा भुवननाथ ! निजापराधम् ।

सेवां तनोति पुरतस्तव मीनयुग्मं, श्राद्धैः-पुरो विलिखितोरुनिजांगयुक्त्या ॥८॥

नामजिणा जिणनामा, ठवणजिणा पुण जिणंदपडिमाओ ।

दब्बजिणा जिणजीवां, भावजिणा समवसरणत्था ॥९॥

समाप्तः प्रतिष्ठाकल्पादिः ।



॥ ११६ ॥

